भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 301 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज मंगलवार 26 अक्टूबर 2021 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस हजार वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्
क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज
10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

अब गरीब के बच्चे भी बनेंगे डॉक्टर : पीएम मोदी

सिद्धार्थनगर, वाराणसी (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज सिद्धार्थनगर और वाराणसी दौरे पर हैं। वाराणसी में प्रधानमंत्री मोदी ने कई योजनाओं का उद्घाटन किया। इस दौरान पीएम मोदी ने भोजपुरी में अपना भाषण शुरू किया। पीएम मोदी ने कहा कि मेडिकल कॉलेज से गरीबों का फायदा होगा। देश ने कोरोना महामारी से अपनी लड़ाई में 100 करोड़ वैक्सीन डोज के बड़े पड़ाव को पूरा किया है। इससे पहले पीएम मोदी ने सिद्धार्थनगर में माधव प्रसाद त्रिपाठी मेडिकल कॉलेज सहित प्रदेश के नौ मेडिकल कॉलेजों का उद्घाटन किया। इसके बाद उन्होंने आर्ट गैलरी का निरीक्षण किया। पीएम मोदी ने संबोधित करते हुए सीएम योगी की तारीफ की। इसके बाद समाजवादी पार्टी पर हमला बोला।पीएम मोदी ने कहा कि धनतेरस से लेकर दीपावली तक लोकल की जमकर खरीदारी करेंगे तो सभी की दीपावली खुशियों से भर जाएगी। पीएम मोदी ने कहा कि बीते सालों की एक और बड़ी उपलब्धि अगर काशी की रही है, तो वो है बीएचयू का फिर से दुनिया में श्रेष्ठता की तरफ अग्रसर होना। आज टेकनॉलॉजी से लेकर हेल्थ तक, बीएचयू में अभूतपूर्व सुविधाएं तैयार हो रही हैं। नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज काशी का हृदय वही

सबसे बड़ी स्वास्थ्य योजना का उद्घाटन

है, मन वही है, लेकिन काया को सुधारने का ईमानदारी से प्रयास हो रहा है। जितना काम वाराणसी में पिछले 7 साल में हुआ है, उतना पिछले कई दशकों में नहीं हुआ। रिंग रोड के अभाव में काशी में जाम की क्या स्थिति होती थी, इसे आपने वर्षों तक अनुभव किया है। अब रिंग रोड बनने से प्रयागराज, लखनऊ, सुलतानपुर, गोरखपुर, दिल्ली कहीं भी जाना हो तो उसके लिए शहर में नहीं आना पड़ेगा।

पीएम ने कहा कि हमसे पहले जो सरकारे में रहे, उनके लिए स्वास्थ्य सेवा पैसा कमाने, घोटालों का जरिया रही है। गरीब की परेशानी देखकर भी, वो उनसे दूर भागते रहे। आज केंद्र और राज्य में वो सरकार है जो गरीब, दलित, शोषित-वंचित, पिछड़े, मध्यम वर्ग, सभी का दर्द समझती है। देश में स्वास्थ्य सुविधाएं बेहतर करने के लिए हम दिन रात एक कर रहे हैं। देश में 80 वायरल डायगनेस्टिक लैब हैं और इनको और सशक्त बनाया जाएगा। आयुष्मान भारत योजना ने दो करोड़ से अधिक गरीबों का अस्पताल में मुफ्त इलाज भी करवाया है। इलाज से जुड़ी अनेक परेशानियों को आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के जरिए हल किया जा रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि आनेवाले चार-पांच सालों में गांव तक क्रिटिकल केयर यूनिट को सशक्त किया जाए, जिन राज्यों में स्थितियां खराब हैं वहां पर ज्यादा फोकस किया जा रहा है। गांव और शहरों में हेल्थ और वेलनेस सेंटर खोले जा रहे हैं। समय से बीमारियों का पता चलेगा तो इलाज में आसानी होगी। राष्ट्रीय स्तर पर 12 केंद्रीय अस्पतालों में योजना तैयार की जा रही है। 24 घंटे चलने वाले इमरजेंसी ऑपरेशन सेंटर तैयार किए जाएंगे। पीएम मोदी ने कहा कि हमारे हेल्थकेयर सिस्टम में जो बड़ी कमी रही, उसने गरीब और मिडिल क्लास में इलाज को लेकर हमेशा बनी रहने वाली चिंता पैदा कर दी। आयुष्मान भारत, स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन, देश के हेल्थकेयर सिस्टम की इसी कमी को दूर करने का एक समाधान है। पीएम मोदी ने कहा कि गांवों और शहरों में हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर खोले जा रहे हैं, जहां बीमारियों को शुरुआत में ही डिटेक्ट करने की सुविधा होगी। इन सेंटरों में फ्री मेडिकल कंसलटेशन, फ्री टेस्ट, फ्री दवा जैसी सुविधाएं मिलेंगी।

आज पुलवामा के सीआरपीएफ कैंप में रात बिताएंगे शाह, हमले वाली जगह पर भी जाएंगे

श्रीनगर (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह आज जम्मू कश्मीर दौरे के आखिरी दिन पुलवामा पहुंचे। यहां वे सीआरपीएफ कैंप में रात बिताएंगे। हमले वाले जगह पर भी अमित शाह दौरा कर सकते हैं। इससे पहले गृह मंत्री ने श्रीनगर में घाटी के लोगों को संबोधित किया था। अपने संबोधन से पहले शाह ने बुलेट प्रूफ शील्ड ग्लास हटवा दिया था। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का जम्मू कश्मीर दौरा सरकार के मद्देनजर बेहद अहम है, इसलिए भी क्योंकि बीते कुछ दिनों से घाटी में हो रहे आतंकी हमलों से लोगों में डर का माहौल है। जिस पर केंद्रीय गृह मंत्री लगातार ऐसी कोशिश कर रहे हैं कि लोगों के मन से डर निकले। इसी के मद्देनजर अमित शाह आज घाटी दौरे के तीसरे दिन पुलवामा के सीआरपीएफ कैंप में रात बिताएंगे। वे यहां जवानों से मुलाकात करेंगे और उनका मनोबल बढ़ाएंगे। इसके अलावा ये भी जानकारी मिल रही है कि शाह हमले वाले जगह का भी दौरा कर सकते हैं।इससे पहले आज सुबह गृह मंत्री अमित शाह ने श्रीनगर पहुंचकर लोगों को संबोधित किया था। अपने संबोधन के दौरान उन्होंने मंच से बुलेट प्रूफ ग्लास शील्ड हटवाई। इसके बाद संबोधन में लोगों से कहा था कि वे कश्मीर के लोगों से खुलकर बात करना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने बुलेट प्रूफ शील्ड हटवाई। अपने संबोधन में उन्होंने राज्य स्तर पर चल रही राजनीति पर भी निशाना साधा। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री फारूख अब्दुल्ला पर निशाना साधते हुए कहा कि वे पाकिस्तान से नहीं कश्मीर के लोगों से बात करेंगे।

'भकचोन्हर' पर बिहार में सियासी बवाल, जेडीयू और कांग्रेस ने लालू को बताया दलित विरोधी

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के एक बयान पर बिहार में सियासी बवाल मच गया है। दरअसल, दिल्ली से पटना आने के वक्त लालू यादव ने बिहार कांग्रेस प्रभारी भक्त चरण दास को लेकर अजीबोगरीब बयान दिया। लालू यादव ने भक्त चरण दास को 'भकचोन्हर' कहकर संबोधित किया। भोजपुरी में 'भकचोन्हर' का मतलब बेवकूफ होता है। लालू यादव के इस बयान पर सभी सियासी दलों में एक सुर में विरोध जताया है। बिहार कांग्रेस प्रभारी भक्त चरण दास दलित हैं। ऐसे में अब लालू के बयान को दलितों से जोड़ा जा रहा है।

जदयू नेता और बिहार सरकार

में मंत्री अशोक चौधरी ने भी लालू यादव के बयान पर अपनी टिप्पणी की। लालू यादव के बयान को उन्होंने अनुसूचित जाति का अपमान बताया है। इसके साथ ही अशोक चौधरी ने कहा कि राजद के शासन में किस तरह से अनुसूचित जातियों का नरसंहार हुआ, यह सभी जानते हैं। इतना ही नहीं, चौधरी ने तो यह भी कह दिया कि राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद अनुसूचित जाति के है इसलिए राजद ने उनके कार्यक्रम का बहिष्कार किया था। पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने भी लालू यादव से सवाल करते हुए पूछा कि आखिर आप को अनुसूचित जाति से इतनी नफरत क्यों है। उन्होंने कहा कि भक्त चरण दास उस समाज से आते है इसलिए आप उन्हें अपमानित करेंगे। कांग्रेस ने भी लालू यादव के इस बयान पर निशाना साधा है। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता और पूर्व लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार ने कहा कि एक सम्मानित नेता ने बिहार कांग्रेस प्रभारी भक्त चरण दास के खिलाफ आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल किया है। बिहार और देश के दलित समुदाय के स्वाभिमान को इस बयान ने ठेस पहुंचाई है और एससी-एसटी अधिनियम के तहत अपराध के रूप में इसे माना जाना चाहिए।

बंगाल में दुर्गा पूजा के बाद कोरोना ने डराया, फिर बनाए जा रहे कंटेनमेंट जोन

कोलकाता (एजेंसी)। त्योहारी सीजन के बाद पश्चिम बंगाल में एक बार फिर से कोविड-19 के मामलों की संख्या बढ़ने लगी है। राज्य प्रशासन ने कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए कई क्षेत्रों को फिर से कंटेनमेंट जोन बनाना शुरू कर दिया है। कोलकाता, जलपाईगुड़ी और हुगली के बाद हावड़ा, उत्तर 24 परगना में भी कोरोना के दैनिक मामलों में बढ़ोत्तरी हुई है। दुर्गा पूजा के महज दस दिन बाद ही कोरोना के दैनिक आंकड़े डरावने हैं। पश्चिम बंगाल में शनिवार को कोरोना के 974 नए मामले थे, रविवार को ये आंकड़ा बढ़कर 989 हो गया। हालांकि थोड़ा राहत के साथ सोमवार को कोरोना के 805 नए मामले सामने आए।

प्रदेश के स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के मुताबिक, जुलाई माह के बाद प्रदेश में कोरोना के इतने ज्यादा मामले सामने आए हैं। प्रदेश में कोरोना पॉजिटिविटी रेट में भी बढ़ोत्तरी हुई है। जहां 24 सितंबर को पॉजिटिविटी दर 1.7ज्ञ् थी, वहीं 10 अक्टूबर में 2.1ज्ञ् हो गई। रविवार को यह आंकड़ा 2.3ज्ञ् हो गया। कोरोना के बढ़ते मामलों के पीछे प्रदेश में हालिया संपन्न हुई दुर्गा पूजा है। भले ही दुर्गा पूजा 11 अक्टूबर से शुरू हुई लेकिन उत्सव की तैयारी और खरीददारी के लोग पहले से ही बाजार में भीड़ बढ़ाने लगे थे।

मेरा नाम दाऊद नहीं... नवाब मलिक के आरोपों से भड़के वानखेड़े के पिता

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मंत्री नवाब मलिक के दाऊद वाले बयान से मामला गर्मा गया है। पहले समीर वानखेड़े ने कहा कि उनके पिता का नाम दाऊद नहीं ज्ञानदेव है। अब मलिक के आरोपों का जवाब देते हुए समीर वानखेड़े के पिता ज्ञानदेव वानखेड़े ने कहा है कि यह सब झूठ है और उनका नाम दाऊद नहीं है। दरअसल, महाराष्ट्र के मंत्री नवाब मलिक ने समीर वानखेड़े का बर्थ सार्टिफिकेट ट्वीट किया था। इसमें दावा किया गया कि यह बर्थ सर्टिफिकेट समीर वानखेड़े का है। इसमें पिता का नाम दाऊद क. वानखेड़े है और धर्म की जगह पर मुस्लिम लिखा है। इसमें समीर का नाम समीर दाउद वानखेड़े लिखा है। इस पर पहले समीर वानखेड़े और फिर उनके पिता की तरफ से बयान सामने आया है। इंडिया टुडे के मुताबिक, समीर वानखेड़े के पिता ज्ञानदेव वानखेड़े ने कहा है कि यह सब झूठ है और उनका नाम दाऊद नहीं है। इससे पहले समीर वानखेड़े ने नवाब मलिक के सवाल पर पलटवार करते हुए कहा था कि वह एक हिंदू पिता और मुस्लिम मां के बेटे हैं।

पाक की जीत पर कश्मीर में जश्न मनाने वालों के सपोर्ट में आई महबूबा मुफ्ती, कहा- विराट से सीखो

श्रीनगर (एजेंसी)। टी-20 विश्वकप के इतिहास में पहली बार भारत को पाकिस्तान से हार का सामना करना पड़ा। इससे देश में जहां गम का माहौल है तो वहीं जम्मू-कश्मीर के कुछ इलाकों में पाकिस्तान की जीत की खुशी में आतिशाबाजी करते कुछ लोगों को पकड़े जाने की खबर भी मिली है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, पुलिस ने 6 लोगों को हिरासत में लिया है। अब जम्मू-कश्मीर की पूर्व सीएम महबूबा मुफ्ती पाकिस्तान की जीत का जश्न मनाने वालों के समर्थन में उतरीं है और

आक्रोशित लोगों को विराट कोहली से सीख लेने की सलाह दी है। महबूबा मुफ्ती ने ट्वीट किया, 'पाकिस्तान की जीत का जश्न मनाने वाले कश्मीरियों के खिलाफ इतना गुस्सा क्यों कुछ लोग तो ऐसे नारे भी लगा रहे हैं- देश के गद्दारों को, गोली मारो...कोई यह नहीं भूल सकता कि जम्मू-कश्मीर से विशेष राज्य का दर्जा छिनने के बाद मिठाइयां बांटकर कितने लोगों ने जश्न मनाया था। विराट कोहली की तरह इसे सही भावना से लें, जिन्होंने सबसे पहले पाकिस्तानी टीम को बधाई दी।' महबूबा ने ट्वीट के साथ विराट कोहली की वह तस्वीर भी शेयर की, जिसमें वह पाकिस्तानी बल्लेबाज रिज़वान से बात करते दिख रहे है। बता दें कि रविवार को दुबई में भारत-पाकिस्तान के बीच हुए टी-20 विश्वकप मैच में इंडियन क्रिकेट टीम को हार का सामना करना पड़ा था। साल 2007 से लेकर 2016 तक भारत कभी भी पाकिस्तान से वर्ल्ड कप के मुकाबलों में नहीं हारा है। पाकिस्तान वर्ल्ड कप के इतिहास में पहली बार भारत से जीता है। भारत की हार के बाद पाकिस्तान में भी जगह-जगह हवाई फायरिंग की खबरें सामने आई है। अकेले कराची में ही कई जगहों पर फायरिंग से 12 लोगों को गोली लगी, जिनमें से एक सब-इंस्पेक्टर भी है।

भारत में मिला कोरोना का नया वेरिएंट डेल्टा प्लस-एवाई.4.2, ब्रिटेन में मचा चुका है तबाही

नई दिल्ली (एजेंसी)। मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में एसएआरएस कोविड ओरिएंट के सबलाइन के मामलों का पता चलने के बाद भारत की कोरोना जीनोमिक निगरानी परियोजना हाई अलर्ट पर है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, नेशनल सेंटर ऑफ डिजीज कंट्रोल (एनसीडीसी) से जारी जीनोम सीक्वेंसिंग रिपोर्ट में इंदौर में इस नए वेरिएंट के सात मामलों का पता चला था। इंदौर के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ बीएस सैत्य ने कहा कि संक्रमित लोगों में से दो लोग महू छावनी में तैनात सेना अधिकारी हैं। वैज्ञानिकों ने संकेत दिया है कि नया संस्करण डेल्टा स्ट्रेन की तुलना में अधिक संक्रामक और यहां तक कि अधिक घातक हो सकता है। नया संस्करण, जिसे एवाई 4.2 कहा जाता है, को अब यूके में 'जांच के तहत संस्करण' के रूप में घोषित किया गया है। स्वास्थ्य एजेंसी ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि एवाई 4.2 डेल्टा वेरिएंट में सभी अनुक्रमों का लगभग 6 प्रतिशत हिस्सा है। रिपोर्ट में कहा गया है, ठडेल्टा प्रमुख संस्करण बना हुआ है।एवाइ 4.2 के रूप में नव-नामित एक डेल्टा उप वंश इंग्लैंड में विस्तार करने के लिए जाना जाता है।

ममता का मिशन यूपी

पूर्व मुख्यमंत्री कमलापति त्रिपाठी का परिवार टीएमसी में शामिल

सिलीगुड़ी (एजेंसी)।पश्चिम बंगाल में भारी जीत के बाद ममता बनर्जी दूसरे राज्यों में अपनी पार्टी तृणमूल कांग्रेस के विस्तार में जुटी है। उनके निशाने पर फिलहाल यूपी समेत वह राज्य हैं जहां अगले साल विधानसभा के चुनाव होने हैं। टीएमसी को विस्तार देने के लिए कांग्रेस के कई बड़े नेता पिछले कुछ माह में तृणमूल कांग्रेस में शामिल हुए हैं। इसी कड़ी में सोमवार को ममता बनर्जी की उपस्थिति में यूपी के दो कद्दावर कांग्रेसी नेता राजेशपति त्रिपाठी और ललितेशपति त्रिपाठी टीएमसी में शामिल हो गए। राजेशपति त्रिपाठी और ललितेश आपस में पिता-पुत्र हैं।

राजेशपति त्रिपाठी यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री कमलापति त्रिपाठी के पौत्र

हैं। कमलापति त्रिपाठी की पांच पीढ़ियां कांग्रेस का हिस्सा रही हैं। टीएमसी में शामिल होने के बाद राजेशपति और ललितेश ने कहा कि ममला बनर्जी के नेतृत्व में भाजपा को यूपी और केंद्र से बाहर करना ही उनका लक्ष्य है। सिलीगुड़ी में दोनों नेताओं को पार्टी में शामिल कराने के बाद ममता ने कहा कि यूपी के नेताओं का शामिल होना इस बात की गवाही देता है कि हम अब एक अखिल भारतीय पार्टी है जो भाजपा को कड़ी टक्कर दे सकती है। ममता बनर्जी ने आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा तृणमूल कांग्रेस को गोवा में राजनीतिक कार्यक्रम आयोजित करने से रोक रही है।

बनर्जी ने कहा कि वह कुछ दिनों में पश्चिमी राज्य जा रही हैं। ममता ने कहा कि हम यूपी में काम करेंगे तो यूपी के लोगों को लेकर ही करेंगे। हम लोग साथ-साथ रहेंगे। अखिलेश यादव मेरे छोटे भाई की तरह हैं। हम उनके खिलाफ कोई काम नहीं करेंगे।

ममता बनर्जी ने बीएसएफ का अधिकार क्षेत्र बढ़ाने का किया विरोध, बोलीं- कानून व्यवस्था राज्य का विषय है

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सिलीगुड़ी में सोमवार को ऐलान किया कि प्रदेश में कक्षा 9वीं से 12वीं तक के स्कूल 15 नवंबर से फिर से खोले जाएंगे। इसके साथ ही उन्होंने सीमावर्ती क्षेत्रों में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के अधिकार क्षेत्र को बढ़ाने का भी मुद्दा उठाया। आपको बता दें कि पश्चिम बंगाल में 16 नवंबर से फिर से स्कूल खुलेंगे क्योंकि 15 नवंबर को बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर सरकारी अवकाश रहता है। ऐसे में 16 नवंबर को स्कूलों के साथ-साथ कॉलेज भी खोले जाएंगे।

ये लोग नफरती, हम आपके साथ हैं, अब मोहम्मद शमी के सपोर्ट में आए कांग्रेस नेता राहुल गांधी

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी को सोशल मीडिया पर निशाना बनाए जाने के बाद सोमवार को उनका समर्थन किया और शमी पर टिप्पणी करने वालों पर निशाना साधते हुए कहा कि ये लोग नफरत से भरे हैं। राहुल गांधी ने ट्वीट किया, 'मोहम्मद शमी, हम आपके साथ हैं।

ये लोग नफरत भरे से हैं, क्योंकि इन्हें कोई प्यार नहीं देता। इनको माफ करो।' इससे पहले, कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा ने कहा कि खेल को खेल रहने देना चाहिए और इसमें राजनीति नहीं होनी चाहिए। उधर, सचिन तेंदुलकर और वीरेंद्र सहवाग सहित पूर्व और

मौजूदा भारतीय खिलाड़ियों ने भी शमी का समर्थन किया, जिन्हें विश्व कप इतिहास में पाकिस्तान के खिलाफ देश की क्रिकेट टीम की पहली हार के बाद सोशल मीडिया पर निशाना बनाया गया। भारत को रविवार को टी 20 विश्व कप के अपने पहले मुकाबले में 10 विकेट से शिकस्त झेलनी पड़ी। इस दौरान शमी भारत के सबसे महंगे गेंदबाज साबित हुए और उन्होंने 3.5 ओवर में 43 रन लुटाए। इसके बाद शमी को सोशल मीडिया पर ट्रोल किया गया। कुछ यूजर्स ने उन्हें पाकिस्तान जाने तक को कह दिया।

खबर संक्षेप

लपरी नदी में लापता हुए विक्षिप्त व्यक्ति का मिला शव

रत्योरा। कोरांव थाना क्षेत्र के घेघसाही गांव के पास लपरी नदी में मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गयी। जानकारी के मुताबिक बदौवा गांव निवासी बड़कऊ पुत्र चिंता आदिवासी उम्र लगभग 24 विक्षिप्त था जो तीन दिन पूर्व अचानक संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गया था। जिसका शव सोमवार को घेघसाही गांव के लपरी नदी के पास मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार दो घायल

घूरपुर। बाइक से शहर की ओर जा रहे दो युवकों को क्षेत्र के बादलगंज गांव के सामने एक अज्ञात वाहन ने जोरदार टक्कर मार दी जिससे दोनो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए ।दोनो को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है । लालापुर थाना क्षेत्र के अमिलिया तरहार गांव निवासी संजय कुमार 34 पुत्र शिवराम व महेश 28 पुत्र स्व रामचन्द्र किसी काम से बाइक से शहर की ओर सोमवार की दोपहर जा रहे थे। बादलगंज गांव के सामने एक अज्ञात कार टक्कर मारकर भाग गई।

झोलाछाप डाक्टर ने किया आपरेशन हुई महिला की मौत, जमकर हंगामा

शहजादे/मोहम्मद गौस

कोरांव बाजार के पथरताल रोड पर हरिओम मेडिकेयर में हुआ हादसा

घटना के बाद संचालक अस्पताल बंद कर हुआ फरार

रत्योरा। कोरांव बाजार के पथरताल रोड पर बिना रजिस्ट्रेशन के संचालित हरिओम मेडिकेयर में महिला के पेट दर्द होने पर झोलाछाप डॉक्टरों के द्वारा ऑपरेशन के लिए पेट फाड़ दिया गया। जिससे मौके पर ही महिला की दर्दनाक मौत हो गई। उक्त हादसे के बाद परिजनों को गुमराह कर जिला अस्पताल हेतु रेफर कर दिया गया। मृतका के परिजनों के मुताबिक अस्पताल संचालक खुद प्रयागराज गया जहां एक निजी अस्पताल में भर्ती करने लगा तो चिकित्सकों ने देखते ही महिला को मृत घोषित कर दिया। जिसके बाद अस्पताल संचालक के द्वारा मृतक महिला को सीधे निजी वाहन से उसके घर छोड़ दिया। परिजनों को बताया कि सब कुछ ठीक-ठाक है। जब परिजनों ने देखा तो महिला मृत पड़ी मिली। जिसके बाद परिजन सीधे निजी वाहन से ही कोरांव अस्पताल लेकर आ गए। जहां हंगामा खड़ा कर दिया। हंगामे के बाद पुलिस भी पहुंच गयी। जानकारी के अनुसार किरण पत्नी बैजनाथ उम्र लगभग 35 वर्ष निवासिनी ढाबा गौतमान थाना हनुमना जिला रीवा मध्य प्रदेश का गत रविवार सुबह से पेट दर्द करने लगा।

हंगामा करते मृतका के परिजन

जिसके बाद परिजनों ने पास के ही आशीष पटेल नामक झोलाछाप डॉक्टर को दिखाया। झोलाछाप डॉक्टर के द्वारा कुछ उपचार व इंजेक्शन भी लगाए गये। झोलाछाप डॉक्टर कोरांव के तरांव गांव का रहने वाला है। जो हनुमाना में क्लीनिक चलाता है। आराम न मिलने पर आशीष ने मृतका किरण के परिजनों को सलाह दी कि कोरांव के हरिओम मेडिकेयर अस्पताल ले चलो वहीं उपचार होगा। रविवार को ही दोपहर 2 बजे के आसपास परिजन किरण को लेकर कोरांव हरिओम मेडिकेयर अस्पताल आ गए।जांच एवं उपचार हेतु बारह हजार रुपये देने की बात कही। जिस पर छः हजार परिजनों के द्वारा जमा कर दिया गया। रात में ही महिला का ऑपरेशन के नाम पर पेट फाड़ दिया गया। जिससे महिला की मौत हो गई। परिजनों के मुताबिक अस्पताल संचालक अखिलेश पाल जो अपने आपको खुद को पटेल बताता है। बच्चेदानी का ऑपरेशन करने की बात कही।परिजनों ने बताया कि बच्चेदानी के ऑपरेशन तो नाभि से नीचे पेट फाड़ा जाता है, किंतु पेट ऊपर फाड़ दिया। मृतका किरन के पति बैजनाथ के द्वारा कोरांव पुलिस को दी गई तहरीर में किडनी आदि भी निकाल लेने का आरोप लगाया गया है। किरन साकेत तीन बच्चों की मां थी।

आक्रोशित परिजनों ने शव रख कोरांव चौराहे पर किया चक्काजाम

झोलाछाप डॉक्टरों के द्वारा गलत उपचार करने से महिला की मौत के बाद आक्रोशित परिजनों ने सोमवार को सायं 6 बजे के आसपास चक्का जाम कर दिया। परिजनों ने फरार अस्पताल संचालक एवं उसके सहयोगियों की गिरफ्तारी की बात पर अड़ गए। चक्का जाम स्थल पर पुलिस भी तैनात वही चिंटू परिजन आरोपी झोलाछाप डॉक्टरों के गिरफ्तारी तक जाम न खोलने की बात कहते रहे।वहीं अस्पताल के अगल-बगल के लोगों की चचाओं पर गौर करें तो हरिओम मेडिकेयर का संचालक अखिलेश पाल पखवाड़े भर पूर्व उक्त क्लीनिक की सीएचसी अधीक्षक समेत वरिष्ठ अधिकारियों से शिकायत की गई थी। और कुछ दिन के लिए अस्पताल बंद भी कर दी गई थी। पर अस्पताल पुनः संचालित होने लगी। बाकायदा बिना रजिस्ट्रेशन के हरिओम मेडिकेयर का बोर्ड भी लगा दिया गया। जहां इसी अस्पताल में ही पेट दर्द के नाम पर गत रबिवार एक महिला का ऑपरेशन कर दिया गया। जिससे महिला की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई।

न्यूज झरोखा

कोराव तहसील के वकील आर पार की लड़ाई में, अधिवक्ताओं की हड़ताल जारी

कोरांव। कोरांव के वकीलों की हड़ताल निरंतर जारी है। वकील आर आर की लड़ाई में दिखते नजर आ रहे। बता दें कि सोमवार को भी तालाबंदी एसडीएम तहसीलदार के स्थान्तरण की माँग को लेकर चार दिन से जारी है हड़ताल और तालाबंदी का असर सोमवार को भी देखने को मिला। बताते चले कि लगातार अधिवक्ता लामबंद होकर एसडीएम और तहसीलदार के ट्रांसफर को अड़े है शनिवार को अधिवक्ताओ की हुई इमरजेंसी बैठक मे यह निर्णय लिया गया था कि सोमवार से निर्वाचन, रजिस्ट्री ऑफिस और कम्प्यूटर खतौनी यह तीन कार्यालय खुलेगे । परंतु सोमवार दोपहर एक बजे आम सभा मे लिए गए निर्णय पर बार अध्यक्ष राजेंद्र सिंह व मंत्री प्रशांत पाण्डेय ने उक्त तीनों विभाग को खोले जाने का पत्रक जारी करते हुए संबंधित विभाग को प्राप्त कराया । लेकिन उसके बाद भी विभाग के कमर्चारियों ने ताला नही खोला । इन तीनो विभाग के अलावा समस्त दफ्तर मे तालाबंदी व हड़ताल जारी रहने की बात लिखी गयी, फिलहाल अधिवक्ताओ की हड़ताल और ताला बन्दी सोमवार को भी देखने को मिली देखने वाली बात होगी कि उच्चाधिकारी एसडीएम तहसीलदार का तबादला करते है या अधिवक्ताओ की यह कार्यवाही आगे भी चलती है।

भूर्जी समाज का किया गया गठन

जारी। शंकरगढ़ विकाश खण्ड लालपुर में दिन रविवार को कान्यकुब्ज भुर्जी समाज के माननीय रघुनन्दन जी भोजवाल भारतीय मजदूर संघ जिला उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया। जिसमे विकास खण्ड स्तरीय पद निर्वाचित किए गये। अध्यक्ष पद पे शिव लाल गुप्ता भोजवाल व अन्य पद आवंटित किया गया और भुर्जी समाज का उत्थान कैसे हो इस पर गहनता से विचार-विमर्स किया गया तथा सर्वसम्मति से भोजवाल शब्द की संतुति की गई। जिसमें विष्णु गुप्ता भोजवाल (प्रदेश संगठन मंत्री), नंदू गुप्ता भोजवाल (संस्थापक), सुशीलचंद गुप्ता भोजवाल, डा. विमल कुमार भोजवाल, इन्द्रनाथ भोजवाल (प्रधान), राजू गुप्ता भोजवाल, अरविंद गुप्ता भोजवाल, भीम गुप्ता भोजवाल, राजेश गुप्ता भोजवाल, दीपक गुप्ता भोजवाल, शिवजी गुप्ता भोजवाल, अरुण गुप्ता भोजवाल, अजय कुमार गुप्ता भोजवाल , मुन्ना गुप्ता भोजवाल एवं समस्त लालपुर भोजवाल समाज व अन्यपदाधिकारी मौजूद रहे।

एचटी लाइन की चपेट में आने से तीन भैंसों की मौत

शंकरगढ़। एचटी लाइन की चपेट में आने से तीन भैंसों की मौत हो गई। इस दर्दनाक हादसे में मवेशी पालकों को लाखों रुपये की चपत लगी है। बताया जाता है कि यह हादसा 11 हजार वोल्ट का तार गिर जाने की वजह से हुआ। एचटी लाइन का तार टूटने और मवेशियों के काल कवलित होने का यह मामला यमुनापार के शंकरगढ़ का है। यहां के वार्ड संख्या सात, मोदीनगर निवासी बालगोविंद सिंह की भैंस चरने गई थी।सोमवार को शिवमूरज के खेत में 11 हजार वोल्ट का तार गिर पड़ा था। जिसकी चपेट में आने से तीन भैंसों की मौत हो गई। हादसे की जानकारी होने के बाद लोगों ने विद्युत विभाग को सूचना दी। इसके बाद लाइन को काटकर भैंसों को हटाया गया। विद्युत विभाग की लापरवाही पर लोगों ने खासा रोष व्यक्त किया है।

रात में रखा करवा चौथ का व्रत सुबह फांसी पर झूलती मिली विवाहिता

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। घूरपुर के हथिगन गांव में एक विवाहिता रविवार रात को करवा चौथ की व्रत रखी थी और सोमवार की सुबह फांसी पर झूलती मिली। मायके पक्ष ने हत्या का आरोप लगा हंगामा क खिलाफ मे शिकायती पत्र दिया। जिस पर पुलिस ने पति को हिरासत में ले लिया। और शव को पीएम के लिए भेजा। हथिगन गांव के अजीत कुमार कनौजिया पुत्र निर्भय लाल कनौजिया का विवाह 2014 में गंभीरपुर बारा निवासी बुद्धन कनौजिया की पुत्री पूनम के साथ हुआ था। दोनों की जिंदगी खुशहाल चल रही थी। उनके दो बच्चे हैं।रविवार को पूनम ने पति की दीघार्यु के लिए करवा चौथ का व्रत रखी थी। शाम को किसी बात को लेकर पति पत्नी में कहासुनी हो गई। रात में भोजन करके सब लोग रोजाना की तरह सो गए। सुबह लोगों ने पूनम को फंदे से लटकते देखे। आनन फानन में उसे फंदे से उतारा गया। लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। घटना की जानकारी मिलने पर चौकी इंचार्ज अमित कुमार सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और शव को कब्जे में ले लिया। इस बीच सूचना मिलने पर पूनम के मायके के लोग मौके पर पहुंचे और हत्या का आरोप लगा हंगामा करने लगे। उनका आरोप था कि अजीत आये दिन पूनम को मारता पीटता था। रविवार की रात उसने हत्या करके शव को फंदे से लटका दिया है। पुलिस ने पति को हिरासत में लेकर कार्रवाई का आश्वासन देकर लोगों को समझा बुझा शांत किया। पूनम के पिता बुद्धन ने हत्या का आरोप लगाते पति के खिलाफ शिकायती पत्र दिया। पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया।

घूरपुर में रूपए लेते सिपाही का विडियो वायरल पुलिस महकमे में हड़कंप

अखंड भारत संदेश

डीआईजी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी बोले होगी कार्रवाई

घूरपुर। घूरपुर थाने का रूपए लेते सिपाही का विडियो वायरल होने पर पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। मामला डीआईजी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी के पास पहुंचा तो बोले जांच के बाद कार्रवाई अवश्य की जायेगी। घूरपुर थाना के गौहनिया पुलिस चौकी में तैनात सिपाही तुफैल खान द्वारा वाहन पास कराने के लिए बातचीत करते हुए रूपए लेते का रविवार देर शाम सोशल मीडिया पर विडियो वायरल हुआ तो पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। वायरल विडियो में दिखता है कि गौहनिया हाईवे के किसी लिंक मार्ग से सटा किसी चाहरदिवार के अंदर एक छप्पर के नीचे तीन चार व्यक्ति बैठे हैं और उसी समय गौहनिया चौकी में तैनात आरोपित सिपाही पुलिस वर्दी मे छप्पर के पास बाईक पर बैठा दिख रहा हैं। छप्पर के नीचे बैठे लूंगी और शर्ट पहने बुजुर्ग कुछ रूपए देने को करता है तो सिपाही और रूपए मांगता है तो बुजुर्ग के पास मे बैठें एक अन्य व्यक्ति बोलता है कि इस समय डबल चल रहा है दो सौ और दे दो तो आरोपित सिपाही बोलता है तीन सौ रुपए दो दरोगा जी रात में चौराहे पर चेकिंग करते है उन्हें नहीं दूंगा तो चालान कर देगे। इतना मे बुजुर्ग सिपाही के हाथो मे रूपए पकड़ा देता है। विडियो मे जो स्थान दिखता है। उस संबन्ध में स्थानीय लोगों का कहना है कि उसी स्थान से पशु तस्करी की जाती हैं। जिसकी सुविधा शुल्क चौकी से लेकर थाना तक जाती है। यदि पुलिस उच्च अधिकारी गंभीरता से जांच करें तो थाने के कई लोग और फंस सकते है। फिलहाल उक्त मामले में डीआईजी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी ने कहा कि पुलिस की छवि धूमिल करने वाले पुलिस कर्मियों को बक्सा नहीं जायेगा। जांच की जा रही है जांच के बाद निश्चय रुप से कार्रवाई की जायेगी।

वाहन पास कराने के लिए रूपए लेता पुलिस कर्मी।

सामाजिक व धार्मिक कार्यो में दान करना संकल्प : लहरी भइया

आदर्श रामलीला कमेटी सिरखिडी के कलाकारों ने भगवान श्रीराम की लीलाओं का किया शानदार मंचन

समुद्र देव पर क्रोधित होकर बाड़ साधते श्रीराम व लोगों को सम्बोधित करते हुए समाज सेवी लहरी भइया।

अखंड भारत संदेश

मेजा। कोरोना के साथ-साथ सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में दान करना मेरा संकल्प हैं उक्त उद्गार मिजार्पुर जनपद के छबिनाथपुर गॉव के रहने वाले लोकप्रिय सामजसेवी श्यामकानत शुक्ला (लहरी भईया) ने रविवार को सिरखिड़ी गॉव में आदर्श रामलीला कमेटी के मशहूर कलाकारों द्वारा संचालित रामलीला कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। उल्लेखनीय है कि विगत कई वर्षो से समाजसेवा के प्रति संकल्पित लोकप्रिय समाज सेवी श्री लहरी आदर्श रामलीला कमेटी के संरक्षक पूर्व ब्लाक प्रमुख मेजा प्रेमशंकर शुक्ल तथा अध्यक्ष वर्तमान ग्राम प्रधान शिव कुमार शुक्ल की अध्यक्षता में बीते एक सप्ताह से मयार्दा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम की लीलाओं पर आधारित कार्यक्रम में रविवार को होने वाले लक्ष्मण शक्ति के कार्यक्रम में शिरकत किये जहॉ कमेटी के पदाधिकारियों द्वारा उनका जोरदार स्वागत अभिनंदन किया गया। इस मौके पर उन्होनें कहा कि कोरोना के साथ-साथ सामाजिक तथा धार्मिक कार्यक्रमों में दान करना ही मेरा संकल्प है। इसके पूर्व आदर्श रामलीला कमेटी सिरखिड़ी के मशहूर कलाकारों द्वारा लक्ष्मण शक्ति, अंगठ रावण संवाद, विशालकाय समुद्र पर भगवान श्री राम द्वारा बनाये गये पुल तथा समुद्र द्वारा मयार्दा पुरूषोत्तम भगवान श्रीमान राम का की जा रही आरजू का शानदार मंचन किया गया जिसका उपस्थित दर्शको द्वारा भूरि-भूरि प्रशंका की गयी। इस मौके पर कमेटी के डायरेक्टर, श्याम सुन्दर, कृपा शंकर शुक्ल, सुनील शुक्ला, हिमांशु शुक्ला, मनीष शुक्ला, शुभम शुक्लस, नितीश शुक्ला, जय शंकर शुक्ला, विकल शुक्ला, श्याम कृष्ण शुक्ला, दिनेश शुक्ला, अनूप शुक्ला, गौरी शंकर शुक्ला तथा अरूण कुमार शुक्ला के अलावा कई अन्य पदाधिकारियों प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

जय भीम पांच एकड़ से गुंजायमान होगा संविधान बचाओ चेतना रैली

कोरांव। 25 अक्टूबर, जनपद प्रयागराज में आदिवासी समाज की दयनीय स्थिति से सभी राजनैतिक दलों सत्ता और विपक्षी पार्टियों के नेता ही नही जिले और प्रदेश के आला अफसर जानते है। आजादी के सात दशक बीत जाने के बावजूद इनकी समस्याओं के प्रति तनिक भी संवेदनशीलता किसी भी दल व नॉकरशाहो ने नही दिखाई इसी का परिणाम है कि आज भी प्रयागराज के बारा और कोरांव विधानसभा सहित प्रदेश के आदिवासी समाज समग्र विकास की मुख्यधारा में नही आ सका। 26 नवम्बर को विकासखंड शंकरगढ़ में आयोजित संविधान बचाओं चेतना रैली के आयोजक वरिष्ठ समाजसेवी रामबृज गौतम की यह पहल शायद समाज में विकास की मुख्य धारा से वंचित आदिवासी समाज को कोई नई राह मिल सके। सही मायने में सबका साथ सबका विकास यदि प्रदेश की योगी आदित्यनाथ की सरकार चाहती है तो अंतिम पायदान पर खड़े आदिवासियों के लिए कोई ठोस नीति व कार्यक्रम बना कर कार्य करने की जरूरत है। मध्य प्रदेश के समाजसेवी छोटू कोल, वीरेंद्र सिंह और आरती कोल, सते कोल, राजकुमारी, प्यारी बाई आदि रीवा जिले में भी गांव गांव तैयारियां कर रहे है।

श्रीराम कथा पवित्र गंगा के समान जहां गोता लगाने से मनुष्य का होता है कल्याण : रामभद्राचार्य

श्रीरामकथा सुनाते रामभद्राचार्य जी महाराज

अखंड भारत संदेश

धनूपुर। हरीपुर मिश्रपुर मरों गाँव में आयोजित श्रीराम कथा में तुलसी पीठाधीश्वर रामानंदाचार्य रामभद्राचार्य महाराज ने कथा के पांचवे दिन सोमवार को राम कथा का वर्णन कर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने कहा कि राम कथा पवित्र गंगा के समान है जिसमें गोता लगाने से लोगों का कल्याण होता है। इसके श्रवण मात्र से कलियुग में पापों का नाश होता है। यह सभी प्रकार के मनोरथ को पूर्ण करने वाली कामधेनु है। संसार में यही अमृत की नदी है। इसकी रचना कर तुलसीदास व वाल्मीकि धन्य हो गए। श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि संसार में पूजा सदैव त्याग करने वालों की होती है। भगवान श्रीराम ने राज्य का त्याग किया जिस कारण वह आज भी पूज्य हैं। राज सिंहासन को स्वीकार न करने के कारण भरत जी सम्माननीय हो गए। श्रीराम का जीवन त्याग और आदर्शों से भरा हुआ है। उन्होंने कहा कि सच्चा मित्र वही है जो मित्र का दुख देख अपने दुख को भूल जाए।इस अवसर पर मुख्य यजमान तारकेश्वर नाथ तिवारी, हिरावती देवी, आयोजक प्रभात तिवारी पोहिला, अनिल तिवारी, गौतम तिवारी, बंटी तिवारी, सुदर्शन तिवारी एवं उपस्थित लोगों में जिला पंचायत अध्यक्ष वीके सिंह, भाजपा नेता अवधेश तिवारी, बालकृष्ण तिवारी, रमेश पांडेय, बालकृष्ण शुक्ल, शारदा प्रसाद त्रिपाठी, सतीश त्रिपाठी, विनय कविसा, गायक जिला द्विवेदी, सौरभ तिवारी प्रधान हरीपुर, रंगलाल तिवारी, अशोक तिवारी, पवन तिवारी,जवाहरलाल गौड़, सूर्यमोहन तिवारी, धीरज तिवारी, राधे मोहन पांडेय, विकास इलाहाबादी, शिवकुमार तिवारी, ज्ञान प्रकाश तिवारी, रामेश्वर तिवारी, सुमित तिवारी, विवेक मिश्रा, गौरव, हरिश्वर, शिवम, केशव पाठक, रमन गौड़ सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

विश्व कल्याणार्थ हेतु श्री राजराजेश्वरी महाशक्ति पीठ धनूपुर द्वारा निकाली गई भव्य शोभा कलश यात्रा

विश्व कलयाणार्थ निकाली गयी कलश यात्रा

धनूपुर। जगत गुरु श्री रामानुजाचार्य स्वामी हरिप्रपन्नाचार्य जी महाराज के सानिध्य में विश्व कल्याणार्थ हेतु श्री राजराजेश्वरी महाशक्ति पीठ चक्रसुदर्शनपुरी धनूपुर प्रांगण में श्रीमद् सहस्त्र चण्डी महायज्ञ का आयोजन सोमवार से प्रारंभ हुआ।कार्यक्रम में सोमवार को गाजे बाजे के साथ भव्य कलश यात्रा निकली जो कि कुंदौरा धाम होते हुए लाक्षागृह पहुंची वहाँ से गंगाजल लेकर पुनः महायज्ञ स्थल पहुंची।कलश यात्रा एवं पंचाग पूजन के साथ कथा का सुभारम्भ कथावाचक नृसिंह आश्रम दारागंज प्रयागराज के स्वामी सुदर्शनाचार्य महाराज द्वारा उपस्थित लोगों को कथा श्रवण कराया गया।इस अवसर पर आचार्य अशोक कुमार शुक्ल, आचार्य आद्या प्रसाद तिवारी यज्ञाचार्य होगें तथा उपाचार्य मदन गोपाल मिश्रा, आचार्य अंबुज द्विवेदी होगें। प्रमुख सहयोगियों में आशाराम शुक्ल, मानस भास्कर अनुज महाराज, जवाहरलाल गौड़, चंद्रकांत पांडेय, सुनील तिवारी, ईश्वर चंद्र शुक्ल, धर्मेंद्र पांडेय, वेद तिवारी शास्त्री, अवधेश तिवारी, विवेक शुक्ल, अभिषेक शुक्ल, हर्षहर्षवर्धन शुक्ल, उत्कर्ष शुक्ल, लोलारक मिश्रा, दीपक शुक्ल, नीरज शुक्ल आदि लोग कलश यात्रा महायज्ञ एवं कथा में शामिल रहे।

तापस बेष बिसेषि उदासी। चौदह बरिस रामु बनबासी॥सुनि मृदु बचन भूप हियँ सोकू। ससि कर छुअत बिकल जिमि कोकू॥

जंघई। आदर्श नवयुवक रामलीला समिति चनेथू डीह की ऐतिहासिक रामलीला मे रामवनगमन का मंचन हुआ इसके पूर्व जहाँ एक तरफ पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी चल रही थी तो दूसरी तरफ मंथरा ने माता कैकेयी के पास जाकर राजा दशरथ द्वारा दिये गये दोनो वचनों को याद कराते हुए राम को चौदह वर्ष के बनवास एवं भरत को राजगद्दी मांग देने के लिए प्रेरित करती है।जिसके बाद कैकेयी राजा दशरथ से संवाद करते हुए दोनों वर माँगती है दशरथ कहते है हे कैकेयी तुमने तो हमारे शरीर के प्राण माँग कर हमे निर्जीव कर दिया राजा दशरथ अपने दोनों वचनों को पूरा करते है राम पिता के वचनों को सहर्ष स्वीकार करते हुए वन को चल देते है।राम सीता लक्ष्मण के वन जाते ही महाराज दशरथ पुत्र वियोग मे प्राण त्याग देते है रामलीला वनगमन, केवट संवाद, सीता हरण बालि बध पर समाप्त हुई।इस अवसर पर पात्रों में निखिल पांडेय, जितेंद्र उपाध्याय, शिवम मिश्रा, राजा तिवारी, विपिन मिश्रा, नागेश्वर मिश्रा, अनिल पांडेय, रवि उपाध्याय, पप्पू उपाध्याय, राकी पांडेय, मनीष तिवारी, मनीष तिवारी, सुनील उपाध्याय, अमित मिश्रा, अंकुश मिश्रा, छोटू उपाध्याय, कपिल उपाध्याय, आनंद उपाध्याय, दीपक उपाध्याय, उदयराज उपाध्याय, लवकुश उपाध्याय सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

51 वर्ष पूर्ण होने पर रामलीला समिति चकिया नेदुला में निकली भव्य शोभा यात्रा

51 वर्ष रामलीला पूर्ण होने के उपलक्ष्य में नेदुला में निकाली गई शोभा यात्रा

जंघई। सनातन रामलीला समिति चकिया नेदुला में रामलीला के 51 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भव्य शोभायात्रा निकाली गई।जो चकिया से प्रारंभ होकर पतैया रामलीला मंच, जलालपुर रामलीला मंच, नेदुला तथा केवलापुर रामलीला मंच पर प्रभु राम लक्ष्मण सीता हनुमान की आराधना की गई। समिति द्वारा नौजवानों को रामलीला के प्रति प्रेरित कर उन्हें उत्साहित किया गया कि आगे वह समिति का बागडोर संभालें।कार्यक्रम में अध्यक्ष घनश्याम पाठक, उपाध्यक्ष लालजी पाठक, डायरेक्टर विजय शंकर पाठक तथा रामलीला के अन्य पदाधिकारी व कलाकार मनोज पाठक, कप्तान पाठक, डिप्टी पाठक, शुभम पाठक, राहुल पाठक, दुर्गेश कुमार पांडेय, आदर्श पाठक आदि ने शोभायात्रा कार्यक्रम को सफल बनाया।

खबर संक्षेप

मस्जिद में घुसकर इमाम पर तानी पिस्टल, घटना सीसीटीवी मे कैद

प्रयागराज। करेली थाना क्षेत्र के अबू बकर मस्जिद के इमाम के ऊपर सोमवार को दोपहर में कार से आए एक व्यक्ति ने पिस्टल तान दी। इससे हड़कंप मच गया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने मामले की छानबीन की। पूरा वाकया सीसीटीवी फुटेज में कैद हो गया है। पुलिस आरोपी की धरपकड़ में जुटी है। सोमवार को दोपहर दो बजे जोहर की नमाज पढ़ाकर इमाम अपने कमरे में थे, तभी कार सवार एक व्यक्ति आता हैं और इमाम को गालियां देते हुए उनके ऊपर पिस्टल तान देता है। जिस पर मस्जिद में मौजूद कुछ लोगों से उसकी हाथापाई भी होती है। इसके बाद वह अपनी पिस्टल कमर में छुपाकर भाग जाता है। मामला सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गया है। इस बाबत क्षेत्रीय लोगों ने इमाम के साथ थाना करेली में सूचना दी, जिस पर थाने की पुलिस ने आकर मौका मुआयना किया और सीसीटीवी फुटेज को खंगाला, जिसमें एक व्यक्ति मस्जिद में प्रवेश करते दिखाई देता है और वापस भागता हुआ दिख रहा है मामला मस्जिद का होने की वजह से पुलिस हरकत में आ गई है। बताया जाता है क पूरा मामला मस्जिद से जुड़े एक भूमि के हिस्से का है। जिसको बेचने और खरीदने के लिए विवाद चल रहा है।

एसआईटी को हाईकोर्ट ने दी 11 नवंबर तक मोहलत

अखंड भारत संदेश

मैनपुरी में छात्रा की स्कूल में मौत का मामला

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मैनपुरी की 16 वर्षीय छात्रा की जवाहर नवोदय स्कूल परिसर में हुई मौत के मामले में एसआईटी को जांच पूरी करने के लिए 11 नवंबर तक की मोहलत दी है। सोमवार को प्रदेश सरकार की तरफ से इस मामले में बहस के लिए नियुक्त वरिष्ठ अधिवक्ता जीएस चतुर्वेदी ने कोर्ट को बताया कि 228 लोगों का सैंपल एकत्रित कर डीएनए टेस्ट की रिपोर्ट के लिए हैदराबाद भेजे गए हैं। इसमें से 76 लोगों की डीएनए रिपोर्ट मिल चुकी है।

शेष लोगों की डीएनए रिपोर्ट शीघ्र ही मिल जाएगी। बताया गया कि एसआईटी इस मामले की हर पहलू से जांच कर रही है। सीसीटीवी फुटेज आदि की जांच की जा रही है। कोर्ट से इस मामले की तह तक पहुंचने के लिए और समय की मांग की गई। मामले की सुनवाई कर रहे चीफ जस्टिस राजेश बिन्दल व न्यायमूर्ति दिनेश पाठक की बेंच ने महेंद्र प्रताप सिंह की याचिका पर सुनवाई करते हुए सरकार को उसकी मांग पर 11 नवंबर 2021 तक का समय दिया है। याची महेंद्र प्रताप सिंह ने खुद कोर्ट के सामने हाजिर होकर अपना पक्ष रखा और कहा कि पुलिस इस मामले को जानबूझकर टाल रही है और जांच में देरी कर रही है ताकि साक्ष्य मिट जाए।

याची का कहना था कि यह मामला वैसे भी पुराना हो गया है और इसमें और देरी होने से साक्ष्य नहीं मिलेगा। याची का कहना था कि पुलिस इस मामले में लीपापोती कर रही है और वास्तविक मुल्जिम को सामने नहीं लाया जा रहा है। हाईकोर्ट के कहने पर एसआईटी की नई जांच टीम गठित की गई है और इसमें अनुभवी अधिकारियों को शामिल किया गया है। हाईकोर्ट ने एसआईटी को 6 सप्ताह में जांच पूरी करने का निर्देश दिया है। इस मामले में जांच में लापरवाही पर एएसपी, डिप्टी एसपी, व आईओ को सस्पेंड किया जा चुका है। हाईकोर्ट ने निर्देश दिया था कि इस मामले में जांच से हाईकोर्ट बार एसोसिएशन व कोर्ट को भी अवगत कराया जाए। कोर्ट ने कहा था कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में नाबालिग के कपड़ों पर सीमेन पाया गया है। उसके सिर पर चोट के निशान थे। इसके बाद भी अभियुक्तों का अब तक केवल बयान ही लिया गया, ऐसा क्यों? 16 सितंबर 2019 को 16 वर्षीय एक छात्रा जवाहर नवोदय स्कूल परिसर में फंदे पर लटकती मिली थी।पुलिस ने शुरू में दावा किया था कि आत्महत्या का मामला है। दूसरी ओर उसकी मां ने आरोप लगाया था कि उसे परेशान किया गया, पीटा गया और जब वह मर गई तो उसे फांसी के फंदे पर लटका दिया गया। घटना को लेकर छात्रों ने विरोध जताया था। परिवार ने भी कई दिनों तक धरना दिया था।

मृतका के पिता ने मुख्यमंत्री से जांच की गुहार लगाई तो एसआईटी से जांच कराई गई। 24 अगस्त 2021 को एसआईटी ने केस डायरी हाईकोर्ट में पेश की थी। कोर्ट ने कहा था कि छात्रा के पिता का बयान दर्ज नहीं किया गया और 5.30 से 6 बजे सुबह हुई घटना की सूचना परिजनों को न देने से संदेह पैदा होता है।

न्यूज झरोखा

सट्टेबाजी में दो गिरफ्तार, चार फरार, हजारों रुपए बरामद

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के दूरवाणी नगर मोहल्ले में बीती रात एसओजी व नैनी पुलिस की गठित टीम ने मुखबिर की सूचना पर दो सट्टेबाजों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से हजारों रुपए और उपकरण बरामद करने में सफलता प्राप्त की है। वहीं पुलिस की पकड़ से चार आरोपी दूर हैं। जिनकी तलाश में पुलिस ताबड़तोड़ दबिश देने में जुटी हुई है। इन दिनों वर्ल्ड कप टी 20-20 का मैच जारी है। इसी मैच में कौन हारेगा, कौन जीतेगा, कौन खिलाड़ी कितना रन बनाएगा और कौन खिलाड़ी कितने विकेट लेंगे आदि आदि पर सट्टेबाजों ने कमर कसते हुए गोरखधंधे को अंजाम देने में जुटे हुए हैं। नैनी कोतवाली क्षेत्र के अलावा यह खेल औद्योगिक क्षेत्र करछना, घूरपुर समेत प्रयागराज जिले के नगर सहित कई क्षेत्रों में बड़े जोरों शोरों से संचालित है। रविवार रात को आला अफसरों को जरिए मुखबिर से सूचना मिली कि नैनी कोतवाली क्षेत्र के दूरवाणी नगर स्थित एक मकान में बड़े पैमाने पर मोबाइल के जरिए सट्टेबाजी का खेल संचालित है। सटीक सूचना मिलते ही एसपी यमुनापार सौरभ दीक्षित के निर्देश व सीओ करछना राजेश कुमार यादव के पर्वेक्षण और नैनी इंस्पेक्टर कुशल पाल सिंह के नेतृत्व में एसआई सुशील कुमार दुबे, अमित कुमार सिंह, एसओजी के उप निरीक्षक दिवाकर सिंह सहित दलबल के साथ उक्त स्थान पर पहुंचे और घेराबंदी करते हुए उक्त मकान में छापेमारी की कार्रवाई कर दो सट्टेबाजों को रंगे हाथ गिरफ्तार कर नैनी कोतवाली उठा लाए। पुलिस के मुताबिक पकड़े गए दूरवणी नगर निवासी सतीश सिंह पुत्र हरिमोहन सिंह, मालवीय नगर निवासी रवि यादव पुत्र छेदी लाल यादव शामिल हैं। जबकि मौके से ही चार मोबाइल, दो कैलकुलेटर व ६७,५०० रूपए नकदी बरामद किया गया। वहीं पुलिस के मुताबिक चार फरार आरोपियों में टिंकू पंडा निवासी मालवीय नगर, रतन अग्रवाल उर्फ लाला कफन निवासी जीरोरोड, बब्लू खुर्री निवासी अल्लापुर और दिलीप जायसवाल निवासी कोतवाली शामिल हैं। फरार आरोपियों की तलाश में गठित टीम ताबड़तोड़ दबिश देने में जुटी हुई है।

विश्व हिन्दू परिषद व बजरंग दल का शक्ति केन्द्र का उदघाटन कार्यक्रम संपन्न

करछना। विकास खंड कौधियारा में सोमवार को ग्राम सभा पडोखरा मे विश्व हिंदू परिषद(बजरंग दल) के शक्ति केंद्र का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ जिस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री मुकेश द्विवेदी (प्रांत संगठन मंत्री काशी प्रांत) अति विशिष्ट अतिथि श्री विपिन गुप्ता (जिला सयोजक बजरंग दल) विशिष्ट अतिथि श्री रवि तिवारी (जिला सह मंत्री(बजरंग दल) कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री समर बहादुर सिंह ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन श्री त्रिवेणी प्रसाद मिश्रा एवम ब्रजेश त्रिपाठी ने किया तथा कार्यक्रम के सयोजक श्री विक्रमादित्य तिवारी एवम श्री रोहित कुमार शुक्ला (प्रखण्ड सयोजक कौधियारा) के मार्ग दर्शन मे बजरंग दल के अन्य कार्य कर्ता श्री सुनील साहू. मस्त राम जी. महेश कुमार पटेल. शालिक राम. बालकृष्ण. विजय शुक्ला. प्रशांत त्रिपाठी. बृजेन्द्र तिवारी. धर्मेन्द्र. दिनेश केशरवानी. कृष्णा प्रजापति अनिल. मृतुन्जय पटेल आदि मौजूद रहे।

धूमधाम से मनाया व्यापार मण्डल का दुसरा स्थापना दिवस

मेजा रोड। मेजारोड मे व्यापार मण्डल का दुसरा स्थापना दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। 25 अक्टूबर को व्यापार मंडल का स्थापना दिवस मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता व्यापार मण्डल के संरक्षक वरिष्ठ समाजसेवी इंजीनियर नित्यानंद उपाध्याय व व्यापार मण्डल के अध्यक्ष विष्णुप्रकाश उर्फ पप्पू उपाध्याय ने किया। संचालन शिक्षक मनीष तिवारी ने किया। कार्यक्रम में तिवारी बंधु सुजीत तिवारी व मंजीत तिवारी ने अपने सुंदर गीतों से सबका मन मोह लिया और स्वागत गीत गाकर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रयागराज के पुलिस कप्तान सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि व्यापार मण्डल जिला के अध्यक्ष कादिर भाई रहे। मुख्य अतिथि एसएसपी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी ने कहा कि मेजा से जो लगाव है वह घर जैसा है। यहां के लोगों से मिलकर ऐसा लगता है जैसे परिवार के लोगों से मिला हूं। वहीं पुलिस कप्तान ने कार्यक्रम में गुटखा पान खा रहे लोगों से गुटखा छोड़ने की अपील की। मेजा के लोगों से कहा कि दिवाली पर सभी लोग संकल्प लें और नशा मुक्ति अभियान चलाएं। यह नशा मुक्ति अभियान मेजा से शुरू होना चाहिए। तिवारी बंधुओं की सुंदर प्रस्तुति को लेकर पुलिस कप्तान ने उनकी सराहना की। वहीं पुलिस कप्तान सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी ने श्री सिद्ध हनुमान मानस मंदिर जाकर दर्शन किया। व्यापार मण्डल के संरक्षक ई नित्यानंद उपाध्याय ने कहा कि 25 अक्टूबर के दिन हम व्यापार मंडल के स्थापना दिवस के रूप में मना रहे हैं। आज ही के दिन दो वर्ष पूर्व व्यापार मंडल की नींव 25 अक्टूबर 2019 मे रखी गयी। पप्पू उपाध्याय ने कहा कि सभी व्यापारी कोरोनाकाल में अपनी अहम भूमिका निभाई है। प्रशासन ने भी व्यापारियों की मदद की है। व्यापार मंडल के महामंत्री ओपी पांडेय ने कार्यक्रम में उपस्थित हुए गणमान्य लोगों व व्यापारियों का आभार प्रकट किया। इस मौके पर सिद्धांत तिवारी, विजयकांत मिश्रा, मुन्नन शुक्ला, तुलसीदास तिवारी, बाबा तिवारी, अमरेश तिवारी, अभिषेक तिवारी टिंकू, नाथू गुप्ता, राजू शुक्ला, अभिषेक शर्मा माला, नितेश तिवारी, उमाकांत उर्फ सिंटू सेठ, कल्लू केशरी,लखन केसरी, विटानु शुक्ला सहित मेजारोड के व्यापारी आकाश पांडे, नईम अहमद, मौलाना अब्दुल कलाम, नागर गुप्ता, टीपू गौड़, दिनेश गुप्ता, लल्लूराम केसरवानी, विनोद कुशवाहा सहित सैकड़ों व्यापारी उपस्थित रहे।

बलवीर गिरी नें मंदिर में किया रुद्राभिषेक

करछना। सोमवार को निरिया गांव पहुंचे बाबा बाघम्बरी मठ प्रयागराज के नये मंहत बलबीर गिरी ने मठ की जमीन का निरीक्षण किया। उन्होने जमीन में स्थापित फुलवरिया महादेव मंदिर में स्थापित शिवलिंग का जलाभिषेक और रूद्राभिषेक करते हुए वृहद प्रसाद वितरण भी करवाया।ग्रामीणों से जमीन की निगरानी और मंदिर की सुरक्षा को लेकर विचार विमर्श भी किया। उन्होंने कहा कि मठ की यह जमीन मठ और समाज के सेवार्थ है।जिसके प्रति आपसब भी इसकी सुरक्षा निगरानी और देखरेख करते रहें।उन्होने सभी ग्रामीणों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

बेली अस्पताल में सफाईकर्मी को मारी चाकू, गंभीर

ओपीडी का समय खत्म होने के बावजूद पर्चा बनाने की कर रहा था जिद

सफाई कर्मी से बात करते सीएमएस किरन मालिक

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। तेज बहादुर सप्रू अस्पताल (बेली) में सोमवार को एक युवक ने सफाईकर्मी के उपर चाकू से हमला कर दिया। हमला कर रहे मनबढ़ युवक को अस्पताल कर्मियों ने दौड़ा पकड़ लिया। सफाई कर्मी दीपेंद्र कुमार उर्फ दीपू को अस्पताल के ही यमुना ब्लाक में भर्ती कराया गया है। मौके पर पहुंची पुलिस सीसीटीवी फुटेज के माध्यम से जानकारी जुटाने में लगी है। अस्पताल की मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डा. किरन मलिक ने वार्ड में जाकर सफाईकर्मी का हाल जाना। उन्होंने कहा कि जब अस्पताल में हमारे स्टाफ सुरक्षित नहीं हैं तो वह मरीजों का इलाज कैसे करेंगे। उन्होंने सख्त कार्रवाई की मांग की है।

पर्चा बनवाने की जिद पर अड़ा था मनबढ़

थरवई थाना क्षेत्र के फाफामऊ चकिया निवासी 25 वर्षीय दीपेंद्र कुमार उर्फ दीपू बेली अस्पताल में बतौर सफाईकर्मी तैनात है। वह प्रतिदिन की तरह सोमवार को भी अस्पताल की ओपीडी खत्म होने के बाद सफाई कर रहा था। इसी बीच करीब दो बजे एक युवक पंजीकरण काउंटर पर पहुंचा और पर्चा बनवाने की जिद पर अड़ गया। दीपू ने बताया कि अब कल ओपीडी खुलने पर ही पर्चा बनेगा। इसी बात को लेकर दोनों में कहासुनी हो गई। युवक ने चाकू निकाला और दीपू के ऊपर हमला कर दिया। पैर व पेट में तीन जगह चाकू मारकर वह भागना चाहा लेकिन दर्द से तड़प रहे दीपू की चीख सुनकर अन्य स्टाफ दौड़ पड़े और हमलावर युवक को पकड़ लिए। मौके पर पहुंची पुलिस उससे पूछताछ करती रही।

मोदी का भाषण सुन रहे थे डाक्टर

जिस समय अस्पताल परिसर में यह घटना हुई उस समय अपर निदेशक स्वास्थ्य डा. प्रभाकर राय, अस्पताल की अधीक्षक डा. किरन मलिक समेत पूरा स्टाफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वाराणसी में चल रहे आयोजन का लाइव प्रसारण देख रहा था। भाषण खत्म होने के बाद सभी वार्ड में पहुंचे और फिर जख्मी सफाईकर्मी का हाल जाना।

रामलीला में कुशल मंचन के लिए पुरस्कृत हुए पात्र व पदाधिकारी

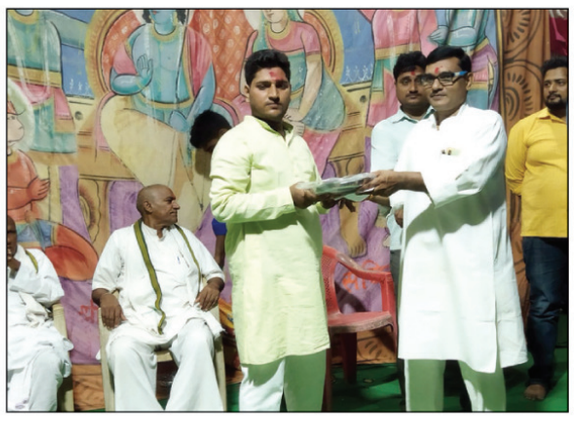

फूलपुर। गांव में रामलीला के साथ ही अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन में पात्रों द्वारा किया गया अभिनय उनकी कार्य कुशलता एवं उनके गुणों को प्रदर्शित करता है। ऐसे अभिनेताओं को सम्मानित करने से उनका मनोबल बढ़ता है। उक्त बातें आदर्श रामलीला कमेटी खोजापुर में रामलीला का कुशल मंचन करने वाले कलाकारों को सम्मानित करते हुए कमेटी के उपाध्यक्ष एडवोकेट सचिन तिवारी ने कही। इस दौरान सभी पात्र एवं पदाधिकारियों को कमेटी द्वारा पुरस्कृत कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई। मौके पर ग्राम प्रधान भुलेश्वर नाथ तिवारी, रमेश चंद तिवारी, वासुचंद्र तिवारी, मनोज तिवारी,अवधेश तिवारी, संदीप तिवारी, अरविंद तिवारी, जितेंद्र यादव, राजित राम यादव, निहाल तिवारी, मानिक चंद तिवारी, विशाल तिवारी, अनुराग तिवारी, दुष्यंत विश्वकर्मा, राजित राम पांडेय, बाल कृष्ण, राजू तिवारी ,विवेक तिवारी ,बुदुल तिवारी, सहित कमेटी के दर्जनों पात्र व पदाधिकारी मौजूद रहे।

भाजपा सरकार अपने हर मुद्दे पर फेल : महेश चंद्रा

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव महेश चन्द्रा

फूलपुर। सबका साथ सबका विकास की बात करने वाली भाजपा सरकार अपने हर मुद्दे पर फेल है। बात बेरोजगारों को रोजगार देने की हो या फिर महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने की बात हो सरकार हमेशा विफल ही रही है।देश में बढ़ती महंगाई, भ्रष्टाचार बेरोजगारी भारतीय जनता पार्टी सरकार की देन है। अब सत्ता परिवर्तन के लिए कमर कसने का समय आ गया है। उक्त बातें सोमवार को फूलपुर के भुलई का पूरा गांव में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए भागीदारी पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव पूर्व सदस्य पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम उत्तर प्रदेश सरकार डॉक्टर महेश चंद्रा प्रजापति ने उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कही। राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रेमचंद प्रजापति ने कहा कि 2022 में सपा के साथ सरकार बनाकर जातिगत जनगणना कराई जाएगी। जिसकी जितनी संख्या ,उसकी उतनी हिस्सेदारी के तर्ज पर समुचित उपेक्षित जातियों को हिस्सेदारी देने का कार्य किया जाएगा। भागीदारी पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ज्ञानचद प्रजापति ने कहा कि भागीदारी पार्टी पिछडको, दलित,अल्पसंख्यक एवं शोषित समाज के लोगों को साथ जोड़कर चलने वाली पार्टी है। उनके अधिकारों के लिए हमारी लड़ाई निरंतर जारी है। भ्उन्होंने कहा कि 2022 में भागीदारी पार्टी पूर्व कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर के साथ चलाए गए भागीदारी संपूर्ण मोर्चा में शामिल है। इस अवसर पर मोनू, सत्येंद्र प्रजापति, मान सिंह पटेल ,सौरभ पटेल, महेंद्र प्रजापति, मोहम्मद इस्लाम, जगदीश प्रजापति, हंसराज प्रजापति व पार्टी के अन्य कार्यकर्ता व समर्थक मौजूद रहे।

निरंजनी अखाड़े के महंत रवींद्र पुरी बने अखाड़ा परिषद के नए अध्यक्ष, निर्मल अखाड़ा टूटा

अखंड भारत संदेश

अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष के साथ मौजूद साधु संत

प्रयागराज। तेरह में से आठ अखाड़ों ने मिलकर सोमवार को प्रयागराज में सर्वसम्मति से मनसा देवी ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत रवींद्र पुरी को अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद का अध्यक्ष चुन लिया। निरंजनी अखाड़े के सचिव रहे महंत नरेंद्र गिरि की संदिग्ध हालत में मौत के बाद रिक्त हुए अध्यक्ष पद पर लंबी जद्दोजहद और जोड़तोड़ के बाद चुनाव कराया गया। इसी के साथ अखाड़ा परिषद भी अब दो धड़ों में बंट गई है। इससे पहले हरिद्वार में भी सात अखाड़ों ने मिलकर अलग परिषद बनाने हुए नए अध्यक्ष और महामंत्री का एलान किया था। वह कमेटी भी अपनी वैधानिकता का दावा कर रही है। दारागंज स्थित निरंजनी अखाड़े के आश्रम में सोमवार को अखाड़ा परिषद की बैठक पूर्वान्ह 11 बजे आरंभ हुई। इसमें सात अखाड़े शामिल हुए। निर्मल अखाड़े से अलग हुए धड़े के महंत रेशम सिंह को मिलाकर सात की संख्या पूरी की गई। जबकि, वैरागी परंपरा के निमोही अनी अखाड़े के मदनमोहन दास का समर्थन पत्र पढ़ा गया। निमोही अनी के मदन मोहन दास ने खुद को अध्यक्ष के तौर पर अपना समर्थन पत्र दिया। सबसे पहले दिवंगत अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि के चित्र पर माल्यार्पण कर अखाड़ों के प्रतिनिधियों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इसके बाद रिक्त हुए अध्यक्ष पद पर चयन के लिए एजेंडा पढ़कर सुनाया गया। अध्यक्ष पद पर मनसा देवी ट्रस्ट के अध्यक्ष और निरंजनी अखाड़े के सचिव महंत रवींद्र पुरी के नाम का प्रस्ताव रखा गया, जिस पर सभी अखाड़ों के प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से अपनी सहमति प्रदान करते हुए उन्हें परिषद का नया अध्यक्ष चुनने का एलान किया। आठ अखाड़ों की सहमति से रवींद्र पुरी को अखाड़ा परिषद का नया अध्यक्ष चुना गया। नए अध्यक्ष के तौर पर रवींद्र पुरी के चुने जाने की घोषणा अखाड़ा परिषद के महामंत्री हरि गिरि ने की। परिषद के महामंत्री हरि गिरि ने बताया कि बहुमत के आधार पर नियम संगत प्रक्रिया का पालन करते हुए परिषद के अध्यक्ष का चुनाव कराया गया है। यही परिषद अब कुंभ, अर्धकुंभ, महाकुंभ का आध्यात्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम कराएगी। इसके अलावा हिंदू संस्कृति के विकास, संरक्षण के साथ ही प्राचीन तीर्थों के उत्थान के लिए अखाड़ा परिषद काम करेगी।

सैदाबाद ब्लॉक में नव निर्वाचित प्रधानो को दिया गया प्रशिक्षण

अखंड भारत संदेश

ग्राम प्रधान को प्रशिक्षण सर्टिफिकेट देते अधिकारी

सैदाबाद। विकास खंड सैदाबाद के ग्राम पंचायतों से निर्वाचित प्रधानो को गांवो में कराये जाने वाले विकास कार्यों को लेकर प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले दिन ब्लाक मुख्यालय पर मीटिंग हाल में प्रशिक्षण दिया गया । इस कार्यक्रम में सबसे पहले माँ सरस्वती की मूर्ति पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की सुरुआत की, और उपस्थित महिला व पुरुष ग्राम प्रधानो को एडीओ पंचायत अखिलेश तिवारी ट्रेनर , डाक्टर ऋचा सिंह द्वारा उपस्थित सभी गांवो के ग्राम प्रधानो को प्रशिक्षण के दौरान बताया कि गांव की धुरी कहें जाने वाले मुखिया प्रधानो का पहला दायित्व होता है गांवो का विकास करना । सरकार गांवो के विकास के लिए पैसा खर्च कर रही हैं जिससे गांवो में विकास कार्य को अमलीजामा पहनाया जा सकें, प्रधानो कीं जिम्मेदारी हैं कि गांव कीं समस्या को गंभीरता से लेते हुए विकास को गांवो में गति को अमलीजामा पहनाने का ।जिससे सरकार की योजनाओं को जमीन पर उतारने के लिए प्रधान अहम् भूमिका होती है ।निर्वाचित प्रधानो को उनके दायित्व को लेकर गांवो में कराये जाने वाले विकास कार्यों के विषय पर विस्तार से चर्चा कर जानकारी दी इस मौके पर एडीओ पंचायत अखिलेश तिवारी ट्रेनर डाक्टर ऋचा सिंह तथा ब्लाक के ग्राम पंचायत गढ़वा से ग्राम प्रधान रीता त्रिपाठी,पूरेखुदी से सुनील कुमार, बिगहिया से बच्चन सिंह, तेलियातारा से चंद्रशेखर, रसूलपुर से बसंती देवी, बजहा मिश्रान से कृष्णानंद तिवारी, बड़ौली से अशोक कुमार आदि प्रधान प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

अधिवक्ता हितों के लिए हमेशा रहूंगा संघर्षरत : नगरहा

फूलपुर तहसील में अधिवक्ताओं को सम्बोधित करते हुए देवेन्द्र मिश्र नगरहा

देवेन्द्र मिश्र नगरहा के फूलपुर आगमन पर अधिवक्ताओं ने किया जोरदार स्वागत, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष व महामंत्री ने गिनाई तहसील की प्रमुख समस्या

फूलपुर। अधिवक्ता किसी पार्टी विशेष का सदस्य नहीं होता है। जो अधिवक्ताओं के हित व अधिकारों की बात करेगा अधिवक्ता उसी का साथ देगा। वर्तमान सरकार से भी हमे निराशा ही हाथ लगी है। जिसका मुंहतोड़ जवाब समय आने पर दिया जाएगा। अधिवक्ता मेरा परिवार है इसलिए मैं उनके हितों के लिए सदैव संघर्षरत रहूंगा। उक्त बातें सोमवार को फूलपुर तहसील सभागार में विधि परिषद के पूर्व अध्यक्ष व वर्तमान में बार कौंसिल आफ उत्तर प्रदेश के सदस्य देवेन्द्र मिश्र नगरहा ने अधिवक्ताओं को सम्बोधित करते हुए बतौर मुख्य अतिथि कही। अधिवक्ताओं की विभिन्न समस्याओं के निराकरण का आश्वासन देते हुए उन्होंने कहा कि अधिवक्ता का हित सर्वोपरि है। उसके लिए मैं दो कदम आगे की सोच रखता हूं। इसके पहले सभागार कक्ष में मौजूद सैकड़ों अधिवक्ताओं ने मुख्य अतिथि को माला पहनाकर उनका जोरदार स्वागत किया। बार एसोसिएशन तहसील फूलपुर के अध्यक्ष अरविंद यादव वह महामंत्री एडवोकेट दिलीप कुमार आजाद ने देवेन्द्र मिश्र नगरहा का तहसील आगमन पर भव्य स्वागत करते हुए उन्हें तहसील की मुख्य समस्याओं से अवगत कराया। जिसपर उन्होंने अपने स्तर से निराकरण का आश्वासन दिया। एडवोकेट मनोज मौर्य ने तहसील परिसर में वादकारियों के लिए पीने के लिए शुद्ध पानी की मांग की जिस पर मुख्य अतिथि ने वाटर कूलर लगवाने की घोषणा की। इस दौरान उन्होंने अधिवक्ताओं के लिए जारी धनराशि को चेक के माध्यम से बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों को सौंपा। तहसील के वरिष्ठ अधिवक्ता शंकर सिंह,रोशन लाल पटेल, कमलेश यादव के साथ ही अन्य वरिष्ठ अधिवक्ताओं ने भी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि को तहसील की प्रमुख समस्यायों से अवगत कराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ अधिवक्ता एस ०पी तिवारी व कुशल संचालन बार के अध्यक्ष अरविंद यादव ने किया। मौके पर वरिष्ठ अधिवक्ता एजाज अहमद,शमीम अहमद तुफानी,यूके अवस्थी, मनीष, बृजेश गौतम, अवस्थी,प्रकाश यादव, सत्यनारायण, कृष्ण चन्द्र, मूलचंद, रितेश चौरसिया,शिवम शुक्ला के साथ ही अन्य अधिवक्ता मौजूद रहे।

CHANGE OF NAME AND D.O.B.

ARMY NO. 18008612F NK. BHOOPENDRA KUMAR SAROJ VILL- ARJUNPUR, POST-SARAY MAHESH, TEH-PATTI, DISTT-PRATAPGARH (U.P.) HAS APPLIED FOR CORRECTION OF NAME AND D.O.B. OF MY MOTHER FROM NAME JAGWANTI DEVI TO JAGWANTI AND D.O.B. 08-04-1965 TO 09-06-1960.

VIDE AFFIDAVIT NO.
UP14489504110090829167927 PATTI COURT

आजादी के 74 वर्षों बाद बेल्हा को मिली मेडिकल कालेज की सौगात

अखंड भारत संदेश

पीएम मोदी ने वर्चुअल लोकार्पण, साक्षी बने चिकित्सा शिक्षा मंत्री सुरेश खन्न व मोती सिंह

प्रतापगढ़। आजादी के 74 वर्षों बाद प्रतापगढ़ को राजकीय मेडिकल कालेज की सौगात आज मिल गई। शहर से चार किमी दूर पूरे केशवराय में 213 करोड़ की लागत से निर्मित डा0 सोनेलाल पटेल स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय का लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सिद्धार्थ नगर से जैसे ही वर्चुअली किया, पूरा मेडिकल कालेज तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस दौरान अतिथियों ने दीप प्रज्जवलन किया।

इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी प्रदेश सरकार के चिकित्सा शिक्षा मंत्री सुरेश खनन, वरिष्ठ मंत्री मोती सिंह के अलावा सांसद विनोद सोनकर व संगम लाल, कमिश्नर संजय गोयल, डीएम, एसपी के अलावा विधायकगण व नेतागण तथा मेडिकल कालेज के प्राचार्य व उनका पूरा स्टाफ मौजूद था। सिद्धार्थ नगर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आज प्रदेश के 9 मेडिकल कालेजों के साथ प्रतापगढ़ का डा0 सोनेलाल पटेल स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय का लोकार्पण किया जा रहा है। इस अवसर पर मौजूद प्रदेश के चिकित्सा शिक्षा मंत्री डा0 सुरेश खनन ने कहा कि डाक्टरों को लोग भगवान मानते हैं। इनके साथ चिकित्सक भी सद्व्यवहार करें। इससे अधिक से अधिक लोग बेहतर शिक्षा का लाभ उठा पाएंगे। मंत्री मोती सिंह ने आज के दिन को ऐतिहासिक क्षण बताया। सांसद विनोद सोनकर ने कहा कि वर्ष 2017 के पहले किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि प्रतापगढ़ जैसे छोटे जनपद में राजकीय मेडिकल कालेज खुलेगा। सांसद संगम लाल गुप्ता ने उन किसानों को धन्यवाद दिया जिन्होंने इस राजकीय मेडिकल कालेज के लिये जमीन दी है। सभी वक्ताओं ने इस बात पर खुशी जताई कि प्रतापगढ़ में अब बेहतर चिकित्सा सुविधा मिलेगी। पूरे केशवराय में मेडिकल के छात्र पढ़ाई करेंगे तथा शहर स्थित पुरुष व महिला अस्पताल में ओपीडी होगी। इस अवसर पर सदर विधायक राजकुमार पाल ने डा0 सोनेलाल के नाम पर बने मेडिकल कालेज के लिये मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति आभार जताया। इस अवसर पर पूर्व सांसद राजकुमारी रतन सिंह, विधायक धीरज ओझा, विधायक आरके वर्मा, पूर्व विधायक हरिप्रताप सिंह, भाजपा के वरिष्ठ नेता राजा अनिल प्रताप सिंह, भाजपा के जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र, पूर्व अध्यक्ष ओम प्रकाश त्रिपाठी, केके सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता गणेश नारायण मिश्र, नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह, नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह व एसके सिंह, अम्मा साहब ट्रस्ट के ट्रस्टी आनंद मोहन ओझा, जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल, पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल, मुख्य विकास अधिकारी प्रभाष कुमार, अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) सुनील कुमार शुक्ला, चिकित्सक डा0 मनोज खत्री, डा0 आरपी चौबे, भाजपा के मीडिया प्रभारी राघवेन्द्र, भाजपा नेता नीलम हिन्द, रमा मिश्रा आदि लोग मौजूद रहे। प्रारंभ में मेडिकल कालेज के प्राचार्य डा0 आर्य देश दीपक ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और मुख्य अतिथि चिकित्सा शिक्षा मंत्री सुरेश खनन व मोती सिंह को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन डा0 अनीस ने किया और आभार प्रदर्शन डा0 सादिक ने किया। मां शारदा संगीत महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

पेंशनरों का निर्गत करें आनलाइन जीवित प्रमाण पत्र

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। चिकित्सा शिक्षा मंत्री ने वित्त विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की और वरिष्ठ कोषाधिकारी दीपक बाबू को निर्देशित किया कि सभी पेंशनरों का आनलाइन जीवित प्रमाण पत्र निर्गत किया जाये जिससे कि पेंशनरों को कोषागार का चक्कर न लगाना पड़े। इस अवसर पर कोषागार, स्टाम्प एवं पंजीयन विभाग, राष्ट्रीय बचत, बेसिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा के लेखाधिकारी उपस्थित रहे।

मत्री, सांसद व विधायकों ने किया वृक्षारोपण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। डा0 सोनेलाल पटेल राजकीय मेडिकल कालेज के उद्घाटन समारोह के बाद मुख्य अतिथि चिकित्सा शिक्षा मंत्री सुरेश खनन, मोती सिंह, सांसद विनोद सोनकर व संगम लाल गुप्ता तथा विधायक धीरज ओझा, राजकुमार पाल, आरके वर्मा सहित सभी ने महाविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया।

तौकीक के परिजनों से मिले सपा अल्पसंख्यक सभा के प्रदेश अध्यक्ष, दी आर्थिक सहायता

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देशानुसार समाजवादी पार्टी का प्रतिनिधिमंडल लालगंज थाना अंतर्गत स्थित बाबूतारा में फर्जी एनकाउंटर में पुलिस की गोली से घायल तौफीक की मौत की जांच एवं पीड़ित परिवार से मिलने हेतु पहुंचे। इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष समाजवादी अल्पसंख्यक सभा के शकील नदवी ने कहा कि हम लोग पूरे परिवार के साथ खड़े हैं। संजय पांडे ने पीड़ित परिवार को आर्थिक मदद के लिए 50 हजार का चेक दिया। जिला अध्यक्ष छविनाश यादव ने कहा कि जिस तरह से पुलिस का कार्य हो रहा है, यह बहुत ही दयनीय है जिसकी वजह से अच्छे पुलिस के ऊपर से लोगों का विश्वास टूटता जा रहा है। इस मौके पर अब्दुल कादिर जिलानी, भैयाराम पटेल, सुषमा पाल, श्याद अली, इरफान खान, राजकुमार यादव, वासिक खान, शाकिर अली, शकील अहमद, मोहम्मद साजिद खान, मनीष पाल आदि लोग मौजूद रहे।

मालगाड़ी से कटकर वृद्ध की मौत

परियावां, प्रतापगढ़। प्रयागराज-लखनऊ रेलवे ट्रैक के परियावां रेलवे स्टेशन के पूर्वी छोर पर सोमवार की दोपहर लगभग 11 बजे एनटीपीसी ऊंचाहार से कोयला उतारकर बनारस को जा रही मालगाड़ी से मिश्रपुर गांव के सामने खम्भा के पास एक वृद्ध की ट्रेन से कटकर दर्दनाक मौत हो गयी, जिसकी सूचना मालगाड़ी के चालक ने मानिकपुर स्टेशन मास्टर को दिया। जिसकी सूचना स्टेशन मास्टर ने परियावां रेलवे स्टेशन मास्टर विशाल को जानकारी दी। घटना की जानकारी मिलते ही ऊंचाहार की रेलवे पुलिस मौके पर पहुंची और घटना को कार्य क्षेत्र के बाहर होने के कारण स्थानीय नवाबगज पुलिस को सूचना दी। घटना की जानकारी मिलते ही थाना प्रभारी रुकुमपाल सिंह ने एस आई रामअधार यादव को मौके पर भेजा, जिस पर पुलिस ने शव की शिनाख्त कराने का प्रयास किया, लेकिन पता नहीं चल सका। षव की लिखा पढ़ी करके पीएम के लिए भेज दिया।

भारत को प्लास्टिक मुक्त करने का ले संकल्पः राज्य मंत्री

शहीद स्थल कहला में आयोजित गोष्ठी में शामिल हुए राज्य मंत्री

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। आजादी के 75 वें अमृत महोत्सव के तहत विकास खण्ड गौरा अंतर्गत शहीद स्थल कहला में आयोजित स्वच्छ भारत संगोष्ठी एवं प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें प्रदेश के खेल, युवा कल्याण एवं पंचायती राज राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार उपेंद्र तिवारी ने बतौर मुख्य अतिथि प्रतिभाग किया तथा क्षेत्रीय विधायक धीरज ओझा के साथ शहीद स्मारक पर पुष्पगुच्छ अर्पित कर किसान आंदोलन के दौरान अपने प्राणों का बलिदान देने वाले अमर शहीदों को नमन करते हुए उनके त्याग एवं बलिदान का स्मरण करते हुए उनके परिजनों का अभिनंदन किया।इस दौरान मंत्री उपेन्द्र तिवारी ने अपने आस-पास के परिवेश को स्वच्छ रखने एवं भारत को प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की जयंती पर 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत किया जिसका उद्देश्य न केवल अपने घर आंगन बल्कि अपने आस-पास के सम्पूर्ण परिवेश को अपना मानकर स्वच्छ रखना है।

क्षेत्रीय विधायक धीरज ओझा ने कहा कि साफ-सफाई को लेकर भारत की छवि को बदलने के लिए प्राधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को एक मुहिम से जोड़ते हुए जिस अभियान की शुरुआत की आज वो जन आंदोलन बन गया है। इस दौरान जिलाध्यक्ष भाजपा हरिओम मिश्र, ब्लॉक प्रमुख शिवगढ सत्यम ओझा, पूर्व प्रमुख गौरा राकेश सरोज, बीडीओ गौरा जितेंद्र यादव, बीडीओ शिवगढ़ जी.डी. शुक्ला, एडीएसटीओ आशुतोष सिंह, नीरज ओझा, शिवम ओझा, पर्यावरण सेना प्रमुख अजय क्रांतिकारी, बद्री गुप्ता, राम पूजन मिश्र, दुर्गा तिवारी, संदीप तिवारी, सुमित पांडेय, ललित मिश्र इत्यादि उपस्थित रहे।

जिला उमरवैश्य समाज सभा का 14 वाँ परिचय सम्मेलन संपन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला उमरवैश्य समाज सभा द्वारा आयोजित 14वाँ सामूहिक विवाह युवक-युवती परिचय सम्मेलन चिलबिला उमरवैश्य धर्मशाला में अध्यक्ष गुलाब चंद्र उमरवैश्य की अध्यक्षता में संपनन हुआ। परिचय सम्मेलन में कई जनपदों के वर-कन्याओं ने सहभागिता की। एक दूसरे को देख समझकर 14 वे सामूहिक विवाह में शामिल होने की सहमति जताई।

समाज सभा के संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य ने बताया कि अभी तक के परिचय सम्मेलन में 10 वर कन्याओ ने अपनी सहमति दे दी है। अंतिम परिचय सम्मेलन 10 नवंबर 2021 को आयोजित होगा जितने भी जोड़ें तैयार होंगे, उनका सामूहिक विवाह 20 नवंबर 2021 को श्री पैलेस चिलबिला से संपनन कराया जाएगा। इस बार एक जोड़ा दिव्यांग का भी समाज सभा द्वारा सामूहिक विवाह में शामिल किया जाएगा। अध्यक्षता कर रहे अध्यक्ष गुलाब चंद उमरवैश्य ने कहा कि 14 वे सामूहिक विवाह में सभी पदाधिकारियों से अनुरोध है कि विगत सामूहिक विवाह की तरह यह राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले सामूहिक विवाह को सफल बनाने में अपना योगदान देकर इस महायज्ञ को सफल बनाएं। जिन पदाधिकारियों को जो दायित्व दिया गया है उनसे अपील है कि समाज इस पुण्य कार्य को सफल बनाएं। समाज सभा का सामूहिक विवाह विषयक पुस्तक का भी विमोचन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामजी उमरवैश्य, संरक्षक श्री रोशनलाल उमरवैश्य, अध्यक्ष गुलाबचंद, महामंत्री शोभनाथ, कोषाध्यक्ष मदन लाल। सामूहिक विवाह आयोजन समिति के महामंत्री मनोज कुमार, कैलाश नाथ मैनेजर, साहब उमरवैश्य, महादेव आदि पदाधिकारियों ने विमोचन किया। परिचय सम्मेलन को सफल बनाने में सर्व श्री राम जी पट्टी, रामविलास, महादेव, रमेशचंद्र, विश्वनाथ, डॉ0 श्याम, दीपक कुमार सभासद, हनुमान प्रसाद, बसंत लाल, श्याम सुंदर, कैलाश नाथ, राजकुमार, संदीप, श्यामसुंदर आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

निकरा के माध्यम से पशुओं का प्रजनन क्षमता सुधारेगा कृषि विज्ञान केन्द्र

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। पशु पालन कृषि का अभिनन अंग एवं पूरक है जो कि कृषकों के अतिरिक्त आय का मुख्य स्रोत भी होता है। जनपद प्रतापगढ़ में भी विभिनन नस्लों की गाय व भैसें बहुतायत से पाली जाती हैं किन्तु यहॉ के बहुत से क्षेत्रों की मिट्टी में तॉबा की मात्रा कम होने के कारण पशुओं में गर्मी का न आना एवं बांझपन की समस्या देखी जा रही है। इसी समस्या को दूर करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र प्रतागढ़ द्वारा चलाये जा रहे जलवायु अनुरूप कृषि पर राष्ट्रीय नवाचार (निकरा) के अन्तर्गत छाछामऊ ग्राम में पशुपालकों को डिवार्मिंग (कीड़े की दवा) एवं तॉबा सांद्रित खनिज पूरक निवेश का वितरण किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र के पशु चिकित्सक डा0 अमित बरनवाल उपरोक्त समस्या पर प्रशिक्षण दिया जिसके माध्यम से किसानों के अलग-अलग समूह बनाकर उनकी समस्या ग्रस्त पशुओं में गाय, भैस, बछियों एंव पड़ियों उपर्युक्त औषधियों को ससमय खिलाने की विधि आदि विस्तार से बताया।

डा0 नवीन कुमार सिंह ने पशुपालकों को पशुओं के उत्पादकता को बनाये रखने के लिए संतुलित आहार, खनिज लवण, मिनरल मिक्चर, हरा चारा तथा सूखा चारा खिलाने के नियम विस्तार से बताया। उद्यान वैज्ञानिक महेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा वर्ष भर हरे चारे की खेती एवं चारे के संरक्षण की विधियां बतायी। उक्त अवसर पर गॉव के रावेन्द्र कुमार शुक्ला, रोशन लाल, शिव प्रकाश, हरिश्चन्द्र, छोटे लाल, रवि शंकर पाण्डेय, बाबू लाल, अर्जुन प्रसाद, अनिल सरोज इत्यादि मौजूद रहे।

गोकुला के कलश यात्रा में जुटी सैकड़ों की भीड़

कलश और भागवत पुराण का हुआ पूजन

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। गोकुला के तिवारीपुर में मंगलवार से शुरू होने वाले श्रीमद्भागवत कथा के एक दिन पूर्व घोड़ा-गाजा बाजा के साथ सैकड़ों लोगों ने कलश यात्रा निकाली। कलश यात्रा मुख्य यजमान प्रकांड पण्डित कमला कांत त्रिपाठी सोहगौरा के घर से भय हरण नाथ धाम तक निकाली गयी। कुलगुरु सत्य ब्रत शुक्ल महाराज के नेतृत्व में पण्डित शशि प्रकाश शुक्ल, पण्डित रामजी पांडेय, राज कुमार शुक्ल सहित 21 पुरोहितों के साथ सैकड़ो महिलाओं एवं पुरुषों ने भाग लिया। भयहरण नाथ धाम पर पण्डित जी ने कलश और श्री मद्भागवत की पोथी का विधिवत पूजन कराया। पूजनोपरान्त कमला कांत त्रिपाठी सपतनीक मुख्य यजमान ने भगवान भोले नाथ से कथा सुनने और कथा सकुशल पूर्ण कराने की प्रार्थना की। यात्रा के दौरान नन्दा के पूरा, कटरा गुलाब सिंह और मंदिर के मुख्य गेट पर भव्य स्वागत किया गया। इस मौके पर राम लखन तिवारी, कन्हैया लाल तिवारी, गया प्रसाद तिवारी, राम चन्द्र तिवारी, व्यवस्थापक आशुतोष तिवारी, संगम लाल तिवारी,डाक्टर श्याम सुंदर पाराशर के मुखारविंद से बुधवार से होगी।

नौनिहालों को मायूस देख लगा दिया मेला, राम रावण का हुआ युद्ध

आंधी और पानी की वजह से मेला न देख पाने वाले बच्चों के लिए हुआ प्रोग्राम

जोगापुर स्कूल के प्रांगण में बच्चों ने देखा दशहरा, भरत मिलाप

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। आंधी, बारिश और किन्हीं कारणों से दशहरा और भरत मिलाप न देख पाने से मायूस नौनिहालों ने जब यह सब कुछ अपने ही स्कूल में देखा तो खुशी से निहाल हो गये। राम रावण का युद्ध, पुतला दहन आकर्षक झांकियों के बाद श्रीराम और भरत का मिलाप, राजगद्दी और विजय जुलूस सब कुछ देखा। चाउमीन, कुरकरे, गुब्बारे और कचालू के चटखारे स्वाद का आनंद लिया तो मजा आ गया।

खुशियां ढूढने से मिलती है। जोगापुर संविलियन विद्यालय में बच्चों को खुशियां देने का अनूठा प्रयास किया गया जो सफल रहा। टीचर राजेश कुमार को पता चला कि मौसम की खराबी, पैसे की तंगी के चलते काफी बच्चे इस बार का भरत मिलाप और दशहरा नहीं देख पाये हैं। उन्होंने बच्चों से बात की। उनकी इच्छा जानने के बाद स्कूल में ही मेला लगाने की ठानी। पूरे मेले का संचालन/संयोजन और निर्देशन टीचर राजेश कुमार ने किया। प्रबंध समिति के आयोजन की सराहना की। कहा कि बच्चों को श्रीराम के आदर्शों की सीख देने का यह एक उत्तम तरीका था। इस दौरान मेले में रौनक लाने में आर्कषक झांकियों का भी सराहनीय प्रदर्शन रहा। नेहा, अंजू, रिया, खुशी, वैष्णवी, मानसी के भक्ति नृत्य के साथ दीपू का सुदामा डांस देख लोग वाह वाह कर उठे। बच्चों को इनाम भी मिला। राजगद्दी और श्रीराम के राजतिलक के साथ ही मेले का समापन हुआ। संयोजक टीचर राजेश कुमार ने मेले में सहयोग के लिए श्रीराम लीला समिति खासकर संजय खंडेलवाल,राम भक्त बंटी, आरपीएफ के सिपाही डीपी सिंह, चालक नवाब और बीबीएफजी के टीचर शनि सरोज के प्रति आभार ज्ञापित किया। अध्यक्षता इंचार्ज कौशिल्या देवी ने किया।

शिक्षा निदेशक कार्यालय में भ्रष्टाचार के खिलाफ बनी आंदोलन की रणनीति

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। माध्यमिक शिक्षा निदेशक कार्यालय में फैले भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन की रणनीति को लेकर सूचना का अधिकार विभाग कांग्रेस की बैठक जनसूचना अधिकार अध्यक्ष शिवम मिश्रा अध्यक्षता में सम्पनन हुई। संचालन ए0एस0यू0आई0 के जिलाध्यक्ष उत्सव भूषण पाल ने किया।

बैठक में एक नवम्बर को शिक्षा निदेशालय प्रयागराज में धरना प्रदर्शन और 9 नवम्बर को उप मुख्यमंत्री माध्यमिक शिक्षा विभाग के आवास का घेराव और माध्यमिक शिक्षा निदेशक, कार्यालय लखनऊ पर प्रदर्शन कर ज्ञापन का महत्वपूर्ण निणय लिया गया। जनसूचना विभाग कांग्रेस अध्यक्ष शिवम् मिश्रा ने आरोप लगाते हुये कहा कि इस सरकार में अधिकारी बेलगाम हो गये हैं और भ्रष्टाचार में लिप्त है। माध्यमिक शिक्षा निदेशक लखनऊ कार्यालय में भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर फैला हुआ है। उन्होने इसकी जांच कराये जाने की मांग की है। कांग्रेस सदर प्रत्याशी डॉ0 नीरज तिवारी ने कहा कि संगठन माध्यमिक शिक्षा विभाग में फैले भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन करेगा। जब तक जांच कर दोषियों के दण्डित नहीं किया जाता, संगठन का आन्दोलन जारी रहेगा। एन0एस0यू0आई0 के पूर्व अध्यक्ष वेदान्त तिवारी ने कहा कि माध्यमिक शिक्षा निदेशक कार्यालय लखनऊ द्वारा चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी से तृतीय श्रेणी में पदोनन्ति नहीं की जा रही है जो कि चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के साथ अन्याय किया जा रहा है। बैठक में मुख्य रूप से आरटीआई विभाग के प्रदेश सचिव मनोज शुक्ला, आरटीआई जिला अध्यक्ष शिवम मिश्रा, देवमणि पांडेय, उत्कर्ष मिश्र, नूर आलम, अंकुर सरोज, विवेक मौर्य, आलोक मिश्र एडवोकेट, अजय त्रिपाठी एडवोकेट आदि उपस्थित रहे।

सूचना का अधिकार विभाग कांग्रेस की बैठक में लिया गया निर्णय

खबर संक्षेप

विधिक साक्षरता एवं सहायता हेतू किया गया जागरूक

कौशाम्बी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत 53 ग्राम सभा एवं 06 शहरी क्षेत्रों में डोर टू डोर कैम्पेन व विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन जनपद कौशाम्बी में किया गया है। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सौजन्य से 53 ग्राम सभाओं एवं 06 शहरी क्षेत्रों में घर-घर जाकर विधिक साक्षरता एवं सहायता हेतू जागरूक किया गया एवं बाल विकाश केन्द्र परियोजना कड़ा में आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को विधिक जागरूकता एवं साक्षरता के प्रचार-प्रसार हेतु प्रशिक्षण एवं रैली निकाली गयी। जिसमें मुख्य सेविका नीलम गुप्ता, सरस्वती, सीडीपीओ ज्ञानमती तथा आंगनबाड़ी कार्यकत्री द्वारा उपस्थित होकर विधिक साक्षरता एवं जागरूकता रैली निकाली गयी।

आईटीआई में प्रवेश हेतु कराए पंजीकरण

कौशाम्बी। प्रधानाचार्य, आईटीआई के0के0राम ने बताया है कि जनपद के ऐसे समस्त अभ्यर्थी जो राजकीय व निजी आईटीआई में प्रवेश हेतु पंजीकरण किये हैं, वे ऐच्छिक संस्थानो में रिक्त सीटो के सापेक्ष अपना रैंक पत्र दिनांक 28 अक्टूबर 2021 तक संस्थान में उपलब्ध करायें 29 अक्टूबर 2021 को चयनित अभ्यार्थी की सूची सम्बन्धित संस्थान के नोटिस बोर्ड पर चस्पा कर दी जायेगी। चयनित अभ्यर्थी नियमानुसार अपने प्रवेश से सम्बन्धित कायार्वाही 30 अक्टूबर 2021 तक पूर्ण करायें अन्यथा 30 अक्टूबर 2021 के बाद किसी भी स्थिति में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

दो वारण्टी हुए गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अलग अलग थानों द्वारा दो वारण्टी अभियुक्तो को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया है जानकारी कद मुताबिक थाना मोहब्बतपुर पाइंस पुलिस द्वारा पाक्सो एक्ट में वारण्टी अभियुक्त पूजा देवी पुत्री राम सिंह निवासी मोगला थाना मोहब्बतपुर पाइंस को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना कोखराज पुलिस द्वारा वारण्टी अभियुक्त कमलेश पुत्र राजाराम निवासी रौंढी का पुरवा थाना कोखराज को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया है।

अवैध शराब के साथ द्यदो गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अवैध शराब व निर्माण के तस्करी के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में जिले के अलग अलग थानों द्वारा दो अभियुक्तो को 30 लीटर अवैध शराब व शराब बनाने के उपकरण के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है जानकारी के मुताबिक थाना सैनी पुलिस द्वारा अभियुक्त मोहन लाल सरोज पुत्र राकेश कुमार सरोज निवासी खरकापार मजरा धुमाई थाना सैनी को 20 लीटर अवैध शराब व शराब बनाने के उपकरण के साथ गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना पश्चिम शरीरा पुलिस द्वारा अभियुक्त राम नरेश सरोज पुत्र बोधे सरोज निवासी लकौड़ा मजरा सोनौली थाना पश्चिम शरीरा को 10 लीटर अवैध शराब व शराब बनाने कस उपकरण के साथ गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है।

चेकिंग के दौरान कार्यवाही

कौशाम्बी। सरकार द्वारा जारी गाइडलाइन का उल्लंघन करने वाले व यातयात के नियमो को न मानने वालों के विरुद्ध जिले स्तर पर सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को कड़क किया गया जिसमें 94 वाहनों को ई चालान किया गया व 1 वाहन का चालान कर 500 रुपए सम्मन शुल्क वसूल किया गया साथ ही बिना मास्क लगाए घूम रहे 8 व्यक्तियों से 1650 रुपए जुमार्ना वसूला गया।

राज्यमंत्री राजस्व ने की विभागीय समीक्षा बैठक

अखंड भारत संदेश

अवैध शराब एवं कच्ची शराब के विरूद्ध नियमित कार्यवाही करने के निर्देश, राजस्व वादों के निस्तारण में तेजी लाने के निर्देश दिय

मंत्री की बैठक में उपस्थित विधायक पार्टी पदाधिकारी कार्यकर्ता अधिकारी वा अन्य

कौशाम्बी। प्रदेश के राज्यमंत्री राजस्व विभाग छत्रपाल सिंह गंगवार ने सोमवार को कांशीराम गेस्ट हाउस, ओसा में संबंधित अधिकारियों के साथ विभागीय समीक्षा बैठक की बैठक में राज्यमंत्री ने कर एवं करेत्तर की समीक्षा के दौरान आबकारी एंव वाणिज्यकर अधिकारियों को और अधिक प्रवर्तन कार्य करने एवं लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व वसूली में प्रगति लाने के निर्देश दिये। उन्होंने स्टाम्प एंव रजिस्ट्रेशन, परिवहन, विद्युत देय तथा नगर निकायों के अधिकारियों को राजस्व वसूली में प्रगति लाने के निर्देश दिये। उन्होने अवैध शराब एवं कच्ची शराब के विरूद्ध नियमित कार्यवाही करने के निर्देश दिये। उन्होने अधिशासी अभियंता विद्युत को बिजली की समस्याओं के निस्तारण हेतु जगह-जगह कैम्प लगाने के निर्देश दिये। इसके साथ ही उन्होंने ट्रान्सफार्मर की क्षमता बढ़ाने एवं शासन द्वारा निर्धारित समयावधि में ट्रान्सफार्मर के बदलने की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को आवारा घूम रहे निराश्रित गोवंशों को पकड़कर गौशालाओं में रखने के निर्देश दिये राज्यमंत्री ने धान क्रय की समीक्षा के दौरान कहा कि इस प्रकार की व्यवस्था सुनिश्चित की जाय कि किसानों को किसी भी प्रकार की समस्या न होने पाये तथा शासन द्वारा निर्धारित मूल्य पर धान का क्रय किया जाना सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने कहा कि वरासत एवं दाखिल खारिज सहित आदि छोटे-छोटे प्रकरणों वादों का निस्तारण समयान्तर्गत किया जाय कोई भी लंबित न रहने पाय। उन्होंने राजस्व वादों के निस्तारण में तेजी लाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि सभी पात्र व्यक्तियों को राशन कार्ड एवं प्रधानमंत्री आवास योजना से लाभान्वित किया जाय तथा यह सुनिश्चित किया जाय कि कोई भी पात्र व्यक्ति योजना के लाभ से छूटने न पाये एवं सत्यापन कराकर अपात्र व्यक्तियों को हटाया जाय। उन्होंने मिनी स्टेडियम बनाये जाने की भी कार्यवाही करने के निर्देश दिये राज्यमंत्री ने दैवी आपदा से प्रभावित पात्र व्यक्तियों को आर्थिक सहायता एवं आवास आदि की सुविधा उपलब्ध करायी जाय। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि अत्याधिक वर्षा आदि के कारण फसलों को हुई क्षति का आंकलन कराकर किसानों को आर्थिक सहायता शीघ्र दिया जाय। उन्हांने कहा कि समाधान दिवस में प्राप्त होने वाली शिकायतों का निस्तारण तत्काल एवं गुणवत्तापूर्ण किया जाय।इस अवसर पर विधायकगण लाल बहादुर एवं शीतला प्रसाद उर्फ पप्पू पटेल, जिलाधिकारी सुजीत कुमार, पुलिस अधीक्षक राधेश्याम विश्वकर्मा एवं अपर जिलाधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे राज्यमंत्री ने तहसील सिराथू एवं मंझनपुर के निरीक्षण के दौरान लंबित राजस्व वादों को शीघ्र निस्तारित करने के निर्देश दिये। उन्होंने सम्पूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त शिकायतों का निस्तारण समयान्तर्गत करने तथा साफ सफाई की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि तहसील में आने वाले फरियादियों की समस्याओं का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर तत्काल किया जाय, जिससे उन्हें इधर-उधर भटकना न पड़े।

यमुना का सीना चीर कर बेखौफ हो रहा बालू का अवैध खनन

अखंड भारत संदेश

पुलिस कप्तान के मकसद पर पूरी पुलिस चौकी नहीं उतर सकी खरी बालू माफियाओं के बढ़ते रुतबे के आगे नतमस्तक हुआ प्रशासन

यमुना से बालू के अवैध खनन का दृश्य

कौशांबी। यमुना नदी का सीना चीर कर बालू का अवैध खनन का रिश्ता कौशांबी से पुराना है बालू के अवैध खनन में कई बार यमुना तराई क्षेत्र खून से लाल हो चुका है कौशांबी इलाहाबाद के बालू माफियाओं के साथ-साथ अब तो राजस्थान पंजाब हरियाणा के बालू माफियाओं ने भी काली कमाई में दखल दे दिया है बालू माफियाओं से मोटी रकम मिलने के चलते अधिकारियों ने उनके सामने घुटने टेक दिए हैं बेखौफ तरीके से यमुना का सीना चीर कर माफियाओ के द्वारा बालू का अवैध खनन हो रहा है पिपरी थाना क्षेत्र के यमुना नदी के औधन घाट से नदी के जल के बीच से बालू की निकासी हो रही है स्थानीय पुलिस सब कुछ आंखों से देख रही है लेकिन उसके बाद भी स्थानीय पुलिस पूरी तरह से अनजान बनी है औधन घाट में बालू के अवैध खनन पर रोक लगाने के लिए पूर्व पुलिस अधिकारियों ने पुलिस चौकी की स्थापना कर उप निरीक्षक और सिपाहियों की तैनाती की लेकिन पुलिस कप्तान के मकसद पर पूरी पुलिस चौकी खरी नहीं उतर सकी है बालू माफियाओं के अवैध कारोबार में चौकी के उप निरीक्षक और सिपाही केवल धनादोहन कर आला अधिकारियों को गुमराह करने तक सीमित हैं जिससे बालू का अवैध खनन पर विराम नहीं लग सका है।

स्वच्छ भारत के अंतर्गत श्रमदान का आयोजन

कौशाम्बी। नेहरू युवा केन्द्र कौशांबी युवा कार्यक्रम एवम खेल मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान मे ग्राम पंचायत सुरसेनी मे नेहरू युवा स्वयं सेवक विकास मिश्रा व अभिषेक द्विवेदी द्वारा विकास खण्ड नेवादा में स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत श्रमदान का आयोजन किया गया जिसमे कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हामिद अली प्रधानाध्यापक के द्वारा स्वच्छता एवम पालीथीन मुक्त कार्यक्रम को लेकर कहा गया की अगर आज के युवा ठान ले तो हम सब मिलकर अपना भविष्य पालीथीन मुक्त बना सकते है और आने पाली पीढ़ी को अच्छा कल दे सकते है आज के श्रमदान कार्यक्रम में युवाओं के द्वारा लगभग 140 किलो. का पालीथीन कचरा उठा कर ग्राम पंचायत के सफाई कर्मी को पालीथीन नष्ट करने हेतु सौंपा गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से नाजिस सुहेल मैम नीरज कुमार उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

बैंकों की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेने पहुँचे एसपी

कौशांबी। पुलिस अधीक्षक राधेश्याम विश्कर्मा ने पुलिस बल के साथ जिले के कई बैंकों का निरीक्षण किया और बैंकों की सुरक्षा में लगे सुरक्षा कमीयी और सीसीटीवी कैमरों की निगरानी फुटेज को देखा, पुलिस अधीक्षक ने बैंक कर्मचारियों को हिदायत देते हुए कहा कि बैंक मैं लगे सीसीटीवी कैमरे बंद नहीं होना चाहिए। सुबह 10:00 बजे से लेकर 5:00 बजे तक चालू हालत में रखे जाएं बैंकों की सुरक्षा में लगे सुरक्षा कर्मचारियों को फटकार लगाते हुए उन्होंने कहा कि बैंक की सुरक्षा में सतर्कता बरती जाए। संदिग्ध व्यक्ति को तत्काल हिरासत में लेकर पूछताछ की जाए। एक भी व्यक्ति बैंक के अंदर बिना किसी कार्य के जाने न पाए। जो भी व्यक्ति बैंक के अंदर अपरिचित प्रवेश करें उसकी जांच पड़ताल कर अंदर जाने दिया जाए। पुलिस अधीक्षक के निरीक्षण से बैंक में लगे कर्मचारियों के अंदर भय व्याप्त हो गया।

मनचले से पीड़ित बालिका को नहीं मिल रहा न्याय

कौशाम्बी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के उस्मानपुर बिगाहरा गांव की एक नाबालिग बालिका पुलिस चौकीदार के मनचले बेटे से परेशान हैं आरोप है कि पुलिस चौकीदार के बेटे ने अकेले देखकर बालिका के साथ कई बार रेप करने का प्रयास किया है बालिका का आरोप है कि 6 अक्टूबर और 16 अक्टूबर को अकेले पाकर पुलिस चौकीदार के बेटे कमलेश ने जबरिया उसे बलपूर्वक जमीन पर पटक दिया है और रेप करने का भरसक प्रयास किया है बालिका का कहना है कि उसने युवक के कारनामे का जमकर विरोध किया है दोनों बार हो हल्ला मचाने से आसपास के लोग एकत्रित हो गए हैं जिससे चौकीदार का बेटा ललकारते धमकाते हुए मौके से चला तो गया है लेकिन उसकी नियत अभी भी खराब है और मौका मिलते ही वह बालिका की इज्जत लूटने के लिए उतारू है इसके पहले भी चौकीदार के मनचले बेटे पर एक बालिका ने आरोप लगाया था लेकिन बालिका को न्याय नहीं मिल सका पीड़ित बालिका की मां का कहना है कि लोक लाज के भय से उसने मामले की शिकायत पहली बार नहीं की थी लेकिन दूसरी बार चौकीदार के बेटे की हरकत के बाद बालिका की मां ने सराय अकिल कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर चौकीदार के मनचले बेटे पर कठोर कार्यवाही की मांग की है पीड़ित बालिका की मां का आरोप है कि एक सप्ताह से अधिक बीत जाने के बाद भी थाना पुलिस चौकीदार के मनचले बेटे पर कार्यवाही करने में आनाकानी कर रही है।

कौशांबी के गांजा तस्करों को रायपुर पुलिस ने दबोचा

समकक्ष नेताओं के आगे पीछे घूमते देखा जाता है गांजा माफियाओं का सरगना

कौशांबी। जिले में गांजे का कारोबार विभागीय अधिकारियों और थाना पुलिस के रहमों करम पर फल फूल रहा है और कौशांबी के गांजा माफियाओं का व्यवसाय धीरे-धीरे अन्य प्रांतों तक पहुंच गया है गांजे की थोक मंडी कौशांबी बन चुकी है और गांजे के बड़े कारोबारियों से आबकारी के साथ-साथ थाना पुलिस मोटी रकम वसूल कर मामले में पर्दा डालने का प्रयास करती हैं गांजे के बड़े कारोबारी और थाना पुलिस लगातार अधिकारियों को भी गुमराह कर रही है जिले में बेखौफ तरीके से गांजे का कारोबार थोक में फल-फूल रहा है सब कुछ खुलेआम हो रहा है लेकिन उसके बाद भी थाना और चौकी पुलिस अनजान बनने का ढोंग कर रही है इन दिनों मंझनपुर कस्बे के मनोज कुमार और रितिक अग्रहरी को छत्तीसगढ़ के रायपुर की पुलिस ने लग्जरी वाहन में 14 किलो गांजा के साथ गिरफ्तार किया है रायपुर पुलिस का दावा है कि पकड़े गए आरोपियों ने पूछताछ में बताया है कि वह गांजा मंझनपुर से लेकर बिक्री करने जा रहे थे अब सवाल उठता है कि मंझनपुर मुख्यालय से गांजा विक्रेता लग्जरी वाहन में छत्तीसगढ़ सप्लाई करने पहुंच गए लेकिन कौशांबी की आबकारी और थाना पुलिस को भनक तक नहीं लगी सूत्रों की मानें तो दोनों आरोपी लंबे समय से गांजा तस्करी में लिप्त हैं गांजा सप्लाई में लगे युवको का सरगना पर्दे की ओट में है और उसे राजनैतिक दलों का भी संरक्षण मिला है और इन दिनों वह अपने समकक्ष नेताओं के आगे पीछे घूमते देखा जाता है जिससे पुलिस गांजा माफियाओं की काली कमाई में हिस्सा लेने तक सीमित है पुलिस का साहस गांजा माफिया पर कार्यवाही करने का नहीं है आखिर कब तक गांजे का काला कारोबार आबकारी और थाना पुलिस के संरक्षण में फलता फूलता रहेगा यह बड़ा सवाल है।

प्रत्याशियों के बीच खींचतान का फायदा उठाएंगे अन्य राजनीतिक दल

अखंड भारत संदेश

मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी को आसान नहीं होगी राह

कौशांबी। मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र से लाल बहादुर भाजपा के बैनर तले 2017 में विधायक पद पर विजई हुए थे इसके पहले इस सीट पर लगातार कई बार बहुजन समाज पार्टी ने जीत दर्ज की थी लेकिन 2022 के विधानसभा चुनाव में इस विधानसभा सीट से अन्य लोगों ने भी प्रबल दावेदारी ठोक दी है आम जनता के बीच मुलाकात कर कई नेताओं ने संपर्क करना शुरू कर दिया है इस बात की जानकारी मिलते ही पार्टी में हड़कंप मच गया है और मामला हाईकमान तक पहुंचा है एक पूर्व ब्लाक प्रमुख मंझनपुर विधानसभा सीट से भाजपा के बैनर तले प्रबल दावेदार हैं सूत्रों की माने तो आलाकमान ने उन्हें आशीर्वाद भी दे दिया है कई मीटिंग उन्होंने इलाके की जनता के साथ कर अपने दावेदारी की बात की है पूर्व प्रमुख के मीटिंग किए जाने के बाद मंझनपुर सीट की राजनीति पर गर्माहट आ गई है जहां पूर्व प्रमुख वर्तमान विधायक के लिए चुनाव में राजनैतिक खतरा बन सकते हैं वहीं बीते चुनाव में बहुजन समाज पार्टी अपनी खोई सीट को पुनः वापस पाने की गणित लगा सकती है पूर्व प्रमुख को पार्टी हाईकमान ने विधायकी का टिकट देने से इंकार कर दिया तो पूर्व प्रमुख बगावत भी कर सकते हैं इस बात की चर्चा पार्टी के भीतर खाने में चल रही है जिससे भाजपा पार्टी हाईकमान भी असमंजस की स्थिति में है वह विधानसभा में किसे दावेदार घोषित करें। कई चुनाव में लगातार इस सीट पर अपना परचम फहराने वाली बहुजन समाज पार्टी ने डॉ नीतू कनौजिया को प्रत्याशी घोषित कर राजनीतिक गलियारे में हड़कंप मचा दिया है बहुजन समाज पार्टी द्वारा घोषित किए गए प्रत्याशी डॉ नीतू कनौजिया का प्रबल समर्थन समाजवादी पार्टी के एक कद्दावर नेता द्वारा किए जाने की संभावना है बसपा छोड़कर समाजवादी में गए इंद्रजीत सरोज समाजवादी से प्रत्याशी बनाए जा सकते हैं बसपा छोड़कर समाजवादी में आए नेताओं के चलते समाजवादी में भितरघात तेजी से पनप रहा है और इस भितरघात के चलते उनकी भी राह आसान नहीं दिख रही है दूसरी तरफ भाजपा में भी आपसी खींचतान हुई तो बसपा प्रत्याशी डॉ नीतू कनौजिया की राह आसान हो सकती है बदलते राजनीतिक समीकरण के चलते नेताओं के दिलों की धड़कन बढ़ गई है यह तो वक्त बताएगा कि मंझनपुर विधानसभा में जनता किसे स्वीकार कर विधानसभा भेजती हैं।

सीएचसी में चलाया गया प्लास्टिक मुक्त अभियान

कौशाम्बी। नेहरू युवा केंद्र कौशांबी युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा चलाए जा रहे क्लीन इण्डिया प्लास्टिक मुक्त अभियान के अंतर्गत श्रमदान एवं स्वच्छता का कार्यक्रम सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कड़ा में अधीक्षक डॉ नीरज सिंह की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। अधीक्षक द्वारा स्वच्छता एवं पॉलीथिन मुक्त कार्यक्रम को लेकर कहा गया कि अगर हम सभी युवा ठान ले तो अपना भविष्य पॉलिथीन मुक्त बना सकते हैं। श्रमदान कार्यक्रम में युवाओं के द्वारा लगभग 380 किग्रा पॉलिथीन कचरा उठाकर नगर पंचायत के सफाई कर्मी दिनेश कुमार को पॉलिथीन नष्ट करने हेतु सौंपा गया। कार्यक्रम में नेहरू युवा केंद्र के राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक विनय पाण्डेय दीपेन्द्र अग्रहरी के साथ हिना खान बीएमसी (यूनिसेफ),प्रदीप सिंह बीपीएम, राजेंद्र सिंह (फार्मासिस्ट) डॉ जितेन्द्र सोनकर, प्रमोद साहू (अध्यक्ष व्यापार मंडल देवीगंज) वीरेंद्र सिंह, कमलेश कुमार,नरेश कुमार, मुकेश कुमार,दिलीप कुमार,राजकुमार,राजेंद्र कुमार,सनी कुमार,मनजीत कुमार आदि युवाओं ने प्रतिभाग किया।

कौशांबी पुलिस ने फिर किया खाकी वर्दी को शर्मसार !

मर्डर के खुलासे में नहीं शव छुपाने में जुट गई पुलिस दरोगा समेत 3 सिपाही लाइन हाजिर

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र के दुगार्पुर गांव में 18 अक्टूबर की सुबह एक अज्ञात युवक की लाश नहर की झाड़ियों में मिली थी जिसकी शिनाख्त हरियाणा के नागेंद्र सिंह के रूप में पुलिस ने कर के दो आरोपियों को जेल भेज दिया लेकिन पुलिस की इस कहानी में झोल ही झोल है इस मामले में पुलिस का चेहरा फिर बेनकाब हो गया है। कौशाम्बी में हरियाणा के नरेंद्र सिंह की हत्या के मामले में रविवार को एक चौकी इंचार्ज सहित दो सिपाहियों को लाइन हाजिर किया गया है। हालांकि इस मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार भी किया गया है। लेकिन पुलिस की घोर लापरवाही भी सामने आई है। दरअसल पिपरी थाना क्षेत्र के दुगार्पुर गांव में 18 अक्टूबर की सुबह एक अज्ञात युवक की लाश नहर की झाड़ियों में मिली थी। ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर शिनाख्त की कोशिश शुरू की। लाश मिलने के करीब 3 घण्टे बाद सराय अकिल पुलिस ने इमली गांव से एक लग्जरी कार लावारिस हालत में बरामद की जिसके आधार पर पुलिस ने शव की पहचान नरेंद्र सिंह (35) पुत्र लक्ष्मण सिंह निवासी सनोली रोड चांदनी बाग थाना पानीपत हरियाणा के रूप में की।

करीबी रिश्तेदार पहुंचे और शव ले गए

कौशाम्बी। नरेंद्र सिंह की मौत की खबर पाकर उसके भाई ज्ञान सिंह समेत करीबी रिस्तेदार कौशाम्बी पहुंचे और पीएम की कार्यवाही के बाद शव लेकर वापस लौट गए। भाई ज्ञान सिंह ने पुलिस को तहरीर देते हुए हत्या का आरोप नरेंद्र के साथी घनश्याम पर लगाया। जबकि हत्याकांड में पुलिस ने घनश्याम को छोड़ जवई गांव के सुशील पाठक एवं तिल्हापुर गांव के शिवपूजन को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।पुलिस अधकारियों के सामने अपने इकबालिया बयान में शिवपूजन ने अपना जुर्म कबूल करते हुए हत्या की बात कबूल की, पर शव को पिपरी के दुगार्पुर गांव में फेके जाने की बात से इनकार कर दिया। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, शिवपूजन ने शव को ले जाते समय इमली गांव के पास पुलिस के रोकने पर फरार होने की बात बताई।

पुलिस का गुड वर्क बनाम बैड वर्क

कौशाम्बी। नरेंद्र सिंह हत्याकांड का मुख्य अभियुक्त घनश्याम फरार है, बावजूद इसके पुलिस ने शिवपूजन और सुशील को अरेस्ट कर खुलासे का दावा कर दिया। पुलिस की जल्दबाजी में पुलिस के दमन पर लगा दाग भी अब सतह पर आ गई। पुलिस सूत्रों के मुताबिक घटना वाली रात पुलिस को जब नरेंद्र की लाश कार में मिली थी तो सराय अकिल पुलिस ने शव को अपने थाना क्षेत्र से हटा कर सरकारी जीप से पिपरी थाना क्षेत्र के दुगार्पुर गांव में नहर में फेक दिया। ताकि उसके क्षेत्र का क्राइम ग्राफ न बढ़े।फिलहाल, एसपी राधेश्याम ने सराय अकिल थाना पुलिस के कारनामे पर कार्यवाही का चाबुक चला दिया है। पिछले दो दिनों से जारी कार्यवाही में कानून व्यवस्था का हवाला देकर एसपी ने थानेदार सराय अकिल, चौकी इंचार्ज भगवानपुर, थाना वाहन चालक सिपाही एवं दो अन्य सिपाहियों को लाइन हाजिर कर दिया है। एसपी राधेश्याम ने इस बाबत कानून व्यवस्था का हवाला देकर पुलिस कर्मियों पर कार्रवाई की बात कही है।

कैसे खुला हत्याकांड

कौशाम्बी। पुलिस को अपने इकबालिया बयान में शिवपूजन ने बताया कि नरेंद्र सिंह की हत्या उन्होंने उसके रुपये हासिल करने की नीयत से करने की बात स्वीकार की। हत्या के बाद वह लाश लेकर उसे ठिकाने लगाने जा रहे थे। तभी चौकी भगवानपुर के सिपाहियों ने उन्हें टार्च मार कर रोका। पुलिस के बचने के लिए वह और घनश्याम कार छोड़ फरार हो गए। भागते समय घनश्याम अपने मोबाईल के जगह नरेंद्र सिंह का मोबाईल फोन लेकर भाग आया। जिसके चलते पुलिस उस तक पहुंच गई।

पुलिस को कार में मिले दस्तावेजों से हुई पहचान

कौशाम्बी। पुलिस को कार में मिले दस्तावेजों के आधार पर पिपरी थाना क्षेत्र के जवई गांव निवासी घनश्याम का पता चला। बताया जा रहा है कि घनश्याम पानीपत में नरेंद्र सिंह के साथ प्राइवेट कंपनी में काम करता था। जिससे मिलने नरेंद्र हत्या के दो दिन पहले कौशाम्बी के जवई गांव आया था। जिसकी हत्या घनश्याम व उसके साथी शिवपूजन एवं सुशील पाठक के मिलकर कर रुपये के लालच में कर दी। और लाश को ठिकाने लगाने सराय अकील थाना इलाके के इमली गांव होते हुए मृतक की कार से किसी अज्ञात स्थान पर जा रहे थे। तभी पुलिस ने चेकिंग के लिए गाड़ी को रोका तो हत्यारे कार व लाश छोड़ फरार हो गए। स्थानीय ग्रामीण ने बताया कि वह करीब तीन बजे सुबह गांव जा रहा था तभी पुलिस की भीड़ देख उसने रुकने की कोशिश की लेकिन सराय अकिल पुलिस ने उसे धमका कर भगा दिया। जाते जाते उसने देखा की गाड़ी में एक शख्स लेटा है। इसके बाद क्या हुआ उसे नहीं पता सुबह लाश और कार अलग अलग जगहों पर मिलने की जानकारी हुई। लेकिन पुलिस के डर से वह कुछ नहीं बोला।

अधिकारियों के भ्रष्ट मानसिकता पर ठहाका लगा रही जनता

अखंड भारत संदेश

डिवाइडर में पेड़ की डाल खोंसकर सरकारी रकम लूट लिए जाने का मामला, छोटे डिवाइडर में बड़े पेड़ लगाए जाने की योजना बनेगी आम जनता की मौत का कारण

डिवाइडर में लगे सूखे पौधों की सिचाई करता नगरपालिका का टैंकर चालक

कौशाम्बी। सरकारी कार्यालयों में विकास कराए जाने के नाम पर बनाई जाने वाली कार्य योजना आम जनता के हित में कितनी खरी उतरेगी इस बात को नजरअंदाज कर कार्यालयों के जिम्मेदारों द्वारा सरकारी कार्यालयों में केवल कमीशन खोरी और अपनी तिजोरी भरने के लिए योजनाएं बनाई जाती है जिम्मेदार अधिकारी कमीशन खोर भ्रष्ट नाकारा अधिकारियों के काले कारनामों पर चुप्पी साध कर बैठे रहते हैं योगी सरकार के नुमाइंदों ने भी भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों का गुणगान करना शुरू कर दिया है योगी सरकार में भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा विकास कार्यों के नाम पर जिस तरीके से जिले में सरकारी खजाना लूटा जा रहा है उसकी कल्पना करना कठिन है इतना ही नहीं अपनी तिजोरी भरने में लगे अधिकारियों की मानसिकता पर जनता ठहाका लगा रही है। बीते दिनों मंझनपुर क्षेत्र में डिवाइडर में पेड़ लगाए जाने की योजना बनाकर पेड़ की डाल खोस कर खजाने की रकम अधिकारियों ने निकाल ली पेड़ की डाल खोसने के बाद वह सूखने लगी इस मामले में समाचार पत्रों में खबर प्रकाशित कर आला अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराया गया जिस पर सूखे पेड़ों को पानी देकर भ्रष्ट अधिकारियों ने सरकारी खजाना लूटने की फिर एक नई चाल चली है और अपने मकसद में यह अधिकारी सफल भी होते दिख रहे हैं अब सवाल उठता है कि डेढ़ फीट चौड़े डिवाइडर में कनेर के फूल जैसे विशाल पौधे की डाल लगाई गई है इस पेड़ की डाल आठ दस फिट से अधिक चौड़ाई में फैलती है यदि कनेर का पेड़ डिवाइडर पर तैयार हो गया तो सड़क पर निकलने वाले वाहनों के मौत का कारण डिवाइडर के पेड़ बनेंगे लेकिन इन अधिकारियों को तो केवल कमीशन खोरी से मतलब है जिले में जनता की मौत होती रहे इन भ्रष्ट अधिकारियों से कोई वास्ता नहीं है जनता को मौत के मुंह में धकेल कर विकास की योजना बनाकर सरकारी खजाना लूटने वाले अधिकारियों के डिवाइडर में पेड़ लगाए जाने की योजना की जांच कराई गई तो सरकारी खजाना लूटने वाले अधिकारियों पर शासन का चाबुक चलना तय है।

सम्पादकीय

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियां हो रही गंभीर, नहीं निकला हल तो जानें कैसे बढ़ता जाएगा खतरा

अमेरिका की अपनी तरह की पहली नैशनल इंटेलिजेंस इस्टीमेट रिपोर्ट में भारत को पाकिस्तान और अफगानिस्तान समेत उन 11 देशों में शामिल किया गया है, जो जलवायु परिवर्तन के लिहाज से चिंताजनक श्रेणी में माने गए हैं। अमेरिका की अपनी तरह की पहली नैशनल इंटेलिजेंस इस्टीमेट रिपोर्ट में भारत को पाकिस्तान और अफगानिस्तान समेत उन 11 देशों में शामिल किया गया है, जो जलवायु परिवर्तन के लिहाज से चिंताजनक श्रेणी में माने गए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, ये ऐसे देश हैं, जो जलवायु परिवर्तन के कारण सामने आने वाली पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों से निपटने की क्षमता के लिहाज से खासे कमजोर हैं। संयोग कहिए कि यह रिपोर्ट ऐसे समय आई है, जब उत्तराखंड में लगातार बारिश के चलते बाढ़ और भूस्खलन के रूप में आई त्रासदी ने पूरे देश को सकते में डाल रखा है। जाहिर है, हमें इन चुनौतियों के मद्देनजर अपनी तैयारियों पर ज्यादा ध्यान देना होगा। वैश्विक संदर्भ में देखें तो रिपोर्ट की टाइमिंग इस लिहाज से महत्वपूर्ण है कि इसी महीने के आखिर में ग्लासगो में कॉप 26 क्लाइमेट चेंज कॉन्फ्रेंस शुरू होने वाली है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि आने वाले समय में ग्लोबल टेंपरेचर की दशा तय करने में चीन और भारत की अहम भूमिका रहने वाली है। आखिर चीन दुनिया का सबसे बड़ा उत्सर्जक देश है। भारत भले चौथे नंबर पर है, लेकिन चीन के साथ जुड़ इसलिए जाता है क्योंकि इन दोनों ही देशों में उत्सर्जन की मात्रा साल-दर-साल बढ़ रही है। दूसरे और तीसरे स्थान पर मौजूद अमेरिका और यूरोपियन यूनियन (इ्यू) अपना उत्सर्जन कम करते जा रहे हैं। हालांकि यह भी कोई छुपा तथ्य नहीं है कि भारत जैसे देशों के लिए उत्सर्जन कम करना आसान नहीं है। इसके लिए जिम्मेदार सबसे बड़ा कारक कोयले का बहुतायत में इस्तेमाल है, जिसे रातोरात कम करना संभव नहीं। एक तो इसके सारे विकल्प अपेक्षाकृत महंगे पड़ते हैं और दूसरी बात यह कि आज भी यह सेक्टर बड़े पैमाने पर लोगों को रोजगार दिए हुए है। ऐसे में कोई भी बदलाव धीरे-धीरे ही किया जा सकता है। इसके अलावा इन बदलावों के आर्थिक पहलू की भी अनदेखी नहीं की जा सकती।

रिपोर्ट में ठीक अनुमान लगाया गया है कि इन बदलावों का खर्च उठाने के सवाल पर विकासशील और विकसित देशों के बीच कूटनीतिक रस्साकशी जारी रहने वाली है। खासकर इसलिए भी कि विकसित देश पेरिस समझौते के अनुरूप 2020 से सालाना 100 अरब डॉलर जुटाने में नाकाम रहे हैं, जिससे विकासशील देशों के लिए एनडीसी (नैशनली डिटरमिन्ड कन्ट्रीब्यूशन) गोल यानी उत्सर्जन कम करने से जुड़ी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता पूरी करना मुश्किल हो रहा है। बहरहाल, विभिन्न देशों की जिम्मेदारियां तय करते हुए भी इस बात का ख्याल रखना जरूरी है कि पर्यावरण संबंधी चुनौतियां अब इस कदर गंभीर रूप ले चुकी हैं कि इन्हें पूरी तरह राष्ट्रीय नजरिये से देखना अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है। इसके प्रभाव विश्वव्यापी हैं और दोष चाहे किसी भी देश के सिर पर डाला जाए इसका नुकसान पूरी दुनिया को भुगतना पड़ेगा। इसलिए रस्साकशी में उलझने के बजाय सबका जोर आम राय से रास्ता निकालने पर ही होना चाहिए।

गणित की वह शाखा कौन सी है जो त्रिभुजों के कोणों से जुड़े संबंधों का अध्ययन करती है

अमित शाह के जम्मू-कश्मीर दौरे ने विकास और सुरक्षा के प्रति देश को किया आश्वस्त

ललित गर्ग

जम्मू-कश्मीर राज्य में पाकिस्तान की आतंकवादी गतिविधियां बेअसर होती रही हैं। अब उसने नयी रणनीति उन गैर कश्मीरियों को निशाना बनाने की बनाई जो इस राज्य के विकास और इसकी अर्थव्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे थे। केन्द्रीय गृहमन्त्री अमित शाह ने एक बार फिर जटिल एवं अशांत होते जम्मू-कश्मीर राज्य के हालातों के बीच तीन दिवसीय दौरा करके अशांति पैदा करने वालों को न केवल चेताया है, बल्कि वहां के हिन्दुओं एवं सिखों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आश्वासन भी दिया है। उनकी यह कश्मीर यात्रा इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि वे स्वयं अनुच्छेद 370 को हटाने के रचनाकार एवं साहसिक निणर्य लेने वाले मुख्य स्तंभ है, उन्होंने ही 5 अगस्त, 2019 को संसद के दोनों सदनों में घोषणा की थी कि भारतीय संविधान में कश्मीर पर लागू किये गये अनुच्छेद 370 को अन्तहीन समय तक लागू नहीं रखा जा सकता क्योंकि यह 'अस्थायी' प्रावधान था। कश्मीर पहुंचकर उन्होंने हुंकार भरते हुए जहां शांति में खलल पैदा करने वालों को ललकारा है, वहीं विकास योजनाओं के साथ सुरक्षा व्यवस्था की भी समीक्षा की है, निश्चित ही हाल की खौफनाक आतंकी घटनाओं और उसके बाद प्रवासी मजदूरों के पलायन के सिलसिले को देखते हुए उनकी इस यात्रा से अनेक सकारात्मक संदेश जाने वाले है। यह यात्रा एक नये अध्याय की शुरुआत भी है। शाह की यह यात्रा लोकतांत्रिक मूल्यों को भी सशक्त बनाने का माध्यम है। यह सही समय पर सही दिशा में कश्मीर में शांति, विकास एवं सुरक्षा को नये आयाम देने का सराहनीय उपक्रम है। लोकतंत्र एक पवित्र प्रणाली है। पवित्रता ही इसकी ताकत है। इसे पवित्रता से चलाने के लिये आम कश्मीरियों का इसमें विश्वास, जागरूक एवं सक्रिय होना जरूरी है, इसी विश्वास को बल देना इस यात्रा का उद्देश्य है। आतंकवादी एवं अलगाववादी लोगों की अपवित्रता से यह कमजोर हो जाती है। ठीक इसी प्रकार अपराध के पैर कमजोर होते हैं। पर अच्छे आदमी की चुप्पी उसके पैर बन जाती है। आतंकवाद एवं अलगाववाद अंधेरे में दौड़ते हैं। रोशनी में लड़खड़ाकर गिर जाते हैं। आम कश्मीरियों को रोशनी बनना होगा और रोशनी आतंक एवं अराष्ट्रीयता से प्राप्त नहीं होती।

शाह भारतीय राजनीति के ऐसे कद्दावर एवं साहसिक निणर्य लेने वाले, देश की एकता को मजबूती देने वाले नेता हैं, जिन्होंने अपनी रणनीति से हिंसक, आतंकवादी एवं अराष्ट्रीय शक्तियों को उनकी जमीन दिखाई है, बल्कि यह भी जताया है कि शांति एवं राष्ट्रीय एकता की बाधक शक्तियों से कैसे निपटा जाता है। सख्त एवं कठोर निणर्यों से इन शक्तियों को सुधरने का अवसर भी दिया है। शाह के प्रयासों का ही परिणाम है कि पिछले सात वर्षों एवं अनुच्छेद 370 को हटाने के बाद कश्मीर में लगभग शांति बनी रही। अब पाकिस्तान कश्मीर को पुनः अशांत करने में जुटा है, ऐसे समय में शाह का कश्मीर दौरा करना और पाकिस्तान और उसकी आतंकवादी शक्तियों को यह संदेश देना है कि कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है, जम्मू-कश्मीर में हर भारतवासी पूरी तरह सुरक्षित रहेगा चाहे हिन्दु हो या सिख, बिहारी हो या पंजाबी अथवा बंगाली। जम्मू-कश्मीर राज्य में पाकिस्तान की आतंकवादी गतिविधियां बेअसर होती रही हैं। अब उसने नयी रणनीति उन गैर कश्मीरियों को निशाना बनाने की बनाई जो इस राज्य के विकास और इसकी अर्थव्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे थे। कश्मीर में विकास की जो गंगा प्रवाहमान हुई है, वह अनवरत गतिमान रहेगी। सच्चाई है कि पिछले दो साल में इस राज्य में नागरिकों के विकास की कई केन्द्रीय परियोजनाएं चालू की गई हैं और उनके अच्छे परिणाम भी आने शुरू हुए हैं। पर्यटन गतिविधियां तेज हो रही हैं और भारत के विभिन्न राज्यों से इस

खूबसूरत राज्य की सैर करने लोग भारी तादाद में आने लगे हैं। कश्मीरी जिस गर्मजोशी के साथ अपने भारतीय नागरिकों का स्वागत करते हैं और उनकी मेजबानी करते हुए अपनी सहृदयता, आत्मीयता और ईमानदारी की छाप छोड़ते हैं उससे पूरे भारत में जम्मू-कश्मीर की छवि में चार चांद लग रहे हैं और दूसरे राज्यों के लोगों से कश्मीरियों की आत्मीयता एवं सौहार्द बढ़ रहा है। आम कश्मीरी जनता एक नया संतोष महसूस कर रही है। यह स्थिति कई दृष्टियों से अनूठी है, प्रेरक है। आजादी के अमृत महोत्सव को मनाते हुए सम्पूर्ण राष्ट्र कश्मीर के साथ अंतरंगता एवं एकात्मता महसूस करने लगा है, इन सुखद स्थितियों को खंडित करने की पाकिस्तान की नयी रणनीति को असफल बनाने में भारतीय सेना के जवान अनूठे उपक्रम करते हुए आतंकियों को चुन-चुन कर मारने का जो अभियान पिछले दस दिनों से चला रही है उससे राष्ट्रविरोधी तत्वों के हौसले पस्त होने जाहिर हैं। शाह ने इसके लिये न केवल सेना के अधिकारियों एवं जवानों को अधिक सतर्कता एवं सावधानी से अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिये जागरूक किया बल्कि इसमें किसी भी तरह की लापरवाही न बरतने के लिये भी चेताया है। शाह ने सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा का काम न केवल समग्रता से किया है बल्कि सुरक्षा व्यवस्था को अधिक दुरुस्त एवं चौकस बनाने का निर्देश दिया है। उन्होंने सुरक्षा की गंभीर समीक्षा करते हुए उन कारणों को पहचान कर उनका निवारण किये जाने की आवश्यकता व्यक्त की, जिनके कारण आतंकियों और उनके समर्थकों ने फिर से सिर उठाने का दुस्साहस किया। कश्मीर में जितनी जरूरत आतंकियों पर दबाव बनाने और उन्हें बचकर निकलने के अवसर न देने की है, उतनी ही उनके समर्थकों पर शिकंजा कसने की है। आतंकियों के समर्थक केवल वे ही नहीं हैं, जो उन्हें शरण, सहायता एवं संरक्षण देते हैं, बल्कि वे भी हैं जो उनके पक्ष में माहौल बनाते हैं, जिनमें राजनेता, नौकरशाह एवं सरकारी कर्मचारी भी हैं। जो घर का भेदी लंका ढाहवे वाली स्थिति वाले होते हैं, इन खतरनाक एवं राष्ट्र-विरोधी तत्वों से कैसे निपटा जाये, यही इस सुरक्षा समीक्षा का मुख्य हार्द है, गहनता एवं समग्रता है। शाह की यह तीन दिन की यात्रा न केवल कश्मीर के लोगों को सुरक्षा की दृष्टि से आश्वस्त करने का सक्षम वातावरण निर्मित करेगी बल्कि कश्मीर में राष्ट्रीयता को भी मजबूत बनायेगी। इसके लिये शाह को सबसे पहले यही श्रेय जाता है कि उन्होंने जम्मू-कश्मीर पर पूरी तरीके से संविधान लागू करके इसे भारत में समावेशी रूप में अन्तरंगता प्रदान की। क्योंकि आम कश्मीरी प्रारम्भ से ही भारतीयता के रंग में रंगा रहा है और उसने पाकिस्तान की मजहबी संकीर्ण मानसिकता एवं स्थानीय स्वार्थी राजनेताओं को कभी तवज्जो नहीं दी। यह भी ऐतिहासिक सच है कि 1947 में जब भारत को बांट कर पाकिस्तान बनाया जा रहा था तो कश्मीर की आम जनता इसके खिलाफ थी। इसकी खास वजह यही थी कि कश्मीरी संस्कृति किसी भी जेहादी या कट्टरपंथी विचारधारा का विरोध करती रही है। यही कारण है कि शाह के 370 समाप्त करने के फैसले का राज्य की जनता ने विरोध नहीं किया। भले आतंकवादी एवं अलगाववादी मानसिकता से जुड़े तथाकथित राजनेताओं को यह निणर्य खटका।

शाह ने अपनी इस यात्रा में कश्मीर की जनता के दिलों में शांति, अमन एवं विकास की राष्ट्रीय धारा को बलशाली बनाया है। अपनी यात्रा के पहले दिन ही उन्होंने जम्मू-कश्मीर पुलिस के शहीद इंस्पैक्टर परवेज अहमद डार के निवास पर जाकर विनम्रता एवं आत्मीयता से पीड़ित परिवार के लोगों से भेंट की और शहीद की पतनी को सरकारी नौकरी दी। यह संकेत इस बात का है कि राष्ट्र के अस्तित्व एवं अस्मिता की सुरक्षा पर जान लुटाने वाले हर कश्मीरी का ध्यान सरकार रखेगी। इसके साथ ही उन्होंने श्रीनगर से शारजाह की हवाई यात्रा खोलने का भी ऐलान किया जिससे पूरी दुनिया को लगे कि कश्मीर नये माहौल, राष्ट्र की मूल धारा में पूरी तरह ढल चुका है और इसके लोग सामान्य भारतीयों की तरह ही मुल्क द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं का फायदा उठा रहे हैं। कश्मीरियों में इस विश्वास एवं आशा के प्रस्फुटित एवं पल्लवित होते अंकुर बताते हैं कि पाकिस्तान कभी भी अपने नापाक इरादों में कामयाब नहीं हो सकता क्योंकि हर कश्मीरी भारत का अभिन्न अंग है, हिस्सा है, भारतीयता ही उसकी आत्मा है, संस्कृति है। शाह की यात्रा पाकिस्तान को कड़ी चेतावनी देने का एक प्रभावी उपक्रम है कि वह हिन्दू-मुसलमान या मजहब को आगे लाकर कश्मीरियों के उस विश्वास को नहीं डिगा सकता जो उनका भारत में है।

इतनी मुश्किलें क्यों हैं शादी और तलाक में जानें कैसे कोरोना महामारी की मजबूरियों ने दिखाई अदालतों को राह

रेणुका बिष्ट

इस साल दिल्ली और केरल हाईकोर्टों ने मैरिज रजिस्ट्रेशन चाहने वालों को विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए हाजिरी की अनुमति दी है। दूसरी ओर बांद्रा की फैमिली कोर्ट ने दुबई में फंसी पतनी और बाली में रहने वाले पति को उनकी आपसी सहमति से तलाक लेने की इजाजत दे दी। सशरीर मौजूदगी पर जोर देने के बजाय इन बेंचों ने कपल्स के लिए अपनी अलग-अलग मर्जी पूरी करने का रास्ता आसान कर दिया। इस तरह देखा जाए तो भले ही महामारी ने शादी पर प्रशासनिक ठप्पा लगवाने वालों या तलाक के लिए अदालत के चक्कर काट रहे लोगों की मुश्किलें बढ़ाई हैं, पर इन्हीं मुश्किलों की बदौलत ऐसे उपायों को बढ़ावा मिला है जो पूरी तरह लागू हो जाएं तो भारत में शादी और तलाक लेने की प्रक्रिया में आसानी से सुधार हो सकता है।

तारीख पर तारीख : तलाक चाहने वाले जोड़ों के रास्ते से हटना, जाहिर तौर पर अदालतों के भी हित में है। निचली अदालतों में लंबित मुकदमों की संख्या पहली बार 4 करोड़ को पार कर गई है। यहां तक कि पारिवारिक अदालतें भी, जो कि 1984 में कानून बनने के बाद अस्तित्व में आई थीं और जिनका मकसद वैवाहिक मामलों के आसान और सस्ते समाधान को संभव बनाना था, अब 'तारीख पर तारीख' के उसी जाल में फंस गई हैं, जिसका वे हल निकालने वाली थीं।

कोरोना का साया, सुप्रीम कोर्ट में विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए सुनवाई

सिस्टम से जुड़े जिन विलंबों के सूत्र वयस्क नागरिकों को बच्चा मानने वाली मानसिकता में मिलते हैं, उनका समाधान नागरिकों की पसंद का सम्मान सुनिश्चित करने वाली सोच में तलाशा जा सकता है। जजों को 'विवाह संस्था की रक्षा करने और संरक्षित रखने' की जिम्मेदारी देने वाले फैमिली कोर्ट एक्ट जैसे प्रावधान और अदालतों को वैवाहिक अधिकार बहाल करने की ताकत देने वाले स्पेशल मैरिज एक्ट असल में केस मैनेजमेंट के पीछे आम तौर पर काम करने वाले माइंडसेट का परिचय देते हैं। हालांकि इस तरह की नैतिकता बहस का विषय है, लेकिन इससे उपजी प्रक्रियागत जटिलता को लेकर कोई बहस नहीं है। दिल्ली हाईकोर्ट ने मैरिज रजिस्ट्रेशन के एक मामले में एक पक्ष को विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए हाजिरी दर्ज करने की इजाजत 2007 में ही दे दी थी, लेकिन इस तरह के उदाहरण दुर्लभ हैं। 2017 में सुप्रीम कोर्ट की एक बेंच ने चिंता जताई कि क्या विडियो कॉन्फ्रेंसिंग 'दोनों पक्षों को सुलह के लिए राजी करने' के अदालत के कर्तव्यपालन में रुकावट बन रही है। यह वास्तव में अदालतों के विवाह संबंधी कार्यों के विवरण को अपडेट करने और प्रौद्योगिकी से जुड़ी कमियों को दूर करने का समय है। अगर पैतृक हस्तक्षेप आपसी सहमति वाले तलाक को भी मुश्किल बनाने लग जाएं तो विवाद वाले मामले तो यातना में बदल जाएंगे। हालांकि यहां भी सुधार बहुत सीधा है। उदाहरण के लिए, 'न चल पाने वाले विवाह' को कानूनी समर्थन दें, जैसा कि 1978 में और फिर 2009 में विधि आयोग ने अनुशंसित किया था। 2013 में राज्यसभा ने भी एक संशोधन विधेयक पारित करके इसकी कोशिश की थी। एक मामले में सुप्रीम कोर्ट ने 22 साल से अलग रह रहे एक जोड़े को अलग करने के लिए अनुच्छेद 142 के तहत अपनी संवैधानिक शक्तियों का इस्तेमाल किया। सुप्रीम अदालत ने कहा, उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि 'शादी पूरी तरह से अव्यावहारिक, भावनात्मक रूप से मृत, बचाव से परे है और अपरिवर्तनीय रूप से टूट गई है। और, इसमें ऐसा कोई कानूनी आधार नहीं था, जिस पर तलाक दिया जा सकता था। विवाह पक्ष में सुधार पर, इस जनवरी में इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक फैसले ने यह कहते हुए गरिमा और गोपनीयता के मौलिक अधिकारों का वजन बढ़ा दिया कि स्पेशल मैरिज एक्ट 1954 के तहत तीस दिन का नोटिस जारी करने का नियम वैकल्पिक होगा और शादी करने वाले जोड़े चाहें तो यह नोटिस जारी करने के लिए विवाह अधिकारी से अनुरोध कर सकते हैं। इसने कहा कि पर्सनल लॉ के तहत बड़ी संख्या में होने वाले विवाहों की तुलना में स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत अपनाई जाने वाली तीस दिन की इस प्रक्रिया से कोई साफ और सही लक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ है। अदालत ने आदेश की एक कॉपी उत्तर प्रदेश के सभी विवाह अधिकारियों को 'तुरंत' भेजने का निर्देश दिया। व्यक्तिगत रूप से विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए हाजिर होने के विकल्प के साथ यह आदेश उन असुविधाओं में काफी कमी ला सकता है, जो स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत शादी करने वालों को अभी झेलनी पड़ती हैं।

सुप्रीम कोर्ट की अहम टिप्पणी, तीन तलाक में पति के रिश्तेदार नहीं जिम्मेदार, अग्रिम जमानत देने पर कोई रोक नहीं

तलाक के मामले में साल 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने माना था कि आपसी सहमति से तलाक वाले मामलों में भी छह महीने का जो 'कूलिंग ऑफ' पीरियड दिया जाता है, वह वक्फा अलग होने वालों का दर्द और बढ़ा देता है। फिर भी इस कूलिंग ऑफ पीरियड से छूट देने के मामले इतने कम हैं कि हेडलाइन बन जाते हैं।

व्यक्तिगत पसंद का मामला : वास्तव में तलाक की प्रक्रिया में तेजी लाने की राह में अड़चनें बहुत ज्यादा हैं। इसकी एक बड़ी वजह यह भी है कि केस में हर तारीख और हर स्थगन से वकीलों की मोटी फीस जुड़ी हुई है। ऊपर जिन बदलावों का जिक्र हुआ है, वे सही दिशा में हैं और बड़े सार्थक हैं। फिर भी इनके रफ्तार पकड़ने के लिए जरूरी है कि समाज में इस सोच को व्यापक मान्यता मिले कि शादी और तलाक व्यक्ति की अपनी पसंद से जुड़े मामले हैं। लोगों में यह भ्रम बना हुआ है कि तलाक आसान होने से विवाह संस्था कमजोर हो जाएगी। लेकिन शादी करने के इच्छुक जोड़ों को तरह-तरह से परेशान करने और तलाक लेने का फैसला कर चुके कपल्स की राह में भांति-भांति के रोड़े डालने से तो यह राय बनती है कि विवाह संस्था को बनाए रखने के लिए अंतहीन और कठोर नियंत्रण जरूरी है। ऐसी मनहूस राय की कोई जरूरत नहीं है।

यूपी चुनाव के लिए कमज़ोर है विपक्षी दल

रविश अहमद

चुनावी बिसात के साथ मैदान में लगभग उतर चुके राजनीतिक दलों के सामने भारतीय जनता पार्टी से टक्कर लेना खासा चुनौतीपूर्ण साबित हो रहा है। उत्तर प्रदेश चुनाव की डगर इतनी आसान नहीं जितनी विपक्षी राजनीतिक दल आस लगाकर बैठे हुए हैं यहां भाजपा से पार पाकर सत्ता में आना किसी भी दृष्टिकोण से आसान नहीं है। दरअसल भाजपा को सत्ता से अलग करना किसी भी राजनीतिक दल के बस में नहीं है। जहां एक ओर विपक्षी राजनीतिक दल किसानों की नाराज़गी का फायदा उठाने के लिए किसान आंदोलन का समर्थन करते हैं तो वहीं दूसरी ओर बढ़ती मंहगाई और रोज़गार जैसे मुद्दों पर सरकार से नाराज़ लोगों वोट अपने पक्ष में मिलना मानकर चल रहे हैं इसके अलावा सभी की नज़र भाजपा के खिलाफ पड़ने वाले करीब 22 प्रतिशत मुस्लिम वोटर पर टिकी हुई है और सभी की चाहत यही है कि यह मत प्रतिशत पूरा पूरा उनके खाते में आ जाए तो बाकी थोड़ा थोड़ा मत प्रतिशत मिलाकर भाजपा का गत चुनाव में हासिल किया गए कुल मत प्रतिशत का आंकड़ा पार कर लिया जाएगा। यह वो तमाम बिंदु हैं जिन्हें विपक्षी दल मानकर चल रहे हैं जबकि इसके विपरित यदि ग्राउंड ज़ीरो पर आंकलन किया जाए तो भाजपा अधिक सशक्त होती नज़र आ रही है।

सबसे ज़्यादा मज़बूती के साथ जनता के बीच अगर कोई कार्य करता दिख रहा है तो वह सिर्फ भारतीय जनता पार्टी है जिसमे बूथ लेवल कार्यकर्ता से भी नीचे के स्तर पर वोटर लिस्ट के पेज कार्यकर्ता तक मेहनत की जा रही है वहीं दूसरी ओर अगर सभी विपक्षी राजनीतिक दलों के विषय में एक एक लाइन में लिखा जाए तो समाजवादी पार्टी अपने पक्ष में बन रही लहर की आस में जंग के मैदान के किनारे बैठकर चुनाव के इंतज़ार में है, कांग्रेस पार्टी किसान आंदोलन को भुनाना चाहती है इसलिए किसानों के आकर्षण का केंद्र बनना चाहती है यह अलग बात है कि ज़मीन पर कांग्रेस की मेहनत सपा से थोड़ी ज़्यादा है। बहुजन समाज पार्टी केवल ट्वीट के माध्यम से चुनावी बिसात बिछाए हुए है जबकि क्षेत्र में उसके कार्यकर्ता हथियार डाले सिपाही से नज़र आ रहे हैं। राष्ट्रीय लोकदल जाट बाहुल्य क्षेत्रों के सहारे अपने समीकरण फिट मानकर चल रही है। आज़ाद समाज पार्टी तेज़ी से बढ़ती हुई दिखाई दे रही है लेकिन वास्तविकता केवल यही है कि वह सिर्फ बहुजन समाज पार्टी के वोट बांटने में सफल होती दिख रही है। बाकी बचे दलों का भी लगभग यही हाल है। इसलिए यह कहने में कोई परेशानी नहीं है कि भाजपा को हरा पाना सभी विपक्षी दलों के लिए एकजुट होकर मेहनत किए बिना दूर की कौड़ी साबित होना तय है। कुल मिलाकर आने वाले चुनाव तक क्या समीकरण बने और जनता का रुझान किस ओर पलट जाए या फिर बरकरार रहे यह भविष्य के गर्भ में छिपा है लेकिन अभी तक कार्यकर्ताओं की मजबूती के मामले में कोई भी विपक्षी राजनीतिक दल भाजपा से टक्कर लेता नज़र नहीं आ रहा।

महिलाओं को 40 प्रतिशत टिकट देने की घोषणा एक सकारात्मक पहल

अंशुल त्रिवेदी

हाल में कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी की उत्तर प्रदेश के आगामी विधानसभा चुनाव में 40 प्रतिशत टिकट महिलाओं को देने की घोषणा से देश की राजनीति में खलबली मच गई। जहां एक तरफ़ समतावादी राजनीति के समर्थकों ने इस फैसले का स्वागत किया वहीं दूसरी तरफ़ विपक्ष की कुछ आवाज़ों ने इस फैसले को ङ्घस्टंटङ्घ मात्र ठहरा दिया। उनका तर्क है की कांग्रेस ने केवल एक ही राज्य में यह घोषणा क्यों की इस फैसले के विरोधी राजनीति में प्रतीकात्मकता की अहमियत को कम आंक रहे हैं। यदि कांग्रेस अन्य राज्यों में यह प्रयोग ना भी कर पाए तब भी इस फ़ैसले का महत्व कम नहीं होता। सामाजिक बदलाव रातोरात होने वाली चीज़ नहीं है बल्कि यह एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। इसलिए इस फ़ैसले को एक सकारात्मक शुरुआत के रूप में देखना चाहिए। इस फ़ैसले ने महिलाओं के सवाल को भारत की पुरुषप्रधान राजनीति में कुछ देर के लिए ही सही लेकिन केंद्र में लाकर खड़ा कर दिया। वर्तमान राजनीतिक विमर्श में महिलाओं के मुद्दे मात्र उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने तक सीमित रह गए हैं। महिलाओं का मुद्दा कानून - व्यवस्था दुरुस्त करने का मुद्दा बनकर रह गया है। आलम यह है की दक्षिणपंथी ताकतें महिलाओं पर हो रही हिंसा के लिए कभी चाउमीन तो कभी मोबाइल फोन को दोषी ठहराते हैं। वह इसे सामाजिक संरचना में निहित पुरुषप्रधानता का नतीजा मानने से इंकार कर देते हैं।

नतीजतन हमारे देश की आधी आबादी जिसे हर नेता अपने भाषण में तालियों के लिए देवी का रूप बतलाता है, कैसे रोज़मर्रा का जीवन जीती है और किन चुनौतियों का सामना करती है उससे समाज अभी तक अनभिज्ञ है। यौन हिंसा के अलावा महिलाएं हर क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करती हैं, चाहे वह शिक्षा हो या ऑफिस या घर में कर रहीं श्रम को अनदेखा किया जाना हो या फिर अपने काम का पूरा दाम ना पाना हो, हर कदम पर उन्हें भेदभाव और अन्याय का सामना करना पड़ता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि जिस दिन महिलाएं अपने श्रम का हिसाब मांग लेंगी उस दिन मानव इतिहास की सबसे बड़ी चोरी पकड़ी जाएगी। प्रियंका गांधी का फैसला महिलाओं के प्रति इस समग्र दृष्टिकोण से जन्मा है। ऐसा नहीं है कि इससे पहले किसी राजनीतिक दल या नेता ने महिलाओं के लिए कोई कदम नहीं उठाए। लेकिन यह पहल केवल सरकारी योजनाओं तक सीमित थी। चाहे वह कन्यादान योजना हो, शराब बंदी हो या लड़कियों को मुफ़्त साइकिल वितरण की योजना हो, यह सब प्रशंसा योग्य कदम थे लेकिन यह महिलाओं को ङ्घलाभार्थीङ्घ की भूमिका में कैद कर देती है। प्रियंका गांधी का फैसला सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित कर उन्हें ङ्घशासकङ्घ बनाने का प्रयास है, चूंकि वे भली भांति जानती हैं कि सामाजिक बदलाव की चाबी राजनीतिक सत्ता ही है। महिलाओं को लाभार्थी बनाने की सोच की वजह से ही महिला आरक्षण बिल इतने समय से ठंडे बस्ते में पड़ा है। आश्वर्य की बात यह है की शोषित तबकों की राजनीति करने वाले दल भी इस बिल के खिलाफ़ हैं। जबकि राममनोहर लोहिया जी ने अपनी सप्तक्रांति की परिकल्पना में पुरुष-स्त्री असमानता के मुद्दे को प्राथमिकता दी थी। उनका मानना था कि पुरुष और स्त्री के बीच का भेद हमारे समाज में इस कदर जड़ें फैलाया हुआ है कि भविष्य में सारी जाति-जनजातियों का आरक्षण कभी खत्म हो भी जाए तब भी महिलाओं को अवसर में और भागीदारी में तरजीह देते रहना होगा। क्या यह आरक्षण किसी खास जाति या वर्ग तक सीमित रह जाएगा, यह बाद का मुद्दा है। सर्वप्रथम हमें यह स्वीकारने की ज़रूरत है कि महिलाओं की एक स्वतंत्र पहचान है। जितना महिलाएं राजनीतिक प्रक्रिया का हिस्सा बनेंगी उतना ही हमारा जनतंत्र पोषित होगा। हिंसा और गुंडाराज कम होगा और फलस्वरूप हमारी बेटियों और साथियों का जीवन सुरक्षित और समृद्ध होगा।

जादरान का पचासा और मुजीब का 'पंजा', अफगानिस्तान ने स्कॉटलैंड को 130 रनों से पीटा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अनुभवी नजीबुल्लाह जादरान के अर्धशतक और मुजीब उर रहमान (20 रन पर 5 विकेट) की घातक गेंदबाजी के दम पर अफगानिस्तान ने आईसीसी टी20 विश्व कप 2021 के सुपर 12 के ग्रुप-2 मैच में सोमवार को स्कॉटलैंड को 130 रनों से हराकर टूर्नामेंट में धमाकेदार अंदाज में अपने अभियान की शुरुआत की। अफगानिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए चार विकेट पर 190 रन का विशाल स्कोर बनाया और फिर स्कॉटलैंड को 10.2 ओवर में 60 रनों पर ढेर कर दिया। स्कॉटलैंड की ओर से जॉर्ज मुंसे ने सबसे ज्यादा 250 रन बनाए। उनके अलावा क्रिस ग्रीव्स ने 12 और कप्तान काइल जाएटजर ने 10 रन बनाए। अफगानिस्तान की ओर से मुजीब के पांच विकेटों के अलावा राशिद खान ने 4 और नवीन उल हक ने एक विकेट चटकाए। अफगानिस्तान की टी20 में रनों के लिहाज से यह अबतक की सबसे बड़ी जीत है। टीम ने इससे पहले 2013 में केन्या को इसी मैदान पर 106 रनों से हराया था। वहीं, टी20 विश्व कप में रनों के मामले में किसी भी टीम की यह

तीसरी सबसे बड़ी जीत है। इसके अलावा टी20 विश्व कप में किसी भी टीम का यह पांचवां न्यूनतम स्कोर है।

इससे पहले, अनुभवी नजीबुल्लाह जादरान के अर्धशतक और टॉप ऑर्डर के अन्य बल्लेबाजों की शानदार बल्लेबाजी के दम पर अफगानिस्तान ने चार विकेट पर 190 रन का मजबूत स्कोर बनाया। जादरान ने पारी की आखिरी गेंद पर आउट होने से पहले 34 गेंदों पर 59 रन बनाए, जिसमें पांच चौके और तीन छक्के शामिल हैं। उन्होंने रहमनुल्लाह गुरबाज (37 गेंदों पर 42 रन, एक चौका, चार छक्के) के साथ तीसरे विकेट के लिए 87 रन जोड़े। इससे पहले सलामी बल्लेबाज हजरातुल्लाह जजई ने 30 गेंदों पर तीन चौकों और इतने ही छक्कों की मदद से 44 रन की धमाकेदार पारी खेली। स्कॉटलैंड की तरफ से साफयान शरीफ ने 33 रन देकर दो विकेट लिए।

पिछले विश्व कप के बाद पहले बल्लेबाजी करते हुए 82.61 प्रतिशत मैच जीतने वाले अफगानिस्तान की शुरुआत अच्छी रही। जजई और मोहम्मद शहजाद (15 गेंदों पर 22 रन) ने पहले विकेट के लिए 54 रन जोड़कर पावरप्ले के ओवरों का पूरा फायदा उठाया। जजई ने इस बीच माइकल लीस्क और ब्रैडली व्हील पर छक्के भी जमाये। शहजाद का लीस्क पर लगाया गया छक्का 79 मीटर दूर गया था, लेकिन शरीफ पर वह सही टाइमिंग से शॉट नहीं लगा पाए और डीप मिडविकेट पर आसान कैच दे बैठे। जजई भी अर्धशतक पूरा नहीं कर पाये और बायें हाथ के स्पिनर मार्क वॉट (23 रन देकर एक) की गेंद उनके बल्ले का अंदरूनी किनारा लेकर विकेटों में समा गई।सलामी बल्लेबाजों के पवेलियन लौटने के बाद अनुभवी जादरान और गुरबाज ने बखूबी जिम्मा संभाला। गुरबाज ने क्रिस ग्रीव्स, जोश डेवी से लेकर ब्रैड व्हील तक सभी की गेंद छह रन के लिये भेजी जबकि जादरान ने जब तब गेंद को सीमा रेखा तक पहुंचाया और फिर शरीफ की गेंद पर अपनी पारी का पहला छक्का लगाया और फिर वॉट का गेंदबाजी विश्लेषण बिगाड़ा। गुरबाज ने हालांकि डेवी की फुलटॉस को एक्स्ट्रा कवर पर उछाल दिया जिससे वह अर्धशतक से चूक गये। जादरान ने 30 गेंदों पर अपना अर्धशतक पूरा किया और फिर शरीफ की गेंद पर मिडविकेट पर कैच दिया। कप्तान मोहम्मद नबी 11 रन बनाकर नाबाद रहे।

आईपीएल 2022 में लखनऊ और अहमदाबाद नई टीमें, आरपीएसजी ग्रुप और सीवीसी कैपिटल होंगे मालिक

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की दो नई टीम का ऐलान कर दिया है। आरपीएसजी ग्रुप ने 7000 करोड़ रुपये से ज्यादा की बोली लगाकर लखनऊ फ्रैंचाइजी हासिल की, जबकि सीवीसी कैपिटल ने 5,200 करोड़ रुपये की बोली लगाकर अहमदाबाद फ्रैंचाइजी की। संजीव गोयनका की मालिकाना हक वाली आरपीएसजी ग्रुप ने 7000 करोड़ रुपये से ज्यादा की बोली लगाकर लखनऊ फ्रैंचाइजी हासिल की।

आईपीएल 2022 सीजन के लिए दो नई टीमों के लिए दुबई के ताज दुबई होटल में संपन्न हुई बोली में दस पार्टियां उपस्थित रहीं। गोयनका दो साल के लिए पुणे फ्रैंचाइजी राइजिंग पुणे सुपरजायंट्स (आरपीएस) के मालिक रहे हैं।आईपीएल में नई टीमों की बोली लगाने में अहमदाबाद और लखनऊ का दावा मजबूत नजर आ रहा था और ऐसा ही हुआ।

ऐसा माना जा रहा है कि महेंद्र सिंह धोनी के प्रबंधक अरुण पांडे द्वारा प्रवर्तित रीति स्पोर्ट्स ने कटक के लिए बोली लगाई है, हालांकि यह पता चला है कि वह कार्यक्रम स्थल पर थोड़ी देर से पहुंचे और देर से निविदा प्रस्तुत करने के कारण उनकी बोली को अंततः स्वीकार नहीं किया गया। नई टीम खरीदने में मैनचेस्टर यूनाइटेड क्लब के दिलचस्पी दिखाने की वजह से बीसीसीआई ने टेंडर की डेट को आगे बढ़ाया था। ऐसा माना जा रहा था कि नीलामी प्रक्रिया शुरू होने के बाद से ही प्रत्येक फ्रेंचाइजी से 7000 करोड़ रुपए से 10,000 करोड़ रुपए तक मिलने की उम्मीद है। 22 कंपनियों ने 10 लाख रुपए के निविदा (टेंडर) दस्तावेज लिए थे। नई टीमों के लिए आधार मूल्य 2000 करोड़ रुपए रखा गया था।

भारत की हार के बाद टीम इंडिया के मेंटॉर महेंद्र सिंह धोनी ने ली पाक क्रिकेटरों की क्लास

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप के लिए टीम इंडिया के मेंटॉर की भूमिका निभा रहे महेंद्र सिंह धोनी भारत ने पाकिस्तान मैच के दौरान शुरू से ही छाए रहे। मैच खत्म होने के

बाद धोनी की पाकिस्तानी क्रिकेटरों के साथ फोटो खूब वायरल हो रही है।

धोनी के सामने चार पाकिस्तान खिलाड़ी (कप्तान बाबर आजम, इमाद वसीम, शोएब मलिक और युवा तेज गेंदबाज शहनवाज दहानी) खड़े नजर आए। आईपीएल मैचों के दौरान भी ऐसा सीन कई बार देखने को मिला है, जब मैच के बाद धोनी युवा क्रिकेटरों से अपना अनुभव शेयर करते हैं। धोनी मैच से पहले टीम इंडिया के साथ मैदान पर नजर आए थे। धोनी की लोकप्रियता पाकिस्तान में भी काफी है। धोनी की ही कप्तानी में टीम इंडिया ने 2007 टी20 वर्ल्ड कप खिताब अपने नाम किया था और फाइनल मैच में पाकिस्तान को पटखनी दी थी। भारत और पाकिस्तान के बीच 24 अक्टूबर को खेले गए मैच में पहली बार भारत को वर्ल्ड कप में पाकिस्तान के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। 1992 से लेकर 2019 के बीच भारत और पाकिस्तान की टीमें वनडे और टी20 वर्ल्ड कप मिलाकर कुल 12 मैच खेल चुकी थीं और सभी मैच भारत ने ही जीते थे। विराट कोहली का टी20 कप्तान के तौर पर यह आखिरी टूर्नामेंट है, इसके बाद वह वनडे और टेस्ट टीम के तो कप्तान बने रहेंगे, लेकिन टी20 टीम की कप्तानी छोड़ देंगे। मैच की बात करें तो भारत ने सात विकेट पर 151 रन बनाए और पाकिस्तान ने बिना विकेट गंवाए ही लक्ष्य हासिल कर लिया।

पाकिस्तान के खिलाफ हार के बाद ट्रोल हुए मोहम्मद शमी, सचिन तेंदुलकर से लेकर राहुल गांधी तक ने इंडियन पेसर को किया सपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी-20 विश्व कप 2021 में रविवार को भारत को पाकिस्तान के हाथों 10 विकेट से करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा। पाकिस्तान के खिलाफ मिली हार के बाद सोशल मीडिया पर अब भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी को निशाना बनाया जा रहा है। शमी के खिलाफ कई तरह के अपमानजनक कमेंट किए गए और उनको पाकिस्तानी तक बताया जा रहा है।

मैच में भारत के सभी गेंदबाज नाकाम रहे और वे एक भी विकेट नहीं चटका पाए। लेकिन कुछ लोगों ने मोहम्मद शमी के प्रदर्शन को लेकर उन्हें ट्रोल करना शुरू कर दिया है। शमी ने अबतक इस पर कोई जवाब नहीं दिया है, लेकिन मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर से लेकर राहुल गांधी तक ने शमी का समर्थन किया है। सचिन तेंदुलकर ने कहा है कि वे शमी के साथ खड़े हैं और भारतीय तेज गेंदबाज की प्रतिबद्धता पर सवाल नहीं उठाए जा सकते।सचिन तेंदुलकर ने ट्वीट करते हुए लिखा, 'जब हम टीम इंडिया को सपोर्ट करते हैं तो हर उस व्यक्ति को सपोर्ट करते हैं, जो टीम इंडिया का प्रतिनिधित्व करता है। मोहम्मद शमी प्रतिबद्ध खिलाड़ी हैं और वर्ल्ड क्लास बॉलर हैं। उनका एक दिन खराब गया और खेल में किसी भी खिलाड़ी के साथ ऐसा हो सकता है। मैं इतना कह सकता हूं कि मैं पूरी तरह शमी और टीम इंडिया के साथ खड़ा हूं।'राहुल गांधी ने कहा, 'मोहम्मद शमी हम सभी तुम्हारे साथ हैं। ये लोग नफरत से भरे हुए हैं क्योंकि इन्हें कोई प्यार नहीं देता, इन्हें माफ कर दें।' इससे पहले, टीम इंडिया के पूर्व ऑलराउंडर इरफान पठान ने शमी को सपोर्ट करते हुए उनके आलोचकों को कड़ी फटकार लगाई।

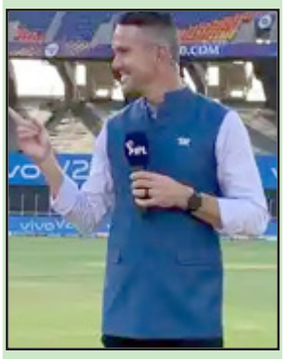

मेंटॉर धोनी से मिलकर खुश हुआ पाकिस्तानी तेज गेंदबाज दहानी, ट्वीट कर कही दिल छूने लेने वाली बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप में रविवार को भारत को पहली बार पाकिस्तान के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम पर खेले गए इस महामुकाबले में पाकिस्तान ने भारत का 10 विकेट से करारी मात दी। मैच के बाद पाकिस्तान के कई क्रिकेटर भारतीय खिलाड़ियों और मेंटार महेंद्र सिंह धोनी के साथ बातचीत करते नजर आए। सोशल मीडिया पर दोनों टीमों के खिलाड़ियों के काफी वायरल हो रहे हैं। पाकिस्तान के युवा तेज गेंदबाज शाहनवाज दहानी ने भी सोशल मीडिया पर धोनी के साथ एक तस्वीर पोस्ट की है, जिसमें वह धोनी के साथ खड़े हुए नजर आ रहे हैं। यह फोटो मैच के बाद की है। दहानी ने धोनी के साथ फोटो साझा करते हुए इसके कैप्शन में लिखा, 'क्या रात थी हमारे लिए। पाकिस्तान की जीत के लिए बहुत ख़ुशी है और मेरे सपनों के खिलाड़ी में से एक एमएस धोनी से मिलने का उत्साह को भी कभी भुलाया नहीं जा सकता।' दहानी अपने ड्रीम प्लेयर धोनी से मुलाकात कर बहुत एक्साइटेड नजर आ रहे थे। दहानी भारत के खिलाफ प्लेइंग इलेवन का हिस्सा नहीं थे, लेकिन वो प्रैक्टिस सेशन में टीम के साथ थे।दहानी इससे पहले, भारत-पाकिस्तान मुकाबले से पहले भी धोनी से मिले थे। लेकिन दहानी ने उस समय उनसे दूर से ही मुलाकात की थी। पाकिस्तान के एक पत्रकार ने ट्विटर पर एमएस धोनी और शाहनवाज धानी के बीच हुई इस स्पेशल मुलाक़ात का वीडियो डाला था। दहानी ने धोनी को देखने के प्रति अपना उत्साह दिखाया और उन्हें दूर से ही बुलाया। पाकिस्तानी पत्रकार के अनुसार दहानी ने धोनी से कहा कि, 'आप धोनी हैं मैं दहानी हूं। इंटरनेशनल क्रिकेट को अलविदा कह चुके धोनी इस टी20 वर्ल्ड कप में टीम इंडिया के मेंटॉर की भूमिका निभा रहे हैं। धोनी तैयारियों के दौरान टीम इंडिया के खिलाड़ियों के साथ काफी समय बिताते दिखे। भारत को टूर्नामेंट में अपना अगला मैच 31 अक्टूबर को न्यूजीलैंड के खिलाफ खेलना है।

भारत-पाकिस्तान के बीच ज्यादा मैचों के आयोजन को लेकर केविन पीटरसन ने दिया अहम सुझाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान ने टी-20 विश्व कप में पहली बार रविवार को भारत को हरा दिया। इस मुकाबले के बाद इंग्लैंड के पूर्व कप्तान केविन पीटरसन ने दोनों टीमों के बीच अधिक से अधिक टी-20 मैच खेलने की वकालत की है। पूर्व बल्लेबाज का मानना है कि दोनों टीमों के बीच साल में कम से

कम तीन टी-20 मैच होना चाहिए और ये मैच किसी तटस्थ स्थान पर खेला जाना चाहिए। पीटरसन ने ना केवल मैचों के आयोजन का सुझाव दिया बल्कि ये भी बताया कि इसके लिए कितनी प्राइज मनी होनी चाहिए। भारत और पाकिस्तान के बीच पिछली द्विपक्षीय सीरीज दिसंबर 2012 में खेली गई थी। उसके बाद दोनों ही टीमें केवल आईसीसी टूर्नामेंटों और एशिया कप में ही खेलती है। पीटरसन ने ट्वीट करते हुए लिखा, 'भारतीय टीम को हर साल न्यूट्रल वेन्यू पर पांच दिनों के अंदर पाकिस्तान से कम से कम तीन टी-20 मुकाबले खेलने चाहिए। 15 खिलाड़ियों की टीम होनी चाहिए और जीतने पर र्त5श् (करीब 112 करोड़ रुपये) का ईनाम दिया जाए। अगर ऐसा होता है तो फिर सब लोग हर साल इसका इंतजार करेंगे।

वर्ल्ड कप में पाकिस्तान से कभी न हारने का भारत का रिकॉर्ड रविवार को दुबई में आकर टूट गया। पाकिस्तान ने केवल अपने तीन ही खिलाड़ियों-शाहीन शाह अफरीदी, बाबर आजम और मोहम्मद रिजवान के शानदार प्रदर्शन के दम पर आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के अपने पहले मैच में भारत को 10 विकेटों से शर्मनाक हार थमा दी। भारत को टी-20 इंटरनेशनल क्रिकेट में पहली बार 10 विकेट से हार झेलनी पड़ी जबकि पाकिस्तान टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में पहली बार 10 विकेट से कोई मैच जीतने में सफल रहा।

कुरान पर हाथ रखकर बाबर आजम की 'गर्लफ्रेंड' ने खाई कसम, बोली- 10 साल तक शोषण करता रहा पाकिस्तानी कप्तान

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान ने टी-20 विश्व कप में पहली बार भारत को करारी शिकस्त दी। भारत की हार से ज्यादा पाकिस्तान की जीत के चर्चे इस समय सुखिर्यों में है। पूरा पाकिस्तान इस समय कप्तान बाबर आजम को अपना हीरो मान रहा है। हालांकि बाबर आजम अपनी निजी जिंदगी में कई बार विवादों में रह चुके हैं। खुद को बाबर आजम की गर्लफ्रेंड बताने वाली हमीजा मुख्तार ने इस बीच एक नया दावा करके बाबर की जीत के जश्न में भंग पैदा कर दिया है। पाकिस्तानी अखबार 'डेली पाकिस्तान' की रिपोर्ट के अनुसार, बाबर की गर्लफ्रेंड का दावा है कि बाबर ने शादी का वादा करके उनका यौन शौषण किया और अब पाकिस्तानी कप्तान निकाह से मुकर रहा है। महिला ने आगे कहा कि वह बाबर

आजम के बच्चे की मां बनने वाली थी। अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, हमीजा ने बाबर आजम के खिलाफ पाकिस्तानी कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है, जहां उन्होंने पाकिस्तानी कप्तान के खिलाफ प्रताड़ना का मामला दर्ज कराया है। उन्होंने पिछले दिनों यह भी दावा किया था कि बाबर के परिवार ने पूरा विवाद निपटाने के लिए उन्हें 20 लाख रुपये देने का ऑफर दिया था। बाबर की ओर से यह प्रस्ताव ऐसे समय पर आया है जब उनके खिलाफ ब्लैकमेल और प्रताड़ना का मामला लाहौर हाईकोर्ट में लंबित है।

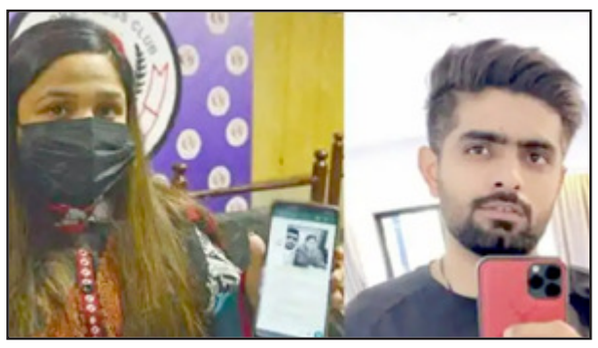

हमीजा ने आरोप लगाते हुए कहा कि बाबर ने उनके साथ यौन उत्पीड़न किया और पैसों की धोखाधड़ी की। उन्होंने कहा कि वह और बाबर आजम आपस में प्यार करते थे और 2011 में वे घर छोड़कर भाग गए थे। इस दौरान दोनों लोग लाहौर में कई इलाकों में साथ-साथ रहे। हमीजा ने साथ ही कहा कि 10 साल पहले जब यह प्यार शुरू हुआ था, उस समय दोनों लोग नाबालिग थे। हमीजा ने साथ ही कई सबूत भी पेश किए हैं। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि हमीजा ने हाथ में पवित्र कुरान लेकर कहा कि वह कोर्ट में शादी करने के लिए 2011 में घर से भागी थीं क्योंकि उनके परिवार ने इस रिश्ते को कबूल नहीं किया था। हमीजा ने कहा, 'बाबर मुझे अपने दोस्त के घर ले गए जहां हम कई दिनों तक साथ रहे। मैंने बाबर से शादी करने के लिए अपने घर से दो लाख रुपये की जूलरी चुराई थी ताकि हमारा यह रिश्ता बना रहे। मैंने बाबर आजम के लिए अपनी कार तक बेच दी और उन्हें 12 लाख रुपये दिए।

'पाकिस्तान का हर बच्चा इस तरह की बॉलिंग को गलियों में खेलता है', सलमान बट ने वरुण चक्रवर्ती पर कसा तंज

नई दिल्ली (एजेंसी)। वर्ल्ड कप में भारत के खिलाफ मिली पहली जीत को पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर्स पचा नहीं पा रहे हैं। अपनी टीम की तारीफ करने तक तो ठीक है, पर सलमान बट ने वरुण चक्रवर्ती की गेंदबाजी पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। बट का कहना है कि वरुण जैसे मिस्ट्री गेंदबाजों को पाकिस्तान के बच्चे गलियों में हर रोज खेलते हैं। वरुण को टी-20 विश्व कप में पाकिस्तान के खिलाफ विराट कोहली का ट्रंप कार्ड माना जा रहा था, क्योंकि पड़ोसी मुल्क के बल्लेबाजों ने उनका अबतक सामना नहीं किया था। हालांकि, यह मिस्ट्री गेंदबाज अपनी घूमती हुई गेंदों से मैच में कुछ खास कमाल नहीं दिखा सका। पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर ने अपने यूट्यूब चैनल पर बात करते हुए कहा, 'वरुण चक्रवर्ती मिस्ट्री गेंदबाज होंगे, लेकिन वह हमारे लिए कोई सरप्राइज नहीं थे। बच्चों पाकिस्तान में काफी टैप बॉल क्रिकेट खेलते हैं। पाकिस्तान में हर बच्चा इस तरह की गेंदबाजी को गलियों में खेलता है, जहां बॉलर उंगलियों का इस्तेमाल करते हुए कई तरह की वेरिएशन से गेंदबाजी करता है।'

पाकिस्तान के खिलाफ शर्मनाक हार के बाद निशाने पर आए मोहम्मद शमी, इरफान पठान ने आलोचकों को लगाई फटकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी-20 विश्व कप में पाकिस्तान से कभी न हारने का भारत का रिकॉर्ड रविवार को टूट गया। यूएई में जारी आईसीसी मेंस टी-20 विश्व कप 2021 के ग्रुप 12 में पाकिस्तान ने पहली बार भारत को 10 विकेट से करारी शिकस्त दी।

भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए सात विकेट पर 151 रन का स्कोर बनाया, लेकिन उसके गेंदबाज इस स्कोर का बचाव नहीं कर सके। भारतीय गेंदबाज पाकिस्तान के एक भी बल्लेबाज को आउट नहीं कर पाया। पाकिस्तान के खिलाफ मिली पहली हार के बाद सोशल मीडिया पर अब भारतीय तेज मोहम्मद शमी को निशाना बनाया जा रहा है। सोशल

मीडिया पर शमी के खिलाफ कई तरह के अपमानजनक कमेंट किए गए और उनको पाकिस्तानी तक बताया जा रहा है। इस बीच, टीम इंडिया के पूर्व ऑलराउंडर इरफान पठान ने शमी को सपोर्ट करते हुए उनके आलोचकों को कड़ी फटकार लगाई है। लोगों द्वारा शमी को निशाना बनाए जाने पर इरफान पठान ने भारतीय तेज गेंदबाज का बचाव करते हुए कहा, 'मैं भी उस मैदान पर भारत बनाम पाकिस्तान मुकाबले का हिस्सा था। जहां हम हार गए, लेकिन पाकिस्तान जाने के लिए कभी नहीं कहा गया! मैं कुछ साल पहले की बात कर रहा हूं। ऐसे में इस बकवास को रोकने की जरूरत है।' शमी ने पाकिस्तान के खिलाफ मुकाबले में 43 रन खर्च किए।

पाकिस्तान के हाथों मिली करारी हार पर सुनील गावस्कर का आया रिएक्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में भारत को दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में पाकिस्तान के खिलाफ 10 विकेट से करारी हार का सामना करना पड़ा। भारत ने टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए सात विकेट पर 151 रन का स्कोर बनाया, जिसे पाकिस्तान ने बिना कोई विकेट गंवाए 13 गेंद शेष रहते हासिल कर लिया। भारत को वर्ल्ड कप के किसी भी फॉर्मेट में पहली बार पाकिस्तानी से शिकस्त मिली है। इस हार से पूरे देश में गम का माहौल है। पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर ने इस हार को टीम इंडिया के लिए जोरदार प्रहार बताया है। गावस्कर ने हालांकि साथ ही कहा कि केवल एक हार से टूर्नामेंट में टीम का सफर समाप्त नहीं हो जाता है और टीम

को आगामी मुकाबलों में अच्छा प्रदर्शन करने की जरूरत है। गावस्कर ने स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क पर मैच समाप्त होने के बाद एक शो में कहा, 'यह विपक्षी टीम द्वारा भारतीय टीम पर जोरदार प्रहार है। हालांकि केवल एक एक हार से टीम का सफर समाप्त नहीं हो जाता है। टीम को एकजुट रहने की जरूरत है। उन्हें आगामी मुकाबलों के लिए तैयार रहना होगा। उम्मीद है भारतीय टीम आगे के मुकाबलों में बेहतरीन प्रदर्शन करेगी। टीम को अब पाकिस्तान के खिलाफ मिली हार को भूलकर आगे के मुकाबले पर ध्यान केंद्रित करने करना चाहिए। पाकिस्तान टीम टी-20 इंटरनेशनल क्रिकेट में अबतक एक बार भी 10 विकेट से नहीं जीती थी और वहीं, भारतीय टीम अबतक एक बार भी 10 विकेट से नहीं हारी थी। लेकिन इस बार दोनों रिकॉर्ड टूट गए। भारत को पहली बार टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में 10 विकेट से हार मिली जबकि पाकिस्तान की टीम पहली बार 10 विकेट से जीतने में सफल रहीं। इस मुकाबले से पहले पाकिस्तान अभी तक किसी भी विश्व कप में भारत को नहीं हरा पाया था, चाहे वो 50-ओवर का हो या टी 20 फॉर्मेट का। भारतीय टीम के पास वर्ल्ड कप में पाकिस्तान के खिलाफ अपना रिकॉर्ड 13-0 तक का करने का मौका था, लेकिन पाकिस्तान ने गजब का खेल दिखाते हुए एकतरफा अंदाज में मुकाबला अपने नाम कर लिया।

क्रूज ड्रग्स केस में नया ट्विस्ट, फरार केपी गोसावी लखनऊ में करेगा सरेंडर

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्रूज ड्रग्स केस में रोज नए घटनाक्रम सामने आ रहे हैं। प्रभाकर सेल ने दावा किया था कि केपी गोसावी ने आर्यन खान को छोड़ने के लिए 25 करोड़ की मांग की थी। इसमें गोसावी के साथ समीर वानखेड़े भी शामिल थे। अब इस पर फरार चल रहा केपी गोसावी सामने आया है। उसने कहा है कि सब आरोप झूठे हैं। उसे ही धमकाया जा रहा था क्योंकि उसने आर्यन खान की गिरफ्तारी कराई थी। अब वह सरेंडर करने जा रहा है लेकिन महाराष्ट्र से बाहर। वह लखनऊ में सरेंडर कर सकता है। केपी गोसावी के बॉडीगार्ड प्रभाकर सेल ने रविवार को एक हलफनामा जारी किया और दावा किया था कि शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान को छुड़ाने के लिए केपी गोसावी ने 25 करोड़ की रिश्वत मांगी थी। इतना ही नहीं उसने बताया था कि ये मांग गोसावी ने एनसीबी के जोनल डायरेक्टर समीर वानखेड़े की ओर से की थी। प्रभाकर सेल गोसावी के साथ क्रूज ड्रग्स केस में एनसीबी का गवाह है। अब इस पूरे मामले में केपी गोसावी सामने आया है। वह छापेमारी के बाद से फरार है। आजतक से फोन पर बातचीत में केपी गोसावी ने कहा कि उसके खिलाफ लगाए जा रहे सारे आरोप झूठे हैं। उसने कहा कि वह समीर वानखेड़े को जानता तक नहीं है। उसने उसे बस टीवी पर देखा है। इसके अलावा वो एनसीबी की पिछली किसी भी रेड में टीम के साथ नहीं था।

उसने कहा है कि वह कुछ ही देर में सरेंडर करने जा रहा है, लेकिन महाराष्ट्र से बाहर। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो केपी गोसावी लखनऊ में सरेंडर कर सकता है। इससे पहले आज एनसीबी के जोनल डायरेक्टर समीर वानखेड़े ने कोर्ट में हलफनामा जमा किया और कहा कि उन्हें डराया जा रहा है। जांच प्रभावित करने के लिए राजनीतिक पहुंच के लोग उन्हें गिरफ्तार कर करवा सकते हैं। अब इस घटनाक्रम ने नाटकीय मोड़ ले लिया है क्योंकि फरार चल रहा केपी गोसावी अब सामने आया है। वह क्रूज ड्रग्स केस में गवाह भी है।

केंद्र ने दिल्ली हाईकोर्ट में कहा-

कानून जैसा भी है... केवल महिला और पुरुष के बीच ही विवाह की अनुमति

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट में सोमवार को कानून के तहत समलैंगिक विवाहों को मान्यता देने की मांग वाली याचिकाओं पर सुनवाई की गई। इस दौरान केंद्र सरकार ने कोर्ट को बताया कि भारत में अभी केवल जैविक पुरुषऔर जैविक महिला के बीच विवाह की अनुमति है। केंद्र ने यह भी दावा किया कि नवतेज सिंह जौहर मामले को लेकर कुछ भ्रांतियां हैं, जिसमें समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया गया, लेकिन शादी की बात नहीं की गई। चीफ जस्टिस डीएन पटेल और जस्टिस ज्योति सिंह की बेंच अभिजीत अय्यर मित्रा, वैभव जैन, डॉ. कविता अरोड़ा, ओसीआई कार्ड धारक जॉयदीप सेनगुप्ता और उनके साथी रसेल ब्लेन स्टीफेंस द्वारा दायर याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी। बेंच ने इस बीच सभी

पक्षों को अपनी दलीलें पूरी करने के लिए और समय देते हुए याचिकाओं पर अंतिम सुनवाई के लिए 30 नवंबर की तारीख तय की है।इस दौरान जॉयदीप सेनगुप्ता और स्टीफेंस की ओर से पेश हुए वकील करुणा नंदी ने बताया कि जोड़े ने न्यूयॉर्क में शादी की और उनके मामले में नागरिकता अधिनियम, 1955, विदेशी विवाह अधिनियम, 1969 और विशेष विवाह अधिनियम, 1954 कानून लागू होता है। उन्होंने नागरिकता अधिनियम, 1955 की धारा 7 ए (1) (डी) पर प्रकाश डाला, जो विषमलैंगिक, समान-लिंग या समलैंगिक पति-पतनी के बीच कोई भेद नहीं करता है। इसमें प्रावधान है कि भारत के एक विदेशी नागरिक से विवाहित एक 'व्यक्ति', जिसका विवाह पंजीकृत है और दो साल से अस्तित्व में है, को ओसीआई कार्ड के लिए जीवनसाथी के रूप में आवेदन करने के लिए योग्य घोषित

समलैंगिक विवाह

किया जाना चाहिए।

वकील ने कहा, हमारे अनुसार, यह एक बहुत ही सीधा मुद्दा है। नागरिकता कानून विवाहित जोड़े के लिंग पर मौन है... राज्य को केवल पंजीकरण करना है। इसलिए यदि केंद्र जवाब दाखिल नहीं करना चाहता है, तो कोई बात नहीं, हमें कोई आपत्ति नहीं है। हालांकि, केंद्र सरकार की ओर से पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने तर्क दिया कि 'स्पाउस' का अर्थ पति और पतनी है, 'विवाह' विषमलैंगिक जोड़ों से जुड़ा एक शब्द है और इस प्रकार नागरिकता कानून के संबंध में कोई विशिष्ट जवाब दाखिल करने की कोई जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा, ठकानून जैसा भी है... जैविक पुरुष और जैविक महिला के बीच विवाह की अनुमति है। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने आगे दावा किया कि नवतेज सिंह जौहर बनाम भारत सरकार के मामले के बारे में याचिकाकर्ताओं की गलत धारणा है, जिसने निजी तौर पर वयस्कों के बीच समलैंगिक यौन कृत्यों को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया है। उन्होंने कहा कि यहां मुद्दा यह है कि क्या समलैंगिक जोड़ों के बीच विवाह की अनुमति है। अदालत को यह तय करना है। नवतेज सिंह जौहर मामले के बारे में कुछ गलत धारणा है। यह केवल गैर-अपराधीकरण करता है ... यह शादी के बारे में बात नहीं करता है।

अमित शाह ने मंच से हटवाई बुलेट प्रुप ग्लास शील्ड, कश्मीरियों से बोले- मैं पाक से नहीं, आपसे बात करूंगा

श्रीनगर (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जम्मू कश्मीर दौरे के तीसरे और आखिरी दिन श्रीनगर में सोमवार को एक जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन के दौरान बुलेट प्रूफ ग्लास शील्ड हटवाई और फिर कहा कि आप लोगों से खुलकर बात करना चाहता हूं। उन्होंने आगे कहा कि मैं पाक से नहीं आप लोगों से बात करना चाहता हूं। आज केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह जम्मू कश्मीर दौरे का तीसरा दिन है। आज वे श्रीनगर पहुंचे। यहां उन्होंने जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान पहले उन्होंने जम्मू कश्मीर में भाजपा सरकार की ओर से दी जा रही विकास परियोजनाओं का जिक्र किया। अमित शाह ने कहा कि घाटी आगे आने वाले दिनों में भारत को विश्व शक्ति बनाने में मदद करेगा।अपने संबोधन के दौरान उन्होंने मंच से बुलेट प्रूफ ग्लास शील्ड हटाई। फिर कहा, ठमुझे बहुत ताने सुनाए गए। बहुत बोला गया। बहुत कड़े शब्दों में बोला गया। लेकिन मैं आज आप लोगों के साथ खुलकर बात करना चाहता हूं। इसलिए मैं बिना बुलेट प्रूफ ग्लास के आप लोगों से बात कर रहा हूं। नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष और जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूख अब्दुल्ला के बारे में बोलते हुए अमित शाह ने कहा, मैंने अखबार में पढ़ा। फारूख साहब ने मुझे सलाह दी है कि भारत सरकार को पाकिस्तान से बात करनी चाहिए।

क्रिकेट वर्ल्ड कप में पाकिस्तान के हाथों मिली शर्मनाक हार पर नेताओं ने भी दी प्रतिक्रिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दुबई में चल रहे आईसीसी टी20 विश्व कप के अपने शुरुआती मैच में भारत को पाकिस्तान के हाथों 10 विकेट की करारी हार झेलनी पड़ी है। इस मैच को लेकर भारतीय नेताओं के बयान भी सामने आए हैं। एक भावुक क्रिकेट प्रशंसक के रूप में जाने जाने वाले कांग्रेस नेता शशि थरूर ने पाकिस्तान को बधाई दी, लेकिन उम्मीद जताई कि भारत इस परिणाम को फाइनल में उलट देगा। आपको बता दें कि थरूर मैच देखने के लिए दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम पहुंचे थे। उन्होंने ट्विटर पर लिखा, ङ्खदुबई क्रिकेट स्टेडियम में एक निराशाजनक शाम के कुछ हसीन पल। मैंने कभी नहीं देखा कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट देखने की आधी सदी से भी अधिक समय में भारत को अधिक व्यापक रूप से पराजित किया जा रहा है। पाकिस्तान को बधाई। हमें फाइनल में इस परिणाम को उलटना होगा!दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने भी विराट कोहली और लड़कों को ठवापसी करने और विश्व कप जीतने के लिएठ प्रोत्साहित किया है। उन्होंने कहा, 'जीत-हार खेल का हिस्सा है। आप लोगों को वापसी करनी है। भारत के लिए विश्व कप

जीतने के लिए आने वाले मैचों के लिए शुभकामनाएं। आपको बता दें कि पाकिस्तान के कप्तान बाबर आज़म और उनके सलामी जोड़ीदार मोहम्मद रिज़वान ने 18वें ओवर में लक्ष्य का पीछा करते हुए 152 रन का लक्ष्य हासिल कर भारत को शिकस्त दी है। यह किसी भी प्रारूप के विश्व कप मैच में भारत के खिलाफ पाकिस्तान की पहली जीत थी।

जी-23 से मिली सबक कांग्रेस को मंजूर नहीं पार्टी की आलोचना, मेंबर बनाने से पहले खिलाएगी कसम

नई दिल्ली (एजेंसी)। सार्वजनिक मंचों पर अपनी ही पार्टी नेताओं द्वारा आलोचना झेलने के बाद कांग्रेस ने अब इसका काट ढूंढ लिया है। पार्टी नेतृत्व से लेकर संगठन चुनाव समेत कई मसलों पर जी-23 समूह द्वारा कांग्रेस की खुली आलोचनाओं के बाद पार्टी ने कार्यकर्ताओं से लेकर नेताओं तक से पार्टी की आलोचना न करने का वचन मांगा है। कांग्रेस ने स्पष्ट किया है कि पार्टी की प्राथमिक सदस्यता लेने वालों को यह हलफनामा देना होगा कि वह सार्वजनिक मंचों पर कभी भी पार्टी की नीतियों एवं कार्यक्रमों की आलोचना नहीं करेगा।

कांग्रेस के नए मेम्बरशिप फॉर्म में लिखा है, 'मैं धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद और लोकतंत्र के सिद्धांतों को बढ़ावा देने के लिए सदस्यता लेता हूं। मैं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, खुले तौर पर या किसी तरह से पार्टी मंचों के अलावा, पार्टी की स्वीकृत नीतियों और कार्यक्रमों की प्रतिकूल आलोचना नहीं करूंगा।' बता दें कि कांग्रेस का यह कदम उस संदर्भ में आया था कि पार्टी के नेता इस बात से अनजान हैं कि पार्टी में कौन निणग्य ले रहा है, क्योंकि कोई अध्यक्ष नहीं है। उन्होंने कहा था कि हमारी पार्टी में कोई अध्यक्ष नहीं है,

है, जिसमें जी-23 नेताओं ने मीडिया से बातचीत के दौरान खुलकर पार्टी की आलोचना की और यहां तक कि पार्टी के भीतर चुनाव की मांग करते हुए संगठनात्मक ढांचे पर सवाल उठाया। जी -23 के नेता कपिल सिब्बल ने सितंबर में कहा इसलिए हमें नहीं पता कि ये फैसले कौन ले रहा है।

हम जानते हैं और फिर भी अभी तक नहीं जानते। वहीं, गुलाम नबी आजाद ने भी पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी को पत्र लिखकर कांग्रेस कार्यसमिति (सीडब्लूयूसी) की तत्काल बैठक की मांग की थी। हाल ही में बैठक से पहले जी-23 नेताओं ने सीडब्लूयूसी सदस्यों, केंद्रीय चुनाव समिति (सीईसी) के सदस्यों और संसदीय बोर्ड चुनावों के लिए चुनाव की मांग की थी।देश की सबसे पुरानी पार्टी के सदस्यता संबंधी आवेदन-पत्र में और भी कई शर्तें शामिल की गई हैं।

कुत्ते की मौत पर शोक, किसानों पर ध्यान नहीं, मोदी सरकार पर बरसे सत्यपाल मलिक

नई दिल्ली (एजेंसी)। सत्यपाल मलिक ने मोदी सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि आप एक कुत्ते के मरने पर शोक व्यक्त करते हैं लेकिन यहां 600 किसानों की मौत हो गई। कोई संवेदना न होना किसानों के साथ अन्याय है। उन्होंने गोवा सरकार पर भी हमला किया। कहा कि कोरोना काल में वो भ्र्ष्टाचार में लिप्त थी। उम्मीद है कि प्रधानमंत्री मोदी इस बारे में कुछ एक्शन लेंगे। मेघालय के राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने कहा कि दिल्ली के सिंघु

बॉर्डर पर किसानों का विरोध पूरी तरह जायज है। मैंने पूर्व पीएम चौधरी चरण सिंह और राम मनोहर लोहिया से यह सीखा है कि अपने समुदाय के हितों से कभी समझौता नहीं करना चाहिए। मेरा जन्म किसानों के बीच हुआ है।

दिल्ली में डेंगू के मामले 1,000 के पार, एक सप्ताह में 283 नए मरीज मिले, साल 2018 के बाद से सबसे अधिक मामले

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली-एनसीआर में डेंगू के मामले बेकाबू होते दिख रहे हैं। राजधानी दिल्ली में ही इस साल अब तक डेंगू के 1,000 से अधिक मामले सामने आ चुके हैं, जिसमें 280 से अधिक नए मामले पिछले एक सप्ताह में ही दर्ज किए गए हैं। दिल्ली में इस मौसम में दर्ज किए गए डेंगू के कुल मामलों में से इस महीने 23 अक्टूबर तक 665 दर्ज किए गए हैं। राजधानी में पिछले दो हफ्तों में मच्छर जनित बीमारी के मामले काफी तेजी से बढ़ रहे हैं और दिल्ली में इसके कारण 18 अक्टूबर को पहली मौत भी दर्ज की गई थी। डेंगू से मरने वाली महिला की पहचान 35 वर्षीय ममता कश्यप के रूप में हुई थी, जो दक्षिणी दिल्ली के सरिता विहार की रहने वाली थी। सितंबर के अंत में एक निजी अस्पताल में उसकी डेंगू से मौत हो गई थी।

सोमवार को जारी मच्छर जनित बीमारियों पर सिविक रिपोर्ट के अनुसार, इस सीजन में 23 अक्टूबर तक डेंगू से एक मौत और कुल

1,006 डेंगू के मामले दर्ज किए गए हैं, जो कि इसी अवधि के लिए 2018 के बाद से सबसे अधिक मामले हैं। इस साल 16 अक्टूबर तक कुल मामलों की संख्या 723 थी, इसलिए, एक सप्ताह में 283 नए मामले दर्ज किए गए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, पिछले तीन वर्षों में 1 जनवरी 16 अक्टूबर की अवधि के दौरान दर्ज किए गए डेंगू के मामलों की संख्या साल 2020 में 489, साल 2019 में 833 और साल 2018 में 1,310 थी।दिल्ली में मच्छर जनित बीमारियों के आंकड़ों का रिकॉर्ड रखने वाली नोडल एजेंसी दक्षिणी दिल्ली नगर निगम (एउश्ण) द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार, 2020 में पूरे वर्ष में कुल 1,072 मामले और एक मौत दर्ज की गई थी। एसडीएमसी द्वारा जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार 2020 से पहले के वर्षों में डेंगू से होने वाली मौतों की संख्या साल 2019 में 2, साल 2018 में 4, साल 2017 में 10 और साल 2016 में 10 दर्ज की गई थी।

जम्मू-कश्मीर को जल्द मिले पूर्ण राज्य का दर्जा... अधीर रंजन ने की चुनाव कराने की भी मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने शनिवार को जम्मू-कश्मीर में राजनीतिक व्यवस्था बहाल करने की मांग की और जम्मू-कश्मीर का राज्य का दर्जा बहाल करने का आह्वान किया ताकि विधानसभा चुनाव जल्द से जल्द हो सके।

कांग्रेस नेता ने एएनआई को बताया, ठजम्मू और कश्मीर में एक राजनीतिक व्यवस्था बहाल होनी चाहिए और चुनाव जल्द से जल्द होना चाहिए। उन्होंने अनुच्छेद 370 को निरस्त करने पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर निशाना साधते हुए कहा,

ठआपका क्या कहना है अमित शाह जी आपने अनुच्छेद 370 और 35 (ए) को हटा दिया और वादा किया कि कश्मीर बदल जाएगा। हालांकि, ऐसा नहीं हुआ हुआ और अब कश्मीर बहुत खराब स्थिति में है। राज्य का दर्जा बहाल किया जाना चाहिए, जो बहुत महत्वपूर्ण है। उनका यह बयान जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों द्वारा नागरिकों की हत्या की कई घटनाओं के बाद आया है।

कितनी सेक्युलर है मोदी सरकार नकवी ने आंकड़ों के साथ दिया जवाब, विपक्ष को भी घेरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। मोदी सरकार में अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी का कहना है कि कुछ राजनीतिक दलों ने धर्मनिरपेक्षता को अपना

राजनीतिक हथियार बना लिया और संविधान के बुनियादी ढांचे को तोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा के लिए धर्मनिरपेक्षता संवैधानिक और राष्ट्रीय जिम्मेदारी है। इसे साबित करने के लिए उन्होंने कुछ आंकड़ों का भी हवाला दिया। नकवी ने कहा कि मोदी सरकार की आवास परियोजना से लाभान्वित होने वाले 2 करोड़ लोगों में से 31 प्रतिशत अल्पसंख्यक हैं, जबकि 12 करोड़ किसानों को किसान सम्मान निधि प्रदान करने वाले 33 प्रतिशत भी अल्पसंख्यक हैं। भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्षी दल अपने राजनीतिक लाभ के लिए धर्मनिरपेक्षता का इस्तेमाल कर रहे हैं और भारतीय संविधान के उद्देश्यों को धोखा दे रहे हैं। नकवी ने कहा, ठकुछ लोगों ने केवल अपने राजनीतिक लाभ के लिए धर्मनिरपेक्षता शब्द का इस्तेमाल किया है। उन्होंने कहा, ठयदि आप भारतीय इतिहास के 75 वर्षों को देखें, तो आप देखेंगे कि कुछ राजनीतिक दलों ने धर्मनिरपेक्षता को अपने राजनीतिक लाभ का साधन बना लिया है।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम

पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025

कल भारत को हराया है अभी ये सही नहीं, सऊदी अरब में इमरान ने उड़ाया मजाक

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने सऊदी अरब की राजधानी रियाद में पाकिस्तान-सऊदी इन्वेस्टमेंट फोरम में भारत का मजाक उड़ाया। कहा कि अभी तो हमने भारत को हराया है इसलिए अभी हम भारत से बात नहीं कर सकते। हालांकि पाकिस्तान को भारत के साथ संबंधों में सुधार लाने की जरुरत है। रविवार को टी-20 क्रिकेट वर्ल्ड कप मैच में बाबर आजम की कप्तानी में पाकिस्तान ने दो दशकों से ज्यादा का इतिहास बदलते हुए पहली बार भारत को हराया। वर्ल्ड कप के किसी भी मैच में पाकिस्तान भारत को नहीं हरा पाया था। लेकिन रविवार को पाकिस्तान ने भारत को 10 विकेट से रौंदकर पहली जीत दर्ज की। पाकिस्तान की इस उपलब्धि के साथ ही वर्ल्ड कप टूर्नामेंट में भारत और पाकिस्तान के बीच जीत का अनुपात 11-1 हो गया है। सोमवार को भारतीय क्रिकेट फैंस का मजाक उड़ाते हुए पाकिस्तान के इमरान

खान ने शर्मिंदा कर देने वाला बयान दिया। सऊदी अरब की राजधानी रियाद में पाकिस्तान-सऊदी इन्वेस्टमेंट फोरम को संबोधित करते हुए इमरान खान ने कहा, "हमारे चीन के साथ अच्छे संबंध हैं। पाकिस्तान को भारत के साथ संबंध सुधारने की जरुरत है लेकिन कल ही तो पाकिस्तान ने भारत को हराया है। इसलिए अभी भारत के साथ बात करना सही वक्त नहीं है।ठ इमरान खान खुद एक पाकिस्तान क्रिकेट टीम का नेतृत्व कर चुके हैं। उनकी कप्तानी में पाकिस्तान ने 1992 में क्रिकेट वर्ल्ड कप जीता था। इसके बावजूद उनका बयान खेल भावना के विपरीत दर्शाता है। इमरान खान ने आगे कहा कि दोनों देशों के बीच सिर्फ एक ही मुद्दा है और वो है कश्मीर है।

हमारे एफबी पोस्ट की वजह से हिंदुओं के खिलाफ भड़की हिंसा, बांग्लादेश के दो आरोपियों ने गुनाह कबूला

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय के खिलाफ हाल ही में हिंसा भड़काने और सोशल मीडिया पर सांप्रदायिक नफरत फैलाने के मामले में एक प्रमुख संदिग्ध और उसके सहयोगी ने अपना गुनाह स्वीकार कर लिया है। अदालत के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी के अनुसार शौकत मंडल ने रविवार को एक मजिस्ट्रेट के सामने स्वीकार किया कि उसके फेसबुक पोस्ट के कारण 17 अक्टूबर को दुर्गा पूजा के दौरान पीरगंज उप-जिले के रंगपुर में हिंसा भड़की थी। मंडल का साथी रबीउल इस्लाम (36) मौलवी है और उसके खिलाफ आगजनी तथा लूटपाट का आरोप लगा है। अधिकारी ने मीडिया से कहा, ठशौकत मंडल और उसके सहयोगी रबीउल इस्लाम ने (उत्तर-पश्चिमी) रंगपुर में वरिष्ठ न्यायिक मजिस्ट्रेट देलवर हुसैन के सामने अपनी भूमिका स्वीकार कर ली है।

अफगानिस्तान में भुखमरी की नौबत, मजदूरों को पैसे नहीं गेहूं बांटेगा तालिबान

काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान में तालिबान के तख्तापलट के बाद से हालात खराब होते जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार अफगानिस्तान में लोग भुखमरी के कगार पर हैं। देश में आर्थिक संकट के बीच तालिबान सरकार ने ऐलान किया है कि वो मजदूरों को मजदूरी के लिए पैसे के बदले गेहूं देगा। तालिबान सरकार को मजदूरों को पारिश्रमिक के तौर पर रुपए की जगह गेहूं देने के लिए विवश होना पड़ रहा है। पाकिस्तानी अखबार डॉन की रिपोर्ट के मुताबिक, तालिबान की अंतरिम सरकार ने लोगों को श्रम के बदले गेहूं देने की घोषणा की है। तालिबान ने इस योजना के जरिए काबुल में लगभग 40 हजार लोगों को रोजगार देने का लक्ष्य रखा है। यह योजना अफगानिस्तान के कई प्रमुख शहरों में लागू की जाएगी।

तालिबान के मुख्य प्रवक्ता

जबीहुल्लाह मुजाहिद ने कहा कि यह योजना देश में बेरोजगारी से लड़ने और भूख से निपटने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। इस योजना के तहत काबुल में दो महीने में करीब 11,600 टन गेहूं का वितरण किया जाएगा। इसके अलावा हेरात, जलालाबाद, कंधार, मजार-ए-शरीफ और पोल-ए-खोमरी सहित देश के बाकी शहरों में 55,000 टन गेहूं वितरित किए जाने की योजना है। इस योजना के तहत सूखे से निपटने के इंतजाम किए जाएंगे। संयुक्त राष्ट्र की एक नई रिपोर्ट से पता चलता है कि अफगानिस्तान में लगभग 19 मिलियन लोगों ने फसल के बाद के मौसम के दो महीनों के दौरान खाने का संकट देखा है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में लगभग 30ज्ञ् अधिक है। रिपोर्ट में यह आशंका भी जताई गई है कि नवंबर 2021 से मार्च 2022 तक अफगानिस्तान की आधी से अधिक आबादी को खाने का संकट झेलना पड़ सकता है।